

थारुनक लाग असली खुराक

गो

चा

ली

२०५६

थारु भाषक् पत्रिका जेठ

गो चाली

वर्ष २८

अंक १२

थारु भाषक जेष्ठ पत्रिका गोचाली के १२ औं अंक प्रकाशित हुइना, खुशी के खबरम देवारी व थारुनके महा तिहार माघक उपलक्ष्यम हार्दिक शुभ का मना ब्यक्त करती, अइना अंक आउर थारु भाषा साहित्य के विकाश पथम अग्रिम भूमिका खेल्ती रहेकना सदइच्छा ब्यक्त करती।

नेउता

सम्पादक मण्डल

थारु संस्कृति संरक्षण तथा विकाश सेवा संघ
बगनाहा (बर्दिया)



थारु संस्कृति संरक्षण तथा विकाश सेवा संघ बगनाहा बर्दियासे प्रकाशन हुइना थारु भाषा तथा साहित्य अभुद पत्रिका चौठा अंक "नेउता" खोज खोज पह नाभुलाई।

नेउता

भाषा तथा उप समिति
था. स. सं. वि. से. संघ, बगनाहा, बर्दिया



२०५६

व्यवस्थापक व प्रकाशक

थारु भाषा तथा साहित्य उत्थान मन्च [नेपाल]

गोचाली परिवार २०२८

सहयोग रु. ३५१-

सम्पादकिय

थारु भाषम तमाम नाँउके वार्षिक, अर्धवार्षिक, मासिक, साप्ताहिक पत्रपत्रिका प्रकाशित हुइना व बन्द हुइ करठ । विशेष कैक थारु भाषाम प्रकाशित पत्रपत्रिका कुछ शिक्षित युवा हुकनके सक्रियतासे खोल गेल संघ, संस्था, क्लब, परिवार से प्रकाशित व वितरित हुइल देखजाईठ । असिक खोल गेल संघ, संस्था क्लब, परिवार के मुख्य आयश्रात कहलक चन्दा संकलन देख परठ । संकलनसे संकलित रकमसे बल्लतल्ल लेख रचना खोजकन प्रकाशित कै गेल पत्रिका किन दिहुइया महानुभावके सख्या एकदम दिन्वे हो देहथ वत्रिका प्रकाशन मन लागल खच के एक तिहाई से आधा सम्मन के रकमकेल उठत बन्मके आपन सहयोगी मित्रहुक फे कुछ रकम गायब कान, संस्था उपर विश्वास घात कर्ना उदाहरण फे तमाम संघ, संस्थामन देख परठ । असिन अवस्था सृजना होक द्वासर अंक निकारकलाग फेरसे चन्दा संकलन करपर्ना व चन्दा दाता हुक कैचो चन्दा देना कैक चन्दा नै देना होख तमाम से पत्रपत्रिका प्रकाशित नै हुई स्याकठ । १, २ अंक निकरना व बन्द हुईना, निरन्तरता दिहनै सेकना तमाम पत्र पत्रिकाके उदाहरण देह सेकजइना अवस्था वा । साथसाथम खोल गेल संघ, संस्था, क्लब, परिवार के संगठनिक गरबरीले फे पत्रपत्रिका बन्द हुईल देखपरठ ।

हम्र थारु हुई हमार भाषा थारु हो, यि भाषाके बिकासके लाग हम्र तन, मन, धन, लगाक सहयोग जब सम्मन कइनै सेकबी तब सम्मन हमार थारु भाषा आगबद नै सेकी हम्र हमार भाषा मन प्रकाशित पत्रिका, कृती, सहयोगके हिसाबले फे किन देलसे बहुत कुछ सहयोग हुईसेकने रह । साथसाथम आपन संस्था उपर के आर्थिक व अन्य रूपले विश्वासघात नै कैर काम करपर्ना फे अत्यावश्यक देख परठ । व हम्र लेख, रचना, आदो लिखना काम कर्ति रलसे और चन्दा संकलन हन केल आयश्रोत नै बनाक आर्थिक पक्ष सबल बनाइक लाग औरफे ठास आयश्रोत के बिकास करवा कलसे अवश्यफे हमार थारु भाषाम प्रकाशित पत्र पत्रिकाके निरन्तरता हुईती रहा ।

अन्तम, उप्पर लिखल समस्या से अछूतो नै रहल यि " गोचाली " पत्रिका फे बल्ल तल्ल अक १२ के रूपम अपन हुकन के बिचम दिह सेकनी यमन रहल कमी, कमजोरी के लाग सल्लाह सुझावके आशा कर्ति शुभ देवारीके उपलक्ष्यम सम्पूर्ण पाठक वर्ग हुकन शुभकामना व्यक्त करती ।

जय गोचाली परिवार !



विषय सूची

शिर्षक	लेखक	पेज
१) जंगनी (कथा)	सगुन लाल चौधरी	१
२) दुखो जरम करम (कविता)	एम. वि. चौधरी	२६
३) जातिय स्वशासन व थारु मुक्तिके प्रश्न (प्रतिवेदन)		३०
४) दाङ्गको थारु भाषा र सा हत्यको छोटी चिनारी महेश चौ.		३७
५) गित (लेख)	श्याम चौधरी	६०
६) प्रजातन्त्र जोगाई लोक गित से.	शुशिल चौधरी	६१
७) दाग (कथा)	जोखन रतगैया	६२
८) थारु पाछ हो गेली (कविता)	गुरु प्रसाद चौधरी	७०
९) अस्तित्व (कथा)	सन्नु भैया	७१
१०) किसानके बिलौना (कविता)	धर्म चौ	७६





सम्पादक मण्डल

श्री सगुन लाल चौधरी
श्री जगु प्रसाद चौधरी
श्री भगवटी प्रसाद चौधरी
श्री कृष्ण कुमार चौधरी

प्रकाशक

थारू भाषा साहित्य उत्थान मञ्च, नेपाल

प्रकाशन उपसमिति

(गोचाली परिवार २०२८)



जोगनी

बतकोही (कथा)

ले. सगुन लाल चौधरी

“छाई री” ! “री छाई !! आ म्वारमसँग जाँर पी व रँगकलाग दान्चे घाँस काटक लै आनस ना । काल त्वार दाडु कुईलाहवासे रँगवा लादक ऐना बाटिस् । मीठैया लान दी” । आपन बाबक बात सुक जोगनी छाई हाली-हाली घ्वाट-घ्वाट बाबक खो ीयमक जाँर सटकाईठ व हँसिया गँजा लेक आपन गोहिमसँग छलमलैठी खेतवक आरीम व कुल्लोक नाहाम ख्वार-ख्वार घाँस काट चल जाईठ ।

“मगनी गोही हो ! म्वार बाबा कल बाट काल दाडुहक बजारसे ऐही हं । मीठैया लान देही । मही त बरा मीठ लागठ । तुहीन जे हो मगनी जवाफ देली “मही त मीठैया नै मजा लागठ । मै त गोच्या चोल्या टीकली मागल बाटुं । मै आपन दाईसे कनु त म्वार दाई मडगा देल बाट” ।

दाई कना शब्द सुन्तिकी जोगनीक आँखमसे आँस आई लगठीस् । काकरकी उ बिचारीह दाई कसिन रह कैक जन्ल नै रहल ब्याला वाकर दाई यी संसारसे बिदा ले स्याकल रलहीस् । बिचारी वाकर दाई रतीस् त सायद उ फेन मनम लागल स्वाँचल व मन परल चीज मँगना रह कैक व मगनी आपन गोहीसे काकर ऐसिन बात सुनैनु कैक मन-मन पछताईल । दुनु जान गँजा भराक मनक बात गफ-सफ करती हँस्ती आपन-आपन घरम पैठल घरम पैस्तीकी मगनी “दाई” कैक भीत्तर जाईठ तर अफसोक जोगनीक दाई नै रलक कारण बाबा ! कैक आपन घरम पैठल, पुनः वाकर आँखीम आँस टलपलैठिस । कुई देख ना दार कैक हाली हस्ती बाहार निकरठ आपन अँगना बाहार लागल ।

आपन-आपन घरसे बेरी खाक सक्कु गोहीन गल्लीम जम्मा हुईल । अजरीया रात गाउँक लवन्डन यीहर उहँर सलबलाईट । लवन्डिन व तनिक जवान बथिनियन फेन एक ठाउँम बरी जोर-जोरसे हाँसी ठूटा लगल बाट । मगनी, सजनी, फुलरानी व जोगनी सब जान एकक सँग कठ, “आज मह-तान घर नाचो रै दाडु हूँक हमन नाच हेर्ना मन लागता ।” “अरी काल त रँगलदवन चुकी खैही व नाच करही काहुन । हुँक त रातभर नचठ जे । कला हेरबो और गाउँकसँग फेन बाटीन । आन मनरखन फेन हेर

रबो।" "धत बरा हमार के मनखा बाट ज बल वस्ती बात करतो गाउँ तनिक बरा लक वसेँ धोर घरक बिनियन फे जुट्टी गैल व चि कछीना सल्ला बन गैल। आज महती घर नाच कछला सबजा। १२ बजेसम्म नाच करके आपन-आपन घरम जाके निन्द्रा देवीक ववारम सार परके मजा-मजा सपना ह्यारल बाट।

बाबु री, री बाबु जा एक चीलम माखुर चढाक लानत। आपन बा आडुक हाईल। सुन्तिकी हालीसे माखुर चढाक लानत व कचा जोरसे तान्के धुवा इरैती ल्यो दादु कैक जोगनी जसिन जगमगैती आपन गोहीन सँग भोजाहा घर पानी भर जोगनी चलजाईठ। उत्तर पुरुवक बरका घरान असौ भ्वाज बाठीन। गाउँक सब छोट बर बधिनियन न्हेी बनल बाट। सलबल, सलबल करत बात मानो असार मैन्हाम पानी पनीसे पैल्ह देख पनी रातीक जोगनी जगमगाईत बाट। थॅरेन जुन्हुक बधिनियन देखके असँह किसिमसे भरखर पानी पैलक वेगवा भेधी जसिन खुशी मनैती बाट। घरक मनै व भात भन्सा कनी मनैके कौन अवस्थाम बाट निउंताईल पौहना पाछत गाउँ-गवलियन गै-गोत्यार सबजान खानपीन कली नै कर्त। आपन-आपन फाँट अनुसार मुरहवा पन्हेरीन काम करत बाटकी नै हुईत कैक ह्यारत बाट। केको फेन एक घचिक बैठना फुर्सद नै हुईत।

दुल्हक सँग बैठलक बुढवन दुल्ह सपरैती आपन जानल मांगर गैती बाट। मांगरके बोल रविन "संखे हे देओ देओ मयरी री मोर ही मय शिर पनिया। मै चली जँवु धनिर विहाए।" अस्तक शिर मुन्टासे म्वारा पैला तकके पोषाक मांगके (मांगरके) भाषाम घरक कुल देवी-देवतन छाकी बुदी देक वरात चल जैथ।

दुल्हीक गाउँ हीर जैतरी पैल्ह गाउँक थनवा घुम पनी हौरसे चन्द्वाला थनवा घुम गैल। गाउँक दखिन उगिस दुल्हक लग दचिया गोन्द्री विछाईत बाट। धोर जानन् बैठक लाग तस्या खरी गोन्द्री विछाईल बाट गाउँक भन्सरन्वन आपन-आपन घरस दकियास मे-मेरके तीना तरकारी मखीन चाउरके भात चललल तथियाम एकक पानीक भूअर मद गोलरम, और दधिक बरवार गोलरम पुरान जाँरक इवार लेक सुग्घुर-सुग्घुर गहना जुगा लगाके परछकि खवाए ऐल बाट। गाउँ भरिक जन्नीन बधिनियन। बरतीयन खाईत ना खाईत सब जान आपन-आपन पाल सब चीजसँग आग भर धै देल।

दुतवा, पीगरी, टीम्की, लगारा, ढवाल मजैरा (झाँझ) ठों ठों, पी पी करती दुल्हा दखिन पुरवा पुगल तब दुल्हीक होरीक मनै मन्द्रा

लेके ४/५ जान इवांग इवांग, इवांग इवांग पनी दुल्हक ढालक दगर दिहत धीर धीर आग बढैना किसिमके संकेत दिहत कलसे दुल्हीक गोहीन जुन आपन गोही दुल्हा लैजैना व एकठो सखी (गोही) छुटना हौरसे बनावटी गारी देती त्वागत कर जैठ।

"अर दुल्हा लला रल्या" अर दुल्हा लला रल्या अस्त अस्त कुछ घट लगटीक शब्द प्रयोग करती हस्ती रमैती आपन गाउँसम्म दुल्हीक घरसम्म पुगैठ। दुल्हा दुल्हीक गाउँक थनवाम जाके कुछ छाँकी बुदी देती थनवा घुमक दुल्हीक कुल देउतनके थानम जाके बरछी गारठ तबसे ससरारक घरम वाकर अधिकार कायम हुईलक झण्डा गारल जसि सब प्रकारके खान पीनके तैयारी कर लगठ। बठिनियन पैल्ह परेईलक बाटम क्षमा याचना करती मुमधुर शब्दले तीहैठ। आपन गोहीह मजासे पालन पोषण कनी गहना पोषाक दीह पनी अति उादेश दीहती कह लगल, "शानी अस गोही देली पानी अस मदिया रै भैसा वहन अस अल्यार दुलाहा कौन मुख बोल।

रातभर मांगर गैना, जाँर तनकैना मांगर गैना करती बाट। निद लागल मनै सुतलबाट एक घचिक सुतक दुल्हीक घरम भन्सरनेन उठक हाली हाली भात तीना तरकारी रिझाईल बाट। उरदक दाल आलुक तरकारी, सील गुंगी क गुदा रीझ स्याकल। जाँरक इवार निकारक थपक लाग ४/५ सठरी छबवा फेन तयार हो स्याकल। छेयक व मुरक फेदवा ठुङ्ग ठाङ्ग कै सेकल बाट।

विहान हुईटीकी गाँउक गवलीयन दाईज दार पँठ। सब जान आपन आपन पाल दाईज देना व दूलसा दुल्ही हन आशीवांद देती जैठ। अनहेम परछकी खवाक सेकठ। मात्र विदाई भात खाक दुल्हा आपन दालस दैठ जाईठ। दुल्हीक खाना पीना खवाक सप्राक दोलिक जबरजस्ती वाकर दादु लानक बैठा देलीम। तर दुल्ही हुं हुं हि हि हां हां जोर जोरसे रुई लागत। वाकर संग संग ओकर दोई भोजिन नाता पाता हुके सब जान रुई लगठ मानो हुकन छाई कुई छीनक जबरजस्ती लैजाईता तर उ रुवाई खुशीके रुवा रलक जन्नाहा मनै अन्दाज करठ। चौठियार जैना मनै आपन नाच गानके टोली मिलैठ व विदावारी होक दुल्हीक दोलीक पाछ लगल।

दुलहीक प्रतिक्षाम दुलहा आपन घरक द्वारीक उत्तरक पांजर छाता
 पीठक बैठल बाट । मांगर गौवन आपन तालम मेर मेरके मांगर गाईल बाट
 दुलहक घरक मनै बरा खुशी बाट । जत्रा खर्च लगलसे फेन जांर दाहू पानी
 जसिन बहल बाट । गांउ भरिक छोट बरा जवान बुढाईल इवार भात
 सानल बाट स्याकल खाईत नै त फकाईत । कोनो जम्ना बुझना मनै भर
 अनाज हो, खराब नै फकना कहत ।

दोलीक घण्टी सुन्टीक चौठ्यारनके माग अनुसार भीतरसे मजा मजा
 जांरक इवारले स्वीकृती मंगल । बरा मीठ जांरक इवार पैलक होंरसे हाली
 मञ्जुर हो गेल । ऊहवसे दुलहक दाई परछक लाग सामान सहित तयारी
 ठाउँम लल्ल पांच पांच ओसरी आछत बलोर पानी दुलहा दुलहीक कपारीम
 घुमाक छावा पतोहियन आबसे ना लरहो कैक प्रमाणित कैक दीहुरार लै
 जाईठ देउतनके थानम फेन उह किसिमसे मुण्टा लरा दिहल व लाहीक
 त्यालले ग्वारा मीसा (मरा) दीहल इलहा दान्चे दाहू जुठाक दुलहीहन
 फेन पिआ देल थारू जातिके परम्परा अनुसार भ्याज कर्ना काम पुरा
 हुईल । उह वसे आब खानपीन नाच गात अम्ना भर चलल बाट ।

आपन गांउम लौव लौली ऐलक वसे कुई लौव भौजी कैक कुई लौव
 बहुरिया कैक एकदम खुशी बाट हमार फेन अस्तक भ्वाज हुइ कैक सब
 बधिनियन अन्दाज कर त थरेन फेन अस्तक द्वालक बरात जैना कल्पना
 कैक खुशी बाट । भ्वाज हुईलक मनै आपन भ्वाजक सम्झना करल बाट
 जबरजस्ती तन्व भ्वाज करावा पैलक जन्नी हुँक अस्त भ्वाज हुइलसे मजा
 कैक पछतावम बाट कोनो अन्मेल भ्वाज व उमेर नै मिलल भ्वाज होक
 रावत्या लनवा पैलक जन्नी आपन किसिमके सोचम परलबाट अस्त अस्त
 अर्थ लगैलबाट आजके उपस्थित मानव आकार के जन्तु हुक ।

गोही हो । हो गोही । आज दखिन होरिक डबरम गौरू लै जैबी ना”
 मगनी सजी पुलरानी व गांउ भरिक और गैवारन से सल्लाह कठं जंग-
 नी फेन आजकाल कनु पैदा चरहैना कभु घांस काट जेना काम करथ ।
 गौरूदक बगाल डब्रम छोकें अकठी खेल्ना घोरबाता खेल्ना, बैजल खेल्ता

पानी ऐलसे ठुम्कीम से घरघट्या खेल्ना कभु अँधर छटिया खेल्ना
 खेल खेल्ठ । पालीक पाली मार (दिनके खाना) खाए जैना पाला लमैठ
 साँझके गैया भैसा छग्री, भेरो घर लानक वेर खैना व बोही गोही मिलक
 घटवा जैना मजा मजा गफ कर्ना रहर लस्टीक बाट बटवाक हसना
 हसेना दैनिक क्रियाकलाप बाटीन बधिनियन के कलसे हुकनके चढता
 जवानी, बोबन देखके लोभैती रठ हुकरन्के उमे के थया हुक । कभु सां
 संग बनवा जैठ कलसे कभु जुन रातके ज्वाजा लेक छुकरना मच्छी मार
 जैठ । गाउँसे तनीक दुरके घंघरम रातके समयम ज्वान-ज्वान धरिया
 बधिनियन मच्छी मरना, मैना गैना रात गैलक हुक पटा नि पेट । कब
 रातके १ बजे कभु २ बजे मच्छी मारक फिर्ता ऐठ । मच्छीम लसुन, प्या-
 जके पाता मिलाक कंजवक सन्ना मच्छीक तिना पाकल हुकनहक बाबा
 दाई भौजी दादु हुँक बरा खुशी हुइथ । रात सम्म मच्छा मरलक जोगनी
 आज गोही हुँक बजार खेल्ना जिनिस लेक जैना थाहाँ पाईल तब उहो
 फेय रहर लग्धीस । सक्कु गोही हुक आपन-आपन दाईनमे लाही अरसी,
 चाउर मसरी ज्याकर घरम ज्या रठिन छिटवा भर-भर गल्ला पेट ।
 नगद लेक जैना चलन नै हुईन । मजा-मजा चोल्मा, गुन्वा, टिकली, झो-
 ठबन्ना घल्ल ब बन्हलबाट । जोगनी फेय आपन भोजीनसे माबबेर ठुस-
 ठुसाके एक-दुई गारी देक और गोहानसे तनिक दिन्चे अरसी छिटवम
 दार देठिस । विचारी आँखीम ऐलक आँस औरजन देखा दरले हस्ती
 उज्जर गोन्वा कर्ना चोल्मा लगाक टिकला चमकैतो हालीसे निकरक
 गोहिन संग बजार जैना डगर लागठ ।

“ काकर अत्रा बेर-बेर करठो हो गोही वरका दिन हो स्याकल ।
 भाब संझ्या घर घुम्ना रात परजाई । ” “ अहो नै परी हली हनी परगा
 नमैबी जे ” । सब गोहिनसे आग-आग न्याग लागठ जोगनी । जोन दिन
 हुकनक बगालम जोगनी नै रठिन तब हुक डगर अंधार जसिन लगठोन,
 सुन-सान लगठोन । जोबनीह जातिक जोगनो असोन अजरार देखुइया
 जोगनी जसिन बल्लबाट । जब फेय अजरार मुह, हस्ती रना बानी, बात
 बटवाक नि ओरैना, गित गाके सब जहन खुशो पर्ना, जब फेय बात जिता
 दरना तर्क कर सेकना, मीका परलसे बदमास मनैनसे झगरा फेय कर

खैना पैसा पुग जाईस । पढना चिन्ता हुईलक बसे वहीह कुछ पैसाकेजर -
रलहीस उह बसे और जान मद पोना कंक कुछ पैसा खर्च करैत तर बा-
गर मदक पैसा बचाके घेराखत । अस्तक ४/६ फ्यारा बजार गेल तब
५०/-रुपया जमा बचलीस । नाम लिखैना जम्मा ५/-रुपया लाग । बाँका
किताब कापी व पटलुङ्ग लिहम कंक स्वाचल तर वाकर घरक मने आव
उहिह नै पढाके का म धन्दाम लगना कह लगलीस । असौ से वाकर काम
खेती कर्ना या गैया चढैना हुईलीस । उह बसे उ बदिवा बनल । बदिवा
कहलक दाउम गेबा चहैना मनैन कहल जंठा ।

बिहान्नी उठना गेबा छोरना बनवाम लैजेना दिनभर गैबन के पाछ
पाछ रहना रात पर्लसे घर पुगना । दिनके घर देखना असम्भव अस्त दिन-
चर्चा (दैनिक काम) बातिस सागरके । आपन संगके विद्यार्थी हुक कक्षा
७/८ म पढती रलक बात सुन्के भारी चिन्तीत हुईल आज काकर कलसे
सागर जम्मा ४ कलास पढके छुताबा पैस रह उ समयम ८ कलास पास
कर्ना कलक बहुत पढल जान जाय । १० कक्षा पढल मने त हाकिम जसि-
न मान पैना चलन रह गाँउ घरम पढना मने बहुत कम रलह ।

सागरके गाँउम शोभा, जन्कु, कालु, रामु गोचालीन रहीस् । तब फेय
सब जहनसे जन्नाहा रह हुकन संज्ञाके पढ सिखा दी । अपने दिनके स्कुल-
म पढ जाए । पाछ गाँउक कुछ मनैनके संगतले राभर तास खैलना दिन-
भर लदीयम लहाए जैना, मच्छी मार-मार खैना, चौरैतके ठाँट खोजना
खराब बानी करलक कारनसे पढनम मन नै जाईस । तर आपन संगक
कक्षाम पढलक मनैनके नाँउ सुन्के आज जसिक फेय पढ जम कंक कुछ
रुपया जम्मा कंक रातीह भागके अन्त चल जंठा ।

पढ लिख कौनकाम खती कर धान-धान, पढलसे मनै बौरैठ । लड्कन पढे
लसे पूजा लागठ अस्त-अस्त कहावत थार समाजम रलक बसे पढना मनै-
नके संख्या एकदम अग्राम गन सेवना रहन बात । छाईन पढेनमे बौरैठ,
बोक्सीन बन्ठ । थरवा लेक चल जंठ कना ठाँउ गाँउ घरम लेल बा ।
उह बसे छाईनह किताब कापी कलम छुना मनाहा बात । पढना समयम
(उमेरम) भैया बाबु खेलना तनिक उमेर बदलसे ग्वाबर, पानी, भाँरा
भिसना, भन्सा कर्ना, कुटना पीसना, फुसंद ग्याला नचना गैना । अस्टीम्की

से लेक दस्या सम्म त रात-रात सम्म नचना । संक्या नाँच नचना महाभा
रत के गीत कृष्ण लीला कण्ठस्ट गाय सेकना क्षमता रलसे फेय किताब
कलम छुना निषेय अर्थात स्कुल जाए नै पैना, रात्री स्कुलम फेय पढ नै
पैना चलन बाँत ।

सागर आजकाल आपन दिदी भातुक घरक गाँउक लड्कन पढैना व
दिनके अपनहे स्कुलम पढ जैना संग संग भान्जन हन लैजेना संग लेक
ऐना अर्थात पढना व पढैना काम करलक बसे घरसे पढना खर्च नै माग-
ल हो । मंगलसे फेय घरक मनै नै देखिस । उहबसे घर जैना बन्द कर्ल-
वात । उत्तर पुरुबक १०/१५ जना विद्यार्थी रातके विहानके पढा देलक
होसे खैना, बैठना व फीस तिनी आपन खर्च अपनेह कमाक काम चलैटी
वात । पढनाम रुची व पराक्षाम सबसे घेर नम्बर नन्लक कारणसे गुरु
हुक बहुत मजा मानल वात । असौ कक्षा प्रथम हुईल तर फेय वाकर सं-
घरेन कुछ आग गैलकम भर उ चिन्तीत वात डाह, ईर्ष्या बाटीस पाछ
पर्लक बसे ।

चैत महिनाम रजवा दाड तुल्सीपुर ऐना वात चलन बाट । स्कुल संचा-
लक समितिक अध्यक्ष व हेडसर विद्यार्थीन लेक ह्यार जैना कहल वात ।
विद्यार्थी स्वयमसेवी कर्ता वन्के जैना स्कुल पोशाक परिचय पत्र विल्ला
तयार वात । रजवाक चिल्गारीक लगू-लगू मनैन जाए नि देना लाईन
लगैना कहल वात । विल्ला भीरके गैलस होटलम खैना पीना बैठना व्य-
वस्था मिलैटी वात ।

रजवक चिल्गारी आईल । मनैनके भीर खचाखच भरल वात मानो
सल दाङ्गेके मनै एक ठाँउम जम्मा हुईल बाट । कुई मनै ढल्लसे उठना
फुसंद नै पाके दब्बा पाके मुना जसिन अवस्था वात रजवा आके भाषण
करल संज्ञाके नाँच ह्यारल तर सागर उ सब चीजसे ओत्रा अर्थ नै पाई-
ल काकरकी व कर संग पढलक एकथो सँघरिया और स्कुल से ऐल रही-
स । उहिह चिन्हल तर सागर ह उ नै चिन्हल । सागर और चिन्तीत हु-
ईल काकरकी उ पुरान मित्र एकक कक्षा उपपर गुरलक वात थाहा पाईल
उह कारणसे जब सम्म बराबर स्तरम नै पुगम तब सम्म भ्याँट नै करम
कंक चुपचाप बैठ गैल दोश्ना दिन कार्यक्रम सेकके सब जान आपन आपन

गाँउ ठाँउ होर लगल । सागर विद्यालय गैल ।

विद्यालय होलफरुद हुईलक कारणसे सागर एक तह उप्परके कक्षाम प्रवेश पाईल उह कक्षाम फेय कक्षाम मजा अंक लान्के एस. एल. सी. कक्षा ६ म और विद्यालयम पढ जाए पर्ना हुईलिस । उ समयम जहोर तहोर हाईस्कूल नै रहल कारण सदरमुकाम घोराहो बजारम पढ जैना ब्याला वाकर पुरान गोचाली डग्रीम भ्यांट हुईठीस तब परिचय पुछ बेर कलास फेल रलक कक्षा ३ सम्म संग बैठलक खेलक सूतलक स्मरण कर्ल दुनु जान व बडा हषित हुईल बढी से बढी खुशी सागर रह काकर कलसे वाकर प्रतिज्ञा आज पुरा हुईलिस जाँन कल रह रजवक सवारीक ब्याला बराबर कक्षाम नैपुगत सम्म भ्यांट नै करम कैक हुक दुनु जान सल्लाह कठं, एक्क ड्याराम बैठना संग पढ जैना जस्त पैल्ह कर्ल रलह सल्लाह बल्लक वर्से आब संगएक्क ड्याराम बैठल बात । संग विद्यालय जैना, भात भन्सा खैना, रात सम्म पढना नियम बनैल बात ।

अस्तीम्कीक गात रात भर गाके विहान हुईना ब्याला हो स्याकल । निदासल बठन्यावा भेम-याईल देख परठ तर फेय जोगनी आपन गोर्हान संग हसिलो मुहार देखैना कोसीस करता । “ गोहो हो मै कसिन देख परतु हो । महित भेसलार लागता जे हो ।” अहो कसिन देख परवो बर सुग्घर त काहु । झल-झल दाँत अनारके दाना जसिन । उठल छाती, बर-का भारी पुट्टा, उज्जर गोण्या, कर्या चोल्या, घ्यावम मेर-मेरके गुरिया गहना नाकम फुली, कानम झिलमिलिया चुस्वा परीम भिछिया, हाथम श्रिया, तरीया, अंग्रीम चौअन्नीक मुन्द्री सब देखैती ।” तुहिनत आज बन्दादा खोब मन परैही हो । धत्तेरी” तुहोन जे हो ” । अहो उ त तुहान मन परठ जे । उ नै देखथो तुहाँर जसिन त अस्तीम्की लिखन बात ।” ना बताव चोलो हाली” आपन गोहीह ढकेनटो टन्टी दुनु जान चुल - बुलैटी छाती उमकैतो पुट्टा हिलैटी हाथिक चालम घटवा वौर गैल ।

जोगनीहँ संप्रल देख्के आज सागर मोहात हुईल बात हुईनात आपन दिदीक घर बैठके भैभावन हुकन पढैना समयम लौरन केल बैठके भैभावन हुकन पढैना । समयम लौरन केल पढाए बेर लवरेन फेय पढैना चाही कना बात कहल रह तर थार समाजम छाईन पढैना नै मजा हो कना भावना हुइलक वर्से एक जान फय महिला जाति पढ नै पैल । जत्रा जान पढल सब लौरन केल पढ पैल ।

“ आओ हो साला ! माखुर पिअ !! जा री बाबु कक्कर चढाए । साला ऐल बाट ।” बहीम बैठक चिलम तन्ना गफ कर्ना जोगनी से मूट्ठा कर्ना कौका पैलक म सागर फेए आनन्द मन्लबाट / उमेर पुगबेर पुरूष महिलनसे, महिला पुरूषनसे बाकर्षीत हुईना स्वाभाविक बात हो । प्रकृ-तिके नियम फे हो । यदी असिन नै हुईलसे समाजके सृष्टी बन्द वा स्थगित हो सेक्ने रह । संसारम रलक जत्रा फे जीवजन्तु किट-पटङ्ग, प्राणा जातो भरीक योह नियम हो । उह वर्से जोगनी व सागर एक्क ठाउँ बैठ बैर एक दोसर जहन आकर्षित नै करना बात नै हुईल ।

दादु बाहर चल गैलक वस जोगनी कपार ठक्राईल सागर खटीयम बैठक किताब पढ लागल वाट । तर वाकर आँख किताब वौर रलसे फेए मन आपन मनपरलीक वोर बतिस । मौका पारके आँख घुमाके ह्यारल करठ । जोगनीक शारिरिक वनावट उमेर अनुसार मिलल देख्क जौन पुरूष फेए मोहित हुई स्याक । बोलो सुन्के आवाज वौर जेह फेए जनास लगना कोइलीक स्वर जसिन अवाज रहिस । जस्तक राग ब कृष्ण के विचम कही की सिता रामक जसिन कही हुक एक द्वासरके अनुपस्थितीम कौनो चिज हेराईल जसिन अनुभव कर्ना अवस्थाम पुगल वाट ।

“ आज मन्द्रा बजाए ऐ हो नाहो । हम्म नाच कटी ।” सक्ख्या नाचक पैया लगठ । मेर-मेरके पैया लाग बैर शारिरिक कसरत फेए हुईत । उह वर्से घेर बेर सम्म पैया लगना चलन वाटोन । मन्द्रा बजैनाम सागर फेए खोब सौखिन बाट । समाजक परम्परा अनुसार मन्द्रा बजाए नै जन्ना मनैन गंजा मान । पढ जान चाहे ना जान गित गैना मन्द्रा बजैना नचना मनै गाउँ घरक मनै खोब मन परैठ । पैया लगना नाच नचवा गित गैना सब सेक्के आब सुत जैना कना ब्याला बिदाई गितसे मदरेनहन बिदा देना चलन अनुसार ” जाओ-जाओ मदरिया र दादु आपन घर जाओर स-खोर सुत हो र दादु भौजीक सग ।”

ज्याकर जन्नी रलक मनै त आपन जन्नासे सुतना हुईल । प्राकृतिक नियम अनुसार आनन्द लेनादेना हुईन तर सागर भरखरके उमेर चढ लागल युवक गितके बोल सु-मधुर ध्वनी रातीक ब्याला फेए जोगनी ह-सक जगमगैना बथिनियन देख्के मोहित हो जाए । मनम लागस यदी

जोगनी मञ्जुर करठ कलसे रातभर संग एक विस्तराम रात वितैना कैक तर वसिन कर्ना समाजके मान्यता से बाहार हुईलक ओसें अनैतिक कामसे सागर डराए। रात सम्म माखुर पिना गफ कर्ना अत्रकर पैलक फेए सागर ह बडा मजा जिवन सफल हुईलक अनुभव कर व आत्मसे महान सागर वन्के जोगनीह आपन सागर रूपी गहिराईम (आत्मा) समाहित कर्ना चहटी सुन-सान विस्तराम छट-पटैटी कुछ बेरके वादम निदा गैल।

लक लकाहा जवानी भरल सागरह देखके जोगनी फेए स्याकल सम्म लग्गु जैना कोसीस कर। कन्या तैलोर कपार ठिक्क मिलल कज-यार भाउं पाकल समट्वाला जसिन गाल, ठूल द्यांग चिटक्क परल शरिर देखके निदाईल व्याला सपनम डुबुल्की मारके ख्याल जसिन भान हुईस जोगनीक मनम।

घरक मनै सब सुन-सान निदा गैल गाउंक कुकरावन केल लगातार भू-भू-भू-भू-भू- भूकल बाट। मनैनक शरिर केल विस्तराम परल बाट। आत्मा के जान काहाँ दौरल वाट कैके थाहाँ नै हो। “संग नाच ह्यार जैबी ना हो वन्दादा। मै आपन गोहीन कल बाटु। तु हमन रामलीला ह्यार लै जे हो। अहो हाँ हो जेबी त का।” दश्येक समय बजारक ठाउंम नवदुर्गाक उपलक्ष्यम राम व रावण के बिषयम लिखल रामायणम आधारित नाटकीय खेल हन राम लिला कहल जैठा।

नाच हरके ऐना डगर लम्बा हुइलक वर्से मैगर-मैगर बात करतो हँस्ती रमैती गाउं भरीक बथिनियन सागर समेत गाउंक लवन्डन घर पुके आपन-आपन कान्तीम सुत गैल।

कभु म्याला बजार कभु नाच हेर्ना बहाना कैक जोगनो व सागर घेरसे संग रहलक देखके हुकन बिचम माया-प्रेम ध्यारसे छलक लागल वात ईहोर-उहोर फेलल बाट। हुइना फेए प्राकृतिक नियमनुसार हुकनके बिचम आकर्षण बढ़तो गैलन। एक जान द्वासर जहन नै देखलसे मन मरव रलहोन।

आपन पंजर संग बैठल सागर हन- “का तु मही जन्नी लेबो।” कसक जिवन निर्वाह करबी हो। मै त अपनेहे थरुवा लेहम कल बातु।

दाई नै हो मै टुअर वातु। भ्याज कै देही त कहल मागल चिज नै देही। उह वर्से मैं तुहीनसे बर मैया लागठ। अहो मही फेए त तुहोनसे बर मैया लागल बाट। तुहीन नै देखलसे मही भात खैनास फे नै लागत।” आपन संग एक विस्तराम बैठलक सागर के पुरा शरिर देखके जोगनी तनिक झस्क जसिन करल। हाली से उठके भांगु नै त दादु भोजिन का कहही। भारी लाज मानके छटपटाई लागल को निद खुल गैलस और आँर पाँजर ह्यार बेर विस्तराम एकलही असिन पसिन पाईल। क्वन्टी एकदम अँधार रह। दिया बारल सलाई घाँटके। कौनो भूतवा आईल रहकी कना डर जाग लग्गीस आपन दादु भोजिनसे कह नै स्याकल। शरिर झम-झमाई लग्गीस। अस्त-अस्त समय वितैती गल।

जोगनो विस्तराम परल बात। दाई नै रलक छाई हुईलक वर्से दादु भोजिन स्याकल सम्म सुसार कर्ल बाट। भरन बंसम नदीया कसहा जसहो हो जैठो त दुनीयाक कहही कैक बरा-बरा नाउं चलल गुरुवा घर गुरुवा देश बंधिया सब जहनसे पाटा बैठाइल बाट। जाँर, दारु कछन्या कुल्वक पानी जसिन बहके लदियाम, लदियासे सागर व महासागर होर जैटी बाट। रोगीया तनिक दिन रहके दान-दान उठ बैठ सेकना हुईल। लग लग्या जर (ओलो जर) ऐलक वोंसे डकडारके विरुवा फेए खवैलक वोंसे दिन-दिन निक हुईल बाट।

“बाबुरी वरका नाच आईकलाग बाट। हालीसे नै चोखैव्या त नाच ह्यार पैब्या नैत नै पैब्या / नाच हेर्ना लालच करटी स्याकल लम्म जोगनो खाना खैना, नेग्ना, स्याकल छोटो-छोटी काम कर्ना प्रयास कर लागल बाट। बरका नाच कलक पाँच पण्डवा व कौरव के बिचम हुइलक लडा-ईके गित जौन कथा महाभारत कथा के रूपम लिखल बाट। वाकर आधारम पैधार (खण्ड) पैधारके आधारम तैयार करल नाच हन बरका नाच कहल जाईथ।

नाचके झलक ताल ह्यार बेर ताल मिलल मन्दा बजैना मन्द्रक ताल अनुसार शारिरिक व्यायाम हुइना किसिमके नाच (पेया लगना) पंक्ति-बद्ध होके हात ग्वारा मिलाके काठके वनल चित्रहस्त कलाम आधारित



चिरैया नचैना । कुछ रोग विराम पलसे पुरान तन्त्र मन्त्रम आधारीत झार फुक कैक चोखैना । पाँच पाण्डावनके वाणहो कैक (झण्डा) धज्जा गरना । मरदानाके प्रतिकके रूपम अस्त्रील) लाज लगितक स्वांग देखैना नियम बनैल वाट । नाच कर्ना मनैनके पोशाक पाँच पण्डावनके नक्कल देखैना मेरके वाट । बरे-बरे जन्नाहा गुरूवन आछत छिटकैती नचना ठाउँ फुँक-फाँक परठ । अगुवा मँदरीया इवांग-इवांग मन्दरक ताल मिलैटी आग बढती वजैनी जैठा और मँदरीयन ताल मिलैटी जैठ । नचनियन इवाई-इवाई मजैरा जुझैनी नाच गुरू कर्ल ।

बार्षिक परीक्षा लगु आ स्याकल । दस्या ओरैतोकी टेस्ट परिक्षा दिह पर्ना ओसो सागर आपन विद्यालयम हाजीर ह्वाए गैल । “ दस्या कसिन बितल होए सागर ? मै त परीक्षा लगु आ गैल कैक कुछ नै दस्या मन्नु । घर गैनु त काम धन्डासे फूसद नै पैना । उह गाउँम बथिनियनके सख्या नाच हेनु । महतान घर गुरूवन खौब सुसुईल । म्वार फेए गुरूवा ऐना हस करतह । हालीसे भाग गैनु । ”

का गुरूवा जातीसे ऐठा नि ? मै त जाँर पिके ओस्त उलरठ कठुँ जे । के जान का हो बत्राधर त महीह ज्ञान नै हो । तर मही फेए मन्द्रा सुके लगलगी लाग तह हो ! जातीसे गुरूवा आजाई त कसीक कर्ना हो कैक । “ जा बात परी तुँ फेए गुरूवा ऐलसे का सु-सु कै देना ! गुरूवा हुईलसे कत्रा मजा । सद्द मुरगीक अण्डा, शिकार, पकवा छेप्रीक टँगरी, मुण्टा खाए पैना । मिठ मिठ भुवर मद पिअ पैना । जहाँ जाव इवार त फरक नै हो । पूजा कर जाके हमार बाबा छिटनी भर मुण्टी-मुन्ता फेइवा लानल करठ । गुरूवा हुइना फेए भारी मान पैल बाट हो कि नाई ?

“ हुइना त हो तर मही वत्रा विश्वास नै लागठ । गुरूवा मनै जन्नाहा रठ, मन्त्र लेक बघुवाम सवारो कठ । लदायम भारी बाहार रलसे मन्तरले उपाहार जाई सेकठ कठ तर दाङ्ग जिल्ला थारुके आवाद कर्लक थारुके जग्गा जिम्दारी रलक हो कना बाट सुन जैठा वत्रा जन्नाहा गुरूवनके मन्तरसेत सब शोषकनह बदमासनह मन्तरसे खतम कैक आपन जग्गा जमिन बचाए सेकना हो । खैत आज हम्न स्कूल पढना ब्याला थारु-

नके अवस्था कर्मैया, किसान, ह्दवा, चरुवाके रूपम बचल वाटी । हमार आपन घर बनैना जग्गा नै हो । हुकन्के दाई हमार दाई कमलरह्या, हुकनके बाबा जिम्दरवा मलिकवा वाटीन कलसे हमार बाबा कर्मैया हरजोतवा, छाक, बास कपासके ठेगाना नै हो । असिन अवस्था हमार जत्रा मन्तररलसे फेय कौनो काम लागल जे । उह वसे गुरूवा हं के मुर्गिक फेदवा चवाईलसे कौको उपायसे शिक्षा हासिल कर्लसे जाला-फटहनसे आपन समाज ह बचाए सेक जाई कना मही विश्वास लागल वात ।

“ हुइना त हो अपनेक कलक बात सोर आना सही हो । तर का करबो पुरान जवाना से चलल रीति रिवाज हम्न कहताकी बदल नै सेक जाई । लाखौ बर्षसे चलटी ऐलक परम्परा हन बदलक लाग त वत्रहे समय लाग सेकी तर अपन हम्न जासन शिक्षित युवा हुक जाँगर करब, कलसे तनिक हालीसे समाजम परिवर्तन लान सेक जाई । कुछ बष पहिल पढल मनै बौरैठ कहंत कलसे आब पढ पर्ना बात ठीक हो कठ । तभु पर हमार जातीनम छाईन पढेना चलन नाहीके बराबर बात । कौनो कौनो शहरिया वजरिया मनै केल छाईन पढे । तर शहरिया महिला हुक पढलसे फेय आपन गाँउ घरक दिदी बाबुन हेला कठ । असभ्य कैक बात फेय नै बटैना चहठ । ”

“ नाहो हो ओसिन त पुरूष मनै फेए त धेर पढल मनै गाउँ घरक हम्न जसिन गरीब किसान कर्मैयन हेला कर्थ । कौन जुन्हुक गाउँक एक ठो ध्यार पढल लवन्डा त आपन बाबहन म्वार कर्मैया हो कैक परचय दिहल आपन गोचालीनसे हुन । काकरकी वाकर बाबा साधारण पोशाकम रलहिस उ जुन आपन बावक कमाही लेक ठाँठ-बाठसे सप्रल रह । ” तर ज्या व्हाय आपन दाई-बाबा आपनसे बडवार मनैत मान पर्ना हो । जौन दाई बाबा छोटो रहल ब्याला गृह मुतह सहेल रोग व्यादीसे बचैन घाम जारसे सुरक्षा कर्ल पढेना खच देक पढैल उह दाई बाबन हेला अपमान । यी त नै मजा बात हो । उ फेए छाई-छावा पाई यदी वक्र वस्त करहीसत कसिन लागी । ”

गोचाली हरी व सागरके बिचम ऐसिन आपन समाज व जातीके

विषयम महत्वपूर्ण वात चलल व्याला टेकु फेए आ पुगल तीन जान सँग बैठक पढना, सँग खैना, नेग्ना, घुम्ना लगौट यारके रूपम जीवन चलैटी वाट यी तीन मुर्ती हुक।

पढाई प्रति तीनौके बराबर रूची हुइलक वसें निद नै आईत सम्म डेब्री बारके रात सम्म पढना जब नोद लगलसे सुतना, स्याकल सम्म मुर्गी बसनासे पैल्ले उठक पढ भीर जैना। स्वस्थ के लाग लाभदायक हो कैक विहानी न्याग जैना दतिउन कुल्ला कर्ना लाहाके खैना करवो त विद्या ऐठा कना भावना रहिन उह वसें आपन दैनिक काममा खेलवार नैकरल हुईट।

एस. एल. सी. परीक्षा २०२४ साल होर पास करल थारुनके संख्या दाङ्गम एक दम अग्रिम बन लायक रह। उ इयारम बैठना सक्कु जान पास हुईलक वसें रिजल्ट १००% प्रतिशत हुईल इयारा मालिक बरा खुशी हुईल। बढाई देती "अस्तक मेहनत कैक पढहो रै भैयो। हमार जातीम पिछरल बाटी। हमार जाती समाजके लाग कुछ सेवा कर हो।" स्वोकार करती तीनौ जान कलेजम भर्ना हुईठ। तर आर्थिक अवस्था के कारण संग पढनै पैत। दाङ्गके थारू बुढान बसाई सराईक कारण।

२०२१ साल दाङ्गम भूमि, सुधार लागु हुईल। मोही हक कायम, हद बन्दी कायम, अनिवार्य बचत जवरजस्ती उठाए पर्ना। अनिवार्य बचत जिन्सी नगदी छुट्टा-छुट्टा निर्धारण कै गेल बाट। गाउँ गाउँम शक्ति सम्पन्न हाकीम ऐन वाट। कौनो जग्गा धनो व मोही सल्लाहा कर नै पैत। कैक एकदम क्रान्तीकारी भूमि सुधार ऐल बाट। आव जग्गा मोहितके हो जाई पैसादार नै परी। वस्त मिलना जग्गा पैसा काकर खर्च करवो कना नेता हुँक गाउँ घरम हल्ला कर्लवाट।

मनै परिस्थिती दास हो तर स्याकल सम्म परिस्थितीहन आपन काबुम लन्ना प्रयास मनै कठं कुछ सफल कुछ असफल फेर हुईठ। जौन साल बचत उठना घरम भखारी कैक। प्रकृती जुन्हुक आपन हैसियत देखाप लागत। मनै कत्रा पावरफ वाटो कैक। लग-भग २/३ वर्ष सुक्खा खडे-री कै देहल। तरम दान्चे राक धान, मकै, लाही अनिवार्य बचतम चल

गेल। लौव अन्न नै फरल फाँटकाफाँट दिहवा खतवा प्रती रहल वाट। एक होर मोही लागत जग्गासे कुट बटैया दिहही पथाँ कैक जिम्दार कह लगल। हद बन्दीक कारण पाहारके पहाडी आके दाङ्गके जग्गा खरिद विक्री चल लागल तीन जिम्दार ह्वए सीनक बेमौता जसिन घर उठ लागल। बेगारो दिन रात रलक। रलक तीना ताबनफे जिम्दारनके जन्नीन व लरका जवरजस्ती तुरके लान लगल। कुछ कहूँ त तेरो जग्गा हो। तेरो बाबुले पैसा खर्च गरेर किनेको छ। यो वष खेतो गर्न पाउँदैनस। हलो काटो दिन्छु। अस्त-अस्त कैक धम्की, शोषण, दमन अन्धाय, अल्पाचार बढती गेल। थारुनके आवाद कर्लक दाङ्गके जमिनम थारुनसे विछोड हुईना अवस्था आईल। दाई बाबक मैया लगती-लगती थरवक घर जाई पर्ना तनतन्य भ्वाजक लाली जसिन आजके थारुनके अवस्था।

एकठो जिम्दारके बेगारो कर्ना किसानके

पुस्तौ पुस्तासे बैठलक दाङ्गके थारू किसान हुँक कर्मैया, घर बार विहीन कर्मैयाके रूपमा परिणत हुईल। सायद माहो हकम कुछ मिल सेकी कैक अफिसम) अद्दाम आपन दुःख पुकारा कर गैत्र तर दुधक साँची विलारू कना असक उहाँ फेए उह जिम्दारनके छावन नाता पढन शोषकनके सहोदय हुक हाकीम कर्मचारी रलक ओसे थारुनके दुःख मुन्ना मनै नै मिल्ल उह मरसे सागरके दाइ बात्रा लगायत जन्मभूमि से वाध्यताले विछोड हुईना अवस्थाके सृजना हुईलक हो।

दाङ्गसे बुढान त बरा मजा रठा। सस्ता बन्वा जग्गा, अनाज सस्ता उगनी हुईना गाई बस्तु जत्रा पालो बन जङ्गल चहना सस्ता अस्त अस्त वात फेए बुढानसे तत्रा आकर्षण रह कलसे सोषक कलक त दाङ्गम केल वाट। और ठाउँ नै हुईहो कना थारुनके संसारम ठाऊ लेल बाट। एक गाउँसे दूसर गाउँक गोचालीन से चिनजान सम्म नै हुईलक थारुन का थाहाँ का शोषक कलक दाङ्ग व नेपालम केलनाही बल्की (विश्व) संसार भर दुई मेरक मनै वाट एकमेर आनक कमाही। लुट मचैना शोषक कलसे दोखा मेर जुन्हुक मरमरके पसिना चुहना शोषित हुँक वाट कैक। आपन गाउँ ठाउँसे लेक सक्कु ठाउँके

शोषित मनै एक जुट नै हुईठ सम्म हमार आपन कमाही अपनेह खाए
 पैना दिन नै आई । उह वर्से संसार भरके किसान मजदुर
 एक जुट हुई कना गीत सिख सिखाए केल नही वरो जोरसे गैती नाच
 पर्ना बात कंक आपन हक अधिकार खोजना थारुनह प्रशासन जिम्दार
 शोषक सामान्त मिलके दाड छोरना अमानवोय वातावरण बनैलक कारण
 भौकी-भौका लेक आपन जन्मलक गाँउक जग्गा जमिनम आसँ चुहैतो
 चलगल बाँके, बँदिया, कैलाली, कञ्चनपुर, मुखेत, डग्रीम कत्रा अनैतिक
 काम हुईल उ त स्वर्गक मजा लिहक लाग अप्नेहे मुअ परठा कहल जसिन
 हो । बास्तवम नै मुअतसम्म स्वर्ग देखना फे असम्भव ब त हो ।

समब वरा उराठ लाग्दो बा । चिरै चुऊडगन के बोली फेय बैराग लग-
 नाहस सुन मिलल बात । कुई मनै घाँस काटके आके मिझनी खैना तया-
 शीम बात । भन्सरी फं गुईठक आगी हाली नै बर्लक वर्से अनमन बाटो
 के जान धुवा लगलक वर्से हो की दुःख मानके ठहरैना मुस्कोल बात । तर
 फेय कैयो जन्हक आंखीमसे आंस झील मीलाईक जान परल बात ।
 काकरकी आज जोगनी आपन भित्री आत्मासे स्वीकार सेकलक सागरम
 पवित्र हिरक लाग लौव ठाँउ लिहचल जवैया बात ।

आनक दाई बाबा जत्रा मजा रलसे फेय आपन दाई बाबा (प्यारो)
 मैगर रठ । आनक जन्नी जत्र तेलौर रलसे फेय आपन जन्ना काम लग
 रठ । आनक घर जत्रा झकझकया महल रलसे फेय आपन झोप्री स्वर्ग
 समान मजा रठा । हन्न फेय आपन जन्मभूमि पृथ्वीम रमैल बाटा । और
 देश दुनियम ध्यार विकास हुईलक रलसे फे हमन नेपाल देशक मैया ला-
 गठ । उह वर्से जन्मलक दाई-बाबक घर छोरके और ठाँउम जाई पर्ना
 हुईलक वर्से जोगनी आपन सुतलक कोन्दी, आपन नेगलक पीन्यारो आपन
 बहरलक अंगना, गोहिनसे छलमलेटो पाना भर्लक घटवा, सँग सखिया
 नाच नाचबेर पैया लगलक गीत गैलक गाहीन छुट जाईट कंक सुक-सुक
 सुक-सुक करती रूईट वाट । जोगनोक स्वाई सुन्के वाकर दादु भौजिक
 आंखीम फेय आंस टालपिलाइ लागत बात गोही हुक अ सन मैया लग्ठीक
 गोही प्याए जाए पर्ना ओरसे चिन्तित बात त संसारीक व आपन सामा-

जिक परम्परा हन मान परना बात समझके सब जान स्वीकारल बात ।
 काकरनाहो छार्क जात एक ना एक दिन घर छ्वारपरना विषयम सब
 जहन थाहां वातन । उह वर्से छोरही नै सेकना घर आँगन गल्लो गाँउ
 ठाँउ छोरके आज लौव संसारके सृजना करलक जोगनी जुग-जुगैटी लौव
 डगर हेरती आग बढल बात । उ जैना संसारम कत्रा अन्धर हुई क-
 सिक अजरार बनैम जत्रा कठिन समस्या परलसे फेय हिम्मत नै हरना
 उहीहन आत्म बिश्वास बाटिस काकरकी उ पैल्हेहे प्रतिज्ञा कंक सेकल
 बात । रात परलसे दिन उठना दिन रलसे रात परना वास्तबक नियम
 हो । रोटी एक्क कर नै पाकठ । जर्मलसे मुअ परठ । खैलसे ह्याग परठ ।
 वस्तके संसारम दुःख सुख दुनु चिज बात । सुखम ज्यादा खुशी दुखम
 ज्यादा निरास नै हुईना चाही कना बात जोगनो पैल्हेहे से बुझल मनै
 रलक वर्से अन्धर ठाँउम अजार करना साहस लेक आग बढल बात ।
 गोही हुक फेय उहीह साहस देती बात ।

आपन जर्मलक घर पानी भर्लक घटवा समझके लौव घरम वरा कठिन
 लागल आपन लहेर आके गोहिनसे घेर वातचित करठा तर फेय जीवन
 वितार्ई पर्ना घरक ध्यार गनउन कर्ना उचित नै लागल वर्से अजरार मन
 कर्ल बात । हुँसना हुँसैना मनके ब्याठा मनम पचाई सेकना क्षमता भग-
 वान देल बाटिस वा पैल बाट उह जान तर उ दुखो मुहार कनु नै देलाई
 त जस्तका जोगनी लरत्याज मुअल ब्याला फेर जुग-जुगैटी रठ वस्तवाटि
 स जोगनोक चालीबानी उह वर्से अईसीन जावन यात्रा पाके सागरफेए
 वर्षा, झरी, झरना, खहरे खोला नाला, नदीनाला हुईटो तमाम फोहरमै-
 ला दुख कष्ट पार करटी सागररूपी महासागर सम्म पुगना लक्ष्य बनैल
 वाट ।

आशा म्वार घेर वाट जिवन जुन्हुक छोट वाट कहल जसिन बाबक
 स्वर्गारोहण हुईलक ओसँ सागरहन खबर पडल । तर सागरके किनारा
 व ओरूवा कहाँ वा कना पत्ता नै रलहिस । उह वर्से काज क्रियाम फेए
 भाग लिह नै स्याकल । याकर थरवा आपन बाबक काज क्रिया नै कर्ल
 हो । तँ आपन थरवाह ऐतिको ना छुअस् । आपन छावाह फेए ना छुअ

दिहस। अस्त-अस्त बातम जोगनी बरा चिन्तित रह कैसीन थरुवा ले दरनु कैक। जाब मनै फेन बाकर थरुवक मल्लो केल कह भिरल। कैयो मनै त और थारु हेर्ना समेत सल्लाह देल। तर जोगनी ओत्रा लचकदार नै रलक वसें सब जहन फटकारके पठादिह। उह वसें अन्त सन्त बात उहीसे कुई नै बटवाए। जे जसिन कलसे फेन मै आपन छावाहन पालम बढेम व पढेम पाछ म्वार छावा मही पालघारी तुह मही गलत बात जिन सिलैहो। मै फेन आपन दाईक दुध पिलक हुईदु। तर अपसोस उ आपन दाईक दुध मजासे पिअ नै पैलक हो। तर फेन हिम्मती जन्तीम रना गुण वाटिस।

शोषित पिडित जन्ता.....उठो जागो.....२ !!!
 पञ्चायती व्यवस्था..... मुर्दाबाद.....२ !!!
 इन्कलाव.....जिन्दाबाद.....२ !!!
 शोषक सामन्त.....मुर्दाबाद.....२ !!!
 किसान मजदुर.....एक जुट हुई.....२ !!!
 बहुदलिय प्रजातन्त्र.....जिन्दाबाद.....२ !!!

अस्त अस्त नारा लगैटी गाँउ-गाँउम सागर व वाकर संग रहना गोचाली हुँक आग बढ लगल। असीन सुन्लसे पञ्चायती प्रशासन छुट देना बात नै हुईल। कैयो जान सहभागीन समर्थकन प्रहरी तुरुन्त पक्राउ करल। कडा शारीरिक यातना दीहल। एक जान ५० डण्डा खैल कौनो ६०/६०/१००/१५० सम्म तर हिम्मत नै हरल। एक जान डरलेक सब पोल खोल दीहल। उहीम अगुवा हागर हो कैक।

प्रहरी प्रशासन सी. आई. डी पुलीस साधारण पोशाकम पथेन वाट। सामर एक गाँउसे द्वासर गाँउ, उहाँसे अन्त और ठाँउ घण्टा घण्टाम ठाँउ फेरती गैलक वसें २/४ दिन सम्म खवाज वेर फेन उपाय नै लाग्के फिर्ता हुईल। तनिक दिन दाडम तहलक मच गैल। काकरकी पञ्चायती व्यवस्थाके विरुद्धम कुई फेन आवाज उठाए नै पैना ब्याला २/३ घण्टा सम्म गाँउ गाँउम नारा लगैलक सायद पहिलो नारा रहल हुई। उफे थारु विद्यार्थीनके तरफसे। थारु कलक नेपालके पिछडल जनजाती

साहस विहीन डरपोक हिनता बोध हुईनक जातीनके रुपम गन जैउ। हुईना त एकाध थारु जातीनके मनै सरकारके उपरके निकायम पुगल फेन बाट। तर हुँकही फेन ईरु खैना वारु के रुपम परिचित हुईलक जाज मिलल वाट। दारु खैना थारु त स्वयम अपनही पतन हुईठ तर थारु खैना थारु हुँक आपन पुरो समाज किहीन दबैल रठा कना कतिपय ठाँउ गाँउम व्यवहारसे प्रस्ट थेल्ल बाटी।

प्रशासन आपन समय म्याद सम्म खोजि नितो करल। पाछ स्वतह निस्क्रिय हुईल। "सर अपनेक नाँउ पुलिस कार्यालयम पल बार। अपन लघु ना ऐबी। सामर पैन्हे से स्कूलम धू गा पढैना दूनु काम कलक होसे घेरमे बोचाली हुँक सर कैक बोलैड। सगरके गुरु हितैषी मित्र, राजनैतिक चेतना ल्यान खोजना मनै समाजके उत्थान बहना मनै पञ्चायती व्यवस्था हलाई परठ कना मनै उ दिनके 'नारा' ठीक हो कैक कठ। कौनो डरपोक मनै आव जीन्दगी भर जेलम धरहीस कठ। आपन-आपन अन्दाज लगैठ।

बावा मुलक वसें सगरके टेकना क्वारा लुल जमान लागल बाटीस। काकरकी वाकर बाबा रहल ब्याला उहाँघरक मनै कुई फेन हेला कर नै पाईस। आव दाईक हांथम कुछ नै हुईस। दादु भौजाक हांथम घर बाट। आपन कमाही नै हो उह वसें पढना छोडके नोकरी खोजना पक्षम बाट। घरक आर्थिक अवस्था कम्जोर रलक होसे सकाजसेवा कर्ना भावना हुईती हुईती फेन जीवन निर्वाह घर व्यवहार होर जाई पर्ना बाट पता हुईलीस बाबा रहत सम्म त और मेर धाक रवाफ रलहीस। कहल ब्याला बाबा बिना कुछ पुछल मागल अनुसार खर्च पादार उह वसें २/४ जान पाछ लगल रहोस। हुईना फेन बरल आगी सब जान तपना चहठ बुतल आगी के तापो। मनै फेन तनिक उपरि गैलक सबकुछ रलक देखलसे यी फलाना ठिस्काना म्वार यी नाता उ नाता कहना चलन व ट यदी वाकर दुःख समस्या रहहोस कलसे कुई पुछबो नै करो। वमके पहील सारा बिद्यार्थी और जेफे डग्रीमफ देखलसे सागरजी नमस्कार कैके हाँठ मिलैना मनैय हन घरम पुषवेर त जन्नी फेन नै पतेईना होग १स।

काकरकी बिना कमाहीक थरुवा हन जन्नी फेय मजा मन्ना सवाल नैहो ।

आपन थरुवासे आज रात भर बतोईम व मनके सब वेदना पोखम कना जोगनीक विचार बाटीस । अस्त सोचाई कैयो पाली मनम रखल रह तर सागर उह गाँउक डगर आके चलजाए । आपन जन्नीसे भत कर्ना फेय उहीह समस्या रलहीस काकरको पुलीस प्रशासन मौका पैलसे जहाँ फेय गिरफ्तार कर्ना पुर्जी कतल रहीस । तर विचारी जोगनीह का थॉहा कैयो पाली संझ्या रात पारके ऐना सांझके खाना खैना २/४ जान गोचालीन फे बंग रना रातारात अन्त चला जैना देखके जोगनी हैरान रह । हैरान हुईनक कारण कमाही धमाही नै कर्ना, मनैत आतके भातके-खवैना कैक वाकर थरुवक बतकोही घरम जन्नीह सुनैलक वस ।

मस्तरुवन हन स्कूलम पढाए ब्याला मास्टरजी गुरुजा के मान त मिल-ठा । तर और अहा आफोस जैसिन पैसा कमाही नै हुईलक बात सब जहन थाहा बात कौनो बजारके गाँउम ट्यूसन पढाके तनिक घेर पैसा कमा दरही तर भन्सार, भूमिसुधार, मालपोत अस्त अस्त और फेय सरकारी कर्मचारी जसीन मस्तरुवनके तलब सुबिधा नै रहठीन । कतिपय स्कूजम त महिनाके साधारण तलब फेय नै पाके चन्दा लिख पर्ना अवस्था बाट ।

आब सागर स्कूलम पढेठा घरम घेर पैसा दी । घरक अवस्था मजा बनैवो यी लेबी उ लेबी असीन बनैबी उईसीन बनैबी कना योजना घरम कर्लवाट । कहल अनुसार पैसा नै पैलक बिषयम घरक दादु भौजी रीसाई ल बाट । सागरके दुःख स्वयम उहीह थाहा बाटीस । सागर ना जुवा ब्यालठ ना रण्डोवाजी करठ ना भट्टीम दारू पीअ जईठ । आखीर पैसा कहाँ करैठा कैक कठ । मस्तरुवा हुकन प्रशस्त तलब नै मिलठन कना हुकन थाहाँ नै हुईन ।

दाङ्ग, बाँके, वदिवा, कैलाली लगायत कैयो ठाउँके स्कूलम पढाइवेर फेय घरक लाग घर पैसा दाह नै स्याकल हों सागर उह वस आपन छावा छाई जन्नीह खुशी नै पार स्याकल हो यी अवस्था देखके अनुभव करके स्वयंम दुःख फेय बाट । हम्न जसिन मनै दुःख पैना कारण सामाजिक

वनावट आर्थिक असमानता, शोषणके प्रकृया हो कैक बुझल वाट सागर तर विवश बाट । सामाजिक राजनैतिक आर्थिक क्रान्ति कर पर्ना वाट कना फेय उहीह थाहा हो सेकल बाटीस । तर कहटोको कौनो परिवर्तन हुइना वाला त नै हो । उहवसे आव "घन, धैर्य, मित्र और नारा" आफन काल पर विचारक चाही" कना श्लोक मन मन गुन गुनैटी पली रहन बाट । "आब चोलो विस्तारम काकर ध्यावर पुट-पुटाईटो हो, लड्का सब निदा गैल" यी बान मुन्के झस्याड हुईल सागर । आब चुपचाप सुत चल गैल ।

"नाच करो रें लरका बगियाम डेरा" कना गीत गैती एक हुल छोट बरल लरका उत्तर दक्षिन दौर-दौरके ब्यालत । हम्न यीहां कौन अवस्था म परल बाटी, दुःख बाट की सुख बाट हुकन कुछ जान नैहुइटीन । हुइना फेय मनैत जौन बिषयम जान नै रहठ उ बिषयके का चिन्ता । गाँउ घर-म पिछरल ठाउँम बैठल किसानन व कर्मयन हन कौनो सरकार आई गैल के चुनाव जीतल नै जीतल कुछ मतलब नै रठान । सरसफाई सम्बन्धी जान नै हुईलक मनैत फोहर पानासे रोग लागी कना का पता जान गुन नै जानल मनैत भूत-बोकसीनाया लागी कना कौनो शखा नै करठ । उह प्रकारसे यी सुकुम्वासी क्षेत्रक गाँउक अन्जान बच्चनहन फेय हमार गाँउ-म घरम पुलिस आके शोप्राम आगी लगल बाट हम्न आमक बगियाम शरण लिहल बाटी कना जान नै हुईटीन ।

दाडसे बुढान गैलसे सस्ता जग्गा मिलठा अन्त प्रशस्त उब्जनी हुईठा । खैना-पीना बैठना कौनो चिजके हर्जा नै हों । जत्रा कमाए सेको जग्गा प्रशस्त मिलठा, बनवा ध्यार बात । जत्रा भैस, गोरु पालो दुःख भात खा-ओ । कौनो चिजके दारा नै हो । अस्त अस्त बातले आकर्षित होंके जरम भूमी छोरके ऐलक थार बस्तीम बन अतिक्रमन के बहानासे सरकारी आदेशम शोप्रोम आगी लगैना, हुलनके पालन मुर्गा छेग्रा जवरजस्तो लैजैना, मजा मजा चेली बेटीन बलात्कार कर्ना कुकर्म समेत भोगल बा । तर का करना श्रम कैक खैना भीख माग नैचहना थार किसानन छार वास कपासके लाग छट पटाईल बाट, विवश हुइल बाट । कै पालो कौनो

नेता म्वार पाछ लागो मै जग्गा बना दीहम कठ पैसा खैठ आपन मतलब केल पुरा करठ । सुकुम्बासी हुक पुनः झोप्रा बनाके आपन बाच्चन दाना पानी पुगाए जाई बेर घरम आगी लगैलक बात सुन्थ । हाथम बन्दुक रलसे घरम आगी लगैना सिपाहीन घाँए-घाँए मार ऐना जसिन रीस उठोन तर रिसके कुछ कर सेकना शक्ति नै हुईलक बर्से मै मन्तर जन्तु त सब जहन सतम कै देतु कठ । अस्त-अस्त क्रन्दन रोदन तउपन बिरह गफ गाफ कर्ना बिहान हुईलसे कुई झोप्रा बनैना कुई बकौलके सल्लाह लिह जैना । दिनभर तेतनके बकौलके बेगारी कर्ना भूल्ल प्याठ घर आके मारक पानी पिके रात कटैना उ बस्तिक मनैनके दिनचर्चा बनल बाटीन ।

सुकुम्बासी गाँउम आज फेन आगी लगैल । बस घर स्वाहा हुईल । पुरुषन बाँघके जेलम लै गैल । बहुत दुःख पैल बाट जाली फताहा हुँक लागके प्रशासन हन चुकली चाकडी कैक सुकुम्बासीन दुःख देलवाट । जीम्दार कठ हुँ सब थारू जग्गा पारदरही त हमार कमैया कमलहरी के बनी । उह बर्से वस्ती बैठ नै देना चाही कहल बाट ।

“हम्र गाँउ भरीक मनै मिनक अददाम जाई हमार थरुवन छोडो । हमार छोट-छोट लडका परका बाट बरखा बुदीक दिनहो हमन के पाली का खैबी छोर देओ कवा । काल लरका परका बुकु वान-वानके जाई गाँउ भरीक जन्नी लरका बुढाईल मनै केल गाँउम बाट । सांझके बरघ-रान घर जुतौला बात न । नाही हमन सरकारी मनै मार दरहो कसिक जाई सेकबी हो बगालमसे एक जान डरपोक जन्नी कहल । अरी तै कत्रा डरैना मनै हुईल । मारो त मार दारी घरवार जरा मेकल बाट खेती चहा स्वाकल । अस्त सरकार त बाट हम्र जसिन गरीब गुरूवा जहाँ गैलसे फेन अस्त दुःख हो । दहाजरन पापान पाप फेन नै लगतान कैहया परवाती भर सब मुजैडी त हम्र थारुनके सुख हुई ।

बी सब दुःख सुख के बातम जोगती फेय सहभागी बाट । आपन जर्म-लक घरम असिन दुःख नै जन्लक मनै बाना-परत-परत यहीसे फय ध्यार दुःख आई स्याकी कहना सोचम बाट । सब जन्नीन सम्झाई लागल बा “अरी तुह का हिम्मत हरठो हम्र जवान जवान मनै आग जैबो हमार

लरका सहेरहो हम्र बात बतोईबी अददाम हम्र जैबी । जोगनीक बातम सब जान हाँम हाँ मिलैबी काल बिहान सरकारी अददाम आपन-आपन थरुवन छुटाए जैना सल्लाह कैक रूखक छाहीम जरल झोप्रीक लग्गु नानमुन नगट भूअर निदाई लका क्वारम लेके फातल झेंद्रा बिछाके टूतल गोंद्रीम सुत चल जैठ । चाहे मघी जसीन मस आंग भर छोंपल रलसे फेन दीनभर ठकाईल जन्नी लरका कुछ वेरीक लाग स्वर्गीय आनन्द लेके सुखी जीवनके कल्पना सपना हेरती नोदा जैठ । बातावरण एकदम शान्त उत्तर दक्षिण कुकरावन केल भू-भू धवाङ्ग-धवाङ्ग हाँउ-हाँउ करती बाट मानो कुकुर केल यी गाँउके रक्षा कर्ना कामम इमान्दारीता देखैल बाट उ गाँउ प्रति दया माया हुईल प्राणी मध्ये सबसे बढी कुकरावनके दायित्व बाटीन । मनैरूपी सरकारी कुकुर त दानवोय रूप लेक ऐठ बिना हिचकि-ताहत घरम आगी लगैथ निर्दयी तरीका से किसानन शारारिक यातना देठ । आपन देशके सुकुम्बासी हुकन सौतेली व्यवहार केलनाहीं पशुगत व्यवहार करठ मौजमस्ती करठ खैथ पीथ चल जैथ ।

हमार थारुन छोडो हमार थारुन छोडो । हमार बाल वच्चन के पाली हम्र मेहनत कैक खैना जात हुईतो अस्त हल्ला करती एक हुल जन्न नके बगाल अदालत भीतर पैठल । अददक मनैन का कहना हो कसोक बोलना हो गाँउक जन्नीन का पता । नेपाली भाषा जन्नी नै बुझना थारु भाषा पहाडी नै बुझना अक्क न बक्क परल । मुम्कीलसे भीड हन नियन्-त्रण कैके कागज पत्रके सुरक्षा कैक कुछ बात बुझना मनैन कर्मचारी हुक बुझाई लगल कि तुहनके थारु अदालतम नै हुईत कैक । वन मुद्दा वन विभाग लगल बाट । हमार हाँथसे हुईना काम नै हो कलक होंबे व दिन फे खस्कलक होंसे आजके कार्यक्रम बन्द कैक सब जन्नी आपन सुकुम्बासी गाँउम फिर्ता हुईल डग्रोम मै त कुसीं ढला देनु जे हो अहो मै त तेबुल गिसा देनु मै त पिउन हन ढकेल देनु गोर गीर करतह राँरीक लरका । अहो तुह त ओसोक करलो त मही त जातोक डर लागल रह आव लड़ी लेक मार दारी कना जसीन लागल रह । कसोक भगम कल रनहु डरपोक जन्नी कहल अस्त अस्त कुई आपन बहादुरो कुई डर छेरुवा वात

करती उह उजारल गांउम मारक पानी पिअ पुठ । चाहे जत्रा गांउम दुःख रलसे फेन संझ्याक बरघरान घर जुटना गीत गैना बात कर्ना इवाँक चल्लसे नाच कछना रमाईलो कर्ना धन सम्पत्तीक रक्षा कर नै पर्ना होँसे हो की का हो एक किसिमके आनन्दीत जीवन जसीन मन्ल रहल जोगनी लगायत गाँउ भरीक जन्नीनके बगाल हुक ।

छाई छावा कुपोषणके कारण कमजोर बाट मै फे कमजोर बाटु । रोग सहभर हमार संग संधारी बन्के साथ देल बाट । दवाई कर्ना चार आना नै हो । असीन बाट आपन सागरके आँखीम आँस झलकैती जोगनी दुःख देखाईल तर उ सब सुन्ना सागर समब नै पाईल । माया मोह सब त्याग कैक आपन छाई छावनके अवस्था माया करती स्ती रती छोरके के जान कहाँ हो चल गैल । लरकनके बाबा जेलम बाटीन कना बात कुछ समयके बादम जोगनी सुनल । तुन्हक बाबा जेलबाट कठ कहाँ बाट थाहा नै हो कैक आपन बचन जोगनी सुफलैना कोशिस करठ । हमार बाबा कहाँ बाट कना विषयम छाई छावा आपन दाईसे पुच्छ । तर हुकनके दाई तुन्हक बाबा ऐही कना विश्वास देठीन । उह मार लरका गाँउके लडकन संग रमा — रमाके हस्ती खेलती रमैटी समय वितैती बाट । बिना बाबक लरका और जहनसे हिच किचाकें डराक हेला करावा पाके गाँउम बाट । कौनो दिन ऐही कैके छाई-छावनके मन बुझैल बाटीन । कौनो मनै आके कठ तुहाँर थरुवा तुहीन छोरना चाहल बाट । और जन्ना ले दारल बाट विश्वासिलो मनै आके जोगना हन कठ तुँ महाँ कर्याँ बाटोँ उह वसँ तुहीन नै मन परैठ । तर जोगनी तर एकदीन पक्क फेय भ्यात हुई कैक जौन सुख अवस्थाम फेय दायँ वायँ कर्ना नै चलन बाट सुन्के सब जान असफल होके पाछ परल बाट ।

एक दिन एक जान शुभ-चिन्तक आके थारू भाषम गीत बनाके गैना प्रयास कर्ल इहँर गैनु पीहा बिना हुईनु अनमन । कहलक मतलब रहीन तुहार थरुवा घर नै हुईट । तुहीनजहोर गँलसे फेय सुनसान लगना अवस्था बाट । कसाक जिवन निर्वाह करल बाटो कहाँ खोजल रह । तर जोगनी उही हन मार्मिक तरीकासे जबाफ देली—“साँझ भईल दिन बुरुवा रे गोह-

के घर लनल गाई भैसी सब बँधल, नाच खेल करल । हरे गाई भैसी मै लसरी बँधबु रे पिहा मोर कैस बधबु, बचनक बाँधल पोहा मोर घररे घुमी ऐही । अर्थात म्वार व लरकन मैया हुइहीन व बास्तबम महीसे मैया हुहीन कलसे कौनो ना कौनो दिन ऐही कना विश्वास बाट ।

आज जोगनीक छाई मुगैलीस कैक गाँउक मनै सोचत बाट । काकरकी एक जान जन्ती मनै हुःहुँ आवाज कैक रुई लागत बाट । जोगनाक छाई कर्ना बेराम रह । साँद बक लरका मुनस कना सोचत बाट । और घरक थरुवा मेहरुवा जगडा खनक आपन जन्तीह थरुवा २/४ थप्पर मर्लक कारणसे रूषाबासी चलल रह । बिचारो जोगनीह मनै कर्लसेफे प्रकृती कही की भगनबाँ कही हेला नै करीस । जत्रा हेला कर्ल रलह वाकर जेधिनिया थरुवाक कमाहा नै देखक मै आपन कमाहाले आपन लरकन पाल सेकम कैक हिम्मत कर्ल रह बिचारो जोगनी ।

जेलम रलक बाबा कैह्या ऐही हमन ब्वारा लेही हमन मजासे खैना पीना पढैना करही कैक सोचना अवस्था नै रलसे फेन आपन बाबा देखना आशा लेल बाट छाई छावन बचनक बाँधल पिहवा घररे घुमी ऐही कना भावनाले आशाबादी बन्के बैठल बातो जोगनी ठीक उह समयम आपन गीचालीनके साथम गोचालीक इवाला आपन जेल जीवनके ओढना विछौना ड्यारा डण्डी सर-सामान गुरी मिठैया लेक अंगनम आईल सागरह देखके जोगनी हर्ष बिभोर हुईलो ।

आज दुनु लरका आपन दाहीन बाँउ जाँघम बैथल बाट । बाबक संग दश्यक टिक्री हाथम लेक खैती खुशी बाट । जोउरा टिका घल्ल बाट जाँरक इवार पीक बाबा बड्कीमार गैती बातीन । गाँउम इवाँड इवाँड मन्दरा बजाके गुरुवन सु-सु करती बाट बरकीमारके गीतम पुरुब जलम मै करनु धरम सैरो धरम मोर आई गईल । पांच पुत मोर हुईल एक ठाँउ गैती बाट सब जान खुशी बाट जोगनी फेन बचनक बाँधल पिहवा घररे घुमी ऐल कना सजना गुनगुनैती आज बरा खुशी बाट । वाकर जीउ कत्रा हलुक बाटीस, कना स्वयम जोगनीह थाहाँ नै हुईस । सेमरक टुप्पासे फेन उप्पर उडतोबाट उडती बाट । जुग

जुगैती बाट अन्धार हन अजरार परटी बाट । संसारहन अजरार परना
 बिचार लेक । चेतनाके दीया बरना एकलहे नाही सब मनैन डगरा देखैना
 लक्ष्य लेक आग बढना उद्देश्य बाटीस जोगनीक कत्रा सम्म सफल हुई
 पाछक बात हो । जोगनीक अजरार सागरके संसार महासागर
 पुगना लक्ष्य लेती घाम जार वर्षा नै मन्के आग बढल वाट जुग
 जुगैमी अंधारम पुगही जौन वाँउम अन्याय अत्याचार नै रही ।
 बर्गीविहीन समाज रही छ्वाक वास कगासके लाग कुई नै रूई ।
 सब जान काम करही काम अनुसार दाम । ठगना ठगना पैना
 मनै नै रहही स्वर्ग जसैन संसार रही । उह गाँउ के खोजीम
 संघर्ष करती आग बढना चहल बाती जोगनी आषन जुग जुगना
 बानी लेक । (सीकसारी म फेत वचनक वाँझल पीहा मोर घररे
 घुमो ऐल.....कना धुन सुन मिल लागल बात ।

(समाप्त)

दुःखी जरमकरम

एम. बी. चौधरी, निरासी

लाठीकोईली गा. वि. स. ९

बुदबुदी सुखत

- १) दुखी मयरिक कोखिमजरम भाबीलिखल करम ।
 खाएलगाए नहिपुगनामहिलागथ सरम ॥
 - २) सबसे दुखी मैवाटु सुखी संसार ।
 कौनभाबी महिदेहि सुखक अरती अन्सार ॥
 - ३) अवहित महि लागी गैल मनम दिक्दारी ।
 एक दिन वनी जैबु मगना भिखारी ॥
 - ४) चिरिफाटी गैलमन चुहिगैल आँस ।
 दुःखीन सुखदेव बनाओ एकनास ॥
 - ५) दुःखक दिक्दारीले रातदिन सताईथ ।
 मजम्बार कर्जांमुटु काखर वथाईथ ॥
 - ६) खालीप्यात आँखीम आँस दुःखीन्के विलौना ।
 दुःखीन्के आँस विलौना केक्रोत खेलौना ॥
 - ७) दुःखलेक आँसवह्य भुखाईल खालीप्यात ।
 कहायाहुई आँससुखीना भगनवासे भ्याँत ॥
 - ८) आँखीक बनिम्वार आँसले सितार्डल ।
 कहीयापुगी मदुःखीक मनले चितार्डल ॥
- दुःखीनके कहाँबा टेकना, विसनि ठाउँ ।
 समझवोत वथाईलागथ जीमनक घाउ ॥

जातिय स्वशासन व थारू मुक्तिके प्रश्न

❦ प्रिय गोचाली हुँके, ❦

विस्वके सर्वोच्च प्राकृतिक सौन्दर्यतासे भरल राज्य नेपाल बहुजाती बहुभाषिक बहुसांस्कृतिक तथा बहुधार्मिक विविधातासे भरल अढंसामन्ति, एवं अर्धऔपनिवेशिक मुलुक हो । यहाँ एक ओर हिन्दुवर्णश्रम के तथाकृतिक उच्च अभिजातके नामसे चिन्ह जैना ब्राम्हण, क्षेत्री (ठाकुरी, शाह, व राणा) दलितमे दमाई, कामी, गाईने, बादी व साकी बँठठा कलसे दोसर ओर मंगोल मुलके करिब ७०% जनजातिके नाममे चिन्ह जैना थारू मगर, गुरूङ्ग, तामाङ, खस; नेवार, राई, लिम्बु, शेर्पा, थकाली, दुन्त्याल, मुनुवार, थामी, जिरेल, होल्मो; मेचे कोचे; धिमाल, हायु, चेवाङ, झांगर, राउते; राजि; आदि, जात हुँके बँठनाके साथ साथ भोटे, तराईम बंगाली शिख जैना व मुस्लिम जातिके मने बसोवास करथ । यी जात मध्ये हजारौ वर्ष पहिले से तराई व भिन्न मधेसम घना रूपम बसोवास करती ऐलक सरल ईमान्दार एवं परिश्रमी आदि बासीक नाममे चिन्ह जैना हमर थारू फे एक हुईती । हमर मुख्य पेशा खेती (कृषि) हो ।

आजके तराई कालह ऐसिन नै रह । अगम व अन्कन्टार जंगल हिस्सक जंगली जीप जन्तु औलो र हैजा जैसिन महामारी रोकके भिषण प्रकोपके साथ साथ तमाम खोजिम एवं कठिन परिस्थितिसे सामना करती तराई व भित्री मधेसके जमिन आवाद कँके उर्वर फाँट निर्माण कँके हरा भरा व मानव वस्ती योग्य बनैना हमरे हुईती मने यकर श्रेय हमन नै हो प्रा. पूर्ब कालम दांग चितवन व मोरंग लगायत तीन ठाँउम थारूके थारू राज्य रह यी बात तमाम बुढा विद्वान हुकन लंग सुन जाईथ एकर साथ साथ किताबम देखे व पढे लागठ ।

मने विदम्बना येसिन गौरव मय ईतिहास बोकल हमर थारू हुक नाते आपन राज्य हो नाते खस राज्य द्वारा संरक्षित भाषा संस्कृति

धर्म व सामाजिक सुरक्षा । हमर थारू जाति हुक आज बिकासके समान अवसर नै पैना केल कहाँ हो । बरू सक्कु क्षेत्रमन शोषण दमन व उत्पिदन भोगक परता हजारौ वर्षसे हमर पुर्खा हुक रगत व पसिना चुहाक बनाईल यी मुलुक आज हमर लाग बिरानो व पराई असक हुईलबा । कलसे दुसर ओर ईहाँक शोषक वर्ग व हुकनके भाई भरदार व दलालनके निमित्त विरता व गुठ बनल बा । राज्यके समति श्रोत, साधन व सुविधा सक्कु हुकनके बपौति बनल बा । हजारौ वर्षसे यहाँ बसोबास करती ऐलक हमर थारू भर चरम गरिबी अशिक्षा बेरोजगारी व रोगसे तरपती बाती । मुलुक हे उवेर बनूईया उ पौरखी हुकनक घर परिवार भूमिहिन सुकुम्बासी वनैनेके साथ साथ विश्वम कहुफे नै घुमलक कमैया कमलहरी गयावार भँसवार तथा ओरगानी (वधुवा मजदुर) प्रथा भित्तर लाखौके संख्याम बन्ना बिबस बाती । जेकर कारण हमर थारूके अधिकांश परिवार हुक शोषित पिडित अपहेलित व अशिक्षित केल नै कि पशु सरह नरकिय जीवन बचना बाध्य बाती आभिन फे हमर आर्थिक औपत हमर भूमिहिन म ३३% गरिब म ४०% मध्यम १८% धनिम कुल ५% के दरसे भेटैठी एकरह आधारसे हमर थारूके आर्थिक अवस्था कसिन बा कना बात जे फे सहजसे अनुमान लगाई सेकठ ।

आजके भित्ति मधेस वतराई मिलाक हमर थारूके बसोबास करीव २५ जिल्ला मन रहल देखाईठ यी मध्ये दांड, बर्दिया, कैलाली कञ्चनपुर, नवलपरासी, बारा, सप्तरी व सुनसरी कैख ८ जिल्लामन थारूके बहुमत समेत देखाईठ कलसे अन्य जिल्लाके ठोस स्थितिके हकम भर खोज व अनुसन्धानके बिषय बनल बा । यी सक्कु जिल्लाके मिलाक हमर कुन जनसंख्या करिब १२ लाख रहल बात सरकारी लगायत तमाम तथ्यांक देखैलसे फे यथार्थम यीहेमे धेर हुई सेकना बात ह ईन्कार कर नै सेकजाई । यी जिल्ला व जनसंख्या अन्तरगत पनी हमर थारू बिबेपत दंगाली, देशौरी, देउबुरिया, राना, कठरिया

कुचिला, दनुवाश, व राजवंशी आदी मुख्यमे पर्ना के साथ-साथ दहित उलटहवा, कडग्रहवा, अडग्रहवा व चिलरहवा आदी लगायतके थर गोश भर सयो के संख्या मन परठी ।

भाषाके क्षेत्र ओर हेर्ना हो कलसे हमार थारुनके मुख्य भाषामे डंगीरा, मैथली व राना रहल देखवठा कलसे उपभाषा भाषिक रूपमे भोजपुरी, अवधि, देशोरी, देउखुरिया, व कठरीया रहल बा । तर यी सक्कु भाषा व उपभाषा मध्य प्रमुख भाषा भर डंगाली हों का- करकी हमार थारुनके उदगम स्थलने डांग हो तबमार भाषक विका- स फे डांगसे शुरू हुईल देखपरठ । जाहाँ सम मैथली, भोजपुरी, अवधी आदी लगायतके भाषा व उपभाषक बाइ बा उ डांगसे और जिल्ला व ठाउँमे बसाई सरक गेल समयमे और जातनक स-संगम जाक हुकनसे प्रभावित वाध्यत्मक स्थिति हुईलक पाछ आपन भाषक महत्व नै बूझक परिवर्तन हुईल देख परठ । खै चाहज्या ह्वाए हजारी वर्षसे आपन अलग भाषा संस्कृतिके ईतिहास कायम करती आईल हमार थारु जतीनक भाषा संस्कृति तथा धर्म हन केल उपेक्षित नै कैंक लोप कर्ना दुःप्रयास फे कैंजाईता । हिन्दु धर्म, संस्कृति व ख स भाषा ह के ल विशेष अधिकार देक अन्य जातिके भाषा संस्कृति व धर्म ह लोप करैटी लैजिना अद्यवधि जारी पली बा । देशके संविधान, कानून व प्रशासनमे समेत हिन्दु राज्य बनैटी रना खस भाषा हिन्दु धर्म संस्कृति ह के ल विशेषाधिकार देना जसिन बात याकर मजा पुष्टि कल बा । अन्य जनजाती हसक हमार थारु जातिनक फे आपन आत्मप्रयास परिणाम स्वरूप बवल भाषा साहित्य तथा संस्कृति व धर्म फे राज्यके उपेक्षात्मक एवं नकारात्मक नितिके कारण क्रमशः लोप हुईता । तर एकथो खुशीके बात का बा कलसे यी उच्च जातके शासक वर्ग हुक हमार भाषा व साहित्य ह जत्रा लोप कर्ना चहलसे फे हमार भाषा व साहित्य संरक्षण व सम्बर्धनके लाग भर हमार समाज निरन्तर लागी परत्र कना बाट गोंचाली मुक्तिक डगर थारु मुक्ति साप्ताहिक, थारु संस्कृति, नेउता आदी लगायतके १८/१६

ठो हमार भाषामे निकरल वार्षिक एवं साप्ताहिक पत्र पत्रिका प्रमाणित करले बा । सांस्कृतिक दृष्टिसे फे हमरे थारु सिधा, साढा, सरल स्वभाव, सामुहीक एवं आत्म नीर्भर संस्कार व संस्कृति असभ्य व जंगनी बनल बा ऐसिन किसिमके मनो वैज्ञानिक युद्ध सयो वर्षसे आर्य हिन्दु वर्गके शासक वर्ग हुक्रे थारु लगयता सक्कु जनाति हुकन उपर जारी करले वात आजके युगमे आके फे हिन्दु वादि वर्ग श्रम जात प्रठा मन बिचमे छोट बडा उच्च व निचके भित्ता उठैले वात आज फे हमरे थारु जात हुकन समेत छुवा छुट जसिन असमाजिक व्यवहार कैंना पाछ नै परल हुइटी यद्यपि कौनो फे जाती हुक्रे आपन भाषा, धर्म व संस्कृति बिना रोकटोक स्वतन्त्र प्रकारसे प्रयोग करे पैना मौलिक अधिकार हो । मने अपसोच यहाँक शासक वर्ग हुक्रे अन्य जात जातिके संस्कृति व भाषा व संस्कृतिहे बेवास्त करती हिन्दु संस्कृति व खस भाषा ले किलहक प्रदान कैंके बताँ । यिहे हिन्दुवादी शासक वर्ग हुकनके सवसे भारी सम्प्रदायिक व अन्धवा- रिताके रूप हो । तबमारे ऐसिन सकिन व सम्प्रदायिक सोचके अन्त्य कैंके सक्कु जात जातिक बोली भाषा व संस्कृतिहे समान अबसर प्रदान कैंना मेरके सम्बिधान व कानूनके व्यवस्था हुई पठा । तब किल कौनो फेन जात जातिके धर्म व संस्कृति फेलना व फस्तैना अवसर मिलनक साथ साथ प्रत्येक नेपाली नागरीक हुकनक बीच सम्मुनत, सुमधुर व सुदृढ सम्बन्ध कायम हुई सेकी ।

शिक्षक क्षेत्र हेरे वेर फेन हमार अवस्था जर-जर व कहाली लागदो विलगठ २१ औ शताब्दीके संघारमें टेक्ना खोजलक हमार समाज आज के हमार आपने भाषामे अध्ययन अध्यापन कैंनासे बच्चिक किल नै की गरिबि व बेरोजगारीके कारण खस भाषामे फेन पढना लिखना नै पाइल हुइटाँ । आजके अवस्थामे आके फेन हमरे थारुनके कुल जनसंख्या के करिब ६% किल साक्षर पाइल विलगठ । यकर मुल कारण आपन भाषामे पढाइ नै हुइना खस भाषामे किल पढाइ हुइना आर्थिक रूपमे विपन्न हुइना शासक वर्ग यो भाषा प्रति उदासिन हुइना आदि जैसिन



बात काम कैले वा जेकर परिणाम आज फे देशके अन्य जाति जनजाति के तुलनामे हमरे थारू जाति सबसे अशिक्षित अपहेलित व पाई पर्ना के साथ साथ अपेक्षित व पिडित जीवन बचना बाध्य बाती ।

राजनैतिक अवस्था के हमार ठिक बस्तहे बिलगठ । वर्तमान हिन्दु राज्य सत्ता तिकना भोंटके ईकाई बालके आज फे हमरे थारू हुकन ठोस रूपमे कौना राजनैतिक अधिकार नै हो एक आध हमार जातिन से वर्तमान केन्द्रिय सत्ता व स्थानिय सत्ता के उच्च निकाय मे कुछ व्यक्ति पुगल बिलगल के फे हुके प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपमे हिन्दु अहंकारवादी शासक वर्गनके अन्ध भक्त व गुजाम बनाईल बताँ व बनल बताँ । तसर्थ हमार जातिके मुक्तिके प्रतिनिधित्व हुँकनसे हुईना विरवास कौ नो हालतमे लेहे नै सेकजाई ।

करिब ७/८ सय वर्ष पहिले मुस्लिम हुँकन संगके धार्मिक लडाईमे पराजित हो के आत्म रक्षाके लाग भारत से नेपाल पैठना सफल हुईलक हिन्दु बणोभम आर्य मुजके तयाकथित उच्च जात हुँकन शुरूमे हमार राज्य छिन्ना सफल हुईलौं । पाछे क्रमश भाषा धर्म सस्कृतिमे समेत अतिक्रयण करती कालान्तरमे आकुर तिर परती आधुनिक नेपाल राणाकाल, राजतन्त्रात्मक संसदिय व्यवस्था निरकुश पञ्चायत हुईती हालके संसदिय व्यवस्थामे फे पतक पतक सरकार परिवर्तन मे कौनो अन्तर आईल नै हो । ज्यूके ज्यू वा आज फेन व्यवस्थापिक कार्यपालिका सरकारी एव गैरसरकारी सक्कु क्षेत्रमे कार्य हिन्दु केकचिय उच्च जात हुकनक एकाधिकार व कायमे वा । दोसर ओर हमरे थारू लगायत अन्य सक्कु जन जाति हुँके अपेक्षित व हेलाहा बाती ।

उक्त तथ्यसे कां स्पष्ट हुईत कलसे मध्य कलमे प्रवेश करल हिन्दु धर्मावलम्बी उच्च जाति हुँकन द्वारा शुरू हुईलक जातिय उत्पिदन काल क्रमके विकास सो जन जन मुदुठ एव सगठित रूपमे बढेटी लैगिला जौन अभिन सम कायमे वा । आज फे हिन्दु उच्च जाति के ब्रमहाण क्षेत्री (शाह, ठकुरी, राणा) नै मुख्यतः शोषक एव उत्पिदक बनल बताँ कलसे अन्य जाति जन जाति हुँके जिम्मे हमरे थारू फे परठी शोषित व

उत्पिदित वमल बाटी यि २ बिचके सामाजिक अन्तरविरोध नेपाली समाजके जातिय अन्तरविरोध हो कलसे दोसर शब्दम बागिय अन्तरविरोध के हो । यि अर्थमे नेपालम जातिय अन्तरविरोध ह ठिक ढंगसे नै प्रकत सम हमर थारू लगायत कौनो फे जन जाती मुक्ति पाई नै सेकब ।

तबमार आव जातिय समस्या ह हुक करक लाग कौन डगर जाईपरी ? कौन डगर जाईवेर हमार चाहना वमोजिमके मुक्ति सम्भव हुई ? का सामाजिक एव धार्मिक सुधारसे वा भाषा तथा साहित्यक उत्थान व बिकास के वात से केल हमार समाज मुक्ति पाई सेकी ? कौनो हालसम्म पाई नै सेकजाई । यद्यपी सामान्य सुधारके काम भर नै हुई कैक कह नै सेकजाई तर पूर्ण मुक्तिके भर आशा कर नै सेकजाई । उक्त बातके ठोस निर्णय म नै पुगत सम्म हमर कौनो हालत म आघ बढ नै सेकब । तसर्थ हमार जातीय समस्या हल कर्ना ठोस मार्ग (डगर) बनैही परथ । काकर कि आजके युग राष्ट्र मुक्तिके आन्दोलनके युग हो दोसर शब्द मन जातीय मुक्ति आन्दोलन के हो । आज विश्वके अधिकांश देशमन यी व ऊ रूपम जबर जस्त राष्ट्रिय मुक्ति आन्दोलन के रहर उठल बिलगल । विश्वमें चलती रलक राष्ट्रिय तथा जातीय मुक्ति आन्दोलन मध्ये कुछ ठाउँम स्पष्ट विशाबोध सहित साकारात्मक रूपम आघबढत बिलगठ कलसे तमाम आन्दोलन दिशाबिहीन होक जतिलव भिषण सम्प्रादायिक दाङ्गमे कस्तीरलक व यी वा ऊ रूपमे सामन्तवाद व साम्राज्यवादके गोत बन्दी रलक बिलगठ । तसर्थ जातीय व राष्ट्रिय मुक्ति आन्दोलनके नामम हुईती रलक विश्व घटना क्रमक यी साकारात्मक व नाकारात्मक दुनु पक्षके गम्भिर अध्ययन व संलेपन करती नेपाली जातीय मुक्ति आन्दोलन ह हमर सचेत बनही परना बिलगठ काकरकी हमर सक्कुहुकन पता नैलक बा हो की नेपाल के अर्धसामन्त तथा अर्धऔपनिवेशिक मुलक हो । तबमार यहाँक प्रत्येक उत्पिदनके कारक तत्व करलक यहाँके अर्धसामन्त तथा अर्धऔपनिवेशिक संरचना हो । यी संरचना ह टिकाईक लाग व नेपालम रजाई चमाई राखकलाग भारतीय विस्तारवाद से लेक अमेरिकन साम्राज्यवाद सम्म लागल बात । यिह कारण हो की यहाँक राजनैतिक परिवर्तन तथा सरकार परिवर्तन म विस्तारवादी तथा साम्राज्य

बादी हुकनक हात पलि बा । राणा कालसे आज समके व्यवस्थामें फे जत्रा सरकार परिवर्तन हुईल उ सककु विस्तारबादी एवं साम्राज्यबादी हुकनके ईशारामे बनल बन्ती बात व यी संरचना रहत सम हुकनक ईशारामे बनती रही तवमारे यी बुजुवा सत्तामे आस्था कैना जे फे सत्ता बाहिर रहेबेर जौन बात हे मजा कठां उह बात सत्तामें जाके नै मजा कठां । तवमारे जातिय मुक्ति आन्दोलन अन्तत बिस्तारवाद एवं साम्राज्यवाद विरुद्धके आन्दोलन बने पठ ।

हमार आन्दोलन बिखण्डनके लाग नै होके बरू मजबुत एवं सुदृढ राष्ट्रिय एकताके लाग हो । ऐसिक हेरबेर आभिन समके जातिय व राष्ट्रिय मुक्ति आन्दोलनके अनुभव काबात स्पष्ट पारत करत कलेशे यी आन्दोलन प्रत्यक्ष व परोक्ष ढंग से बगिय आन्दोलन व बगिय सत्ता से सम्बन्धि रहल । हमार देशमे जातिय मुक्ति आन्दोलनके दिशा निर्धारण आत्म निर्णयके अधिकार स्वीकार करती स्वशासनके डगर हुईती आगे बढे परना बिलगठ । अतः जातिय मुक्ति आन्दोलनके अबधारण सामान्तवाद, विस्तारवाद एवं साम्राज्यवाद विरोधी आन्दोलनके दिशा हुई परथ ।

उपसंहार

यी सककु बिषय वस्तुके अध्ययनसे स्पष्ट बात का बिलगठ कलसे हमार थारु हुकनके पुर्ण मुक्ति नाते खाली भाषा व साहित्यके बातसे हुईसेकी ना केवल सामाजिक एवं धार्मिक सुधारके नातासे नाते शैक्षिक एवं आर्थिक के बातसे वस्तुके नाते बिशुद्ध जातिय संघर्षसे हुई नाते आत्म निर्णयके अधिकारके बाहिर रहल जातिय स्वशासन से । तसर्थ थारु लगायत अन्य सककु जनजाति हुकनक समस्या तब किल समाधान हुई जब हमरे देशी तथा विदेशी दुश्मन हुकनके विरुद्ध सम्पूर्ण शोषित पिडित थारु जनजाति एक जुट होके आत्म निर्णयके अधिकार हे स्वीकार करती जातिय स्वशासनके डगरसे आघ बढती बगिय आन्दोलन व बगिय सत्ता सगं एकक होक आघ बढती ।

नोट:- २०५५ वैशाख २ गते थारु भाषा तथ साहित्य उत्थान मञ्च (नेपाल) द्वारा बर्दिया गुलरिमान आयोजित थारु भाषी भेलाम प्रस्तुत कार्य पत्र ।

दाङको थारु भाषा र साहित्यको छोटो चिनारी

महेश चौधरी, दाङ

हात्रो देश नेपाल क्षेत्रफलमा सानो मुलुक भएतापनि यसको घरातलमा बहुरूपता भएकोले यहाँ आदि कालदेखि वातावरण अनुसार विभिन्न परदेशमा भन्दा भिन्दै आकार रहन सहन भेष भूषा र भाषा भाषी भएका मानिसहरूको बसोबास भएको पाईन्छ । थारु जाति अनादि कालदेखि जङ्गली शेर, हात्ती भालु सर्प र अनेकानेक जङ्गली जनावरहरू एवं अनेक प्राकृतिक सकस्टहरूका साथै विकट औलोसग संघर्ष गर्दै पूर्व मेची देखि पश्चिम महाकाली सम्म तराई भित्री मदेशका घनघोर जङ्गललाई फाँडो देशका यी भागहरूलाई अत्यधिक उर्वरा मात्र होईन नेपालकै अन्न भकारीमा परिणतगर्ने गौरव थारु समुदाय लाई प्राप्त छ । थारु हरूको आफ्नो छुट्टै भाषा, संस्कृति र जातिय इतिहास भएकोले आजसम्म यो एउटा छुट्टै थारु जाति को रूपमा चिनिदै आएको छ । नेपालमा मात्र होइन थारु हरू नेपाल-भारत सीमाना क्षेत्रमा पूर्व जात-पाइगुडो देखि पश्चिम कुमाउँ भावरसम्म बसोबास गरेको पाईन्छ । दाङ उपत्यकामा थारु जाति प्राचीन समय देखि बसोबास गर्दै आएका छन् । N. R. Bensee को मतानुसार दाङमा नवभाषाण युगका केही पुरातात्विक महत्वका बस्तुहरू पाईएकोले यस भेकमा पाषाण युगदेखि बसोबास भएको देखिन्छ । यस प्रकार करीब २ लाख वर्ष पहिले देखि थारु जाति यस उपत्यकामा बसोबास गरेको कुरा थाहा हुन्छ । D. Seddon ले पनि नेपालमा थारु जाति ३ लाख वर्ष पहिले देखि बसोबास गरेको कुरा उल्लेख गरेका छन् यस्तै दाङका थारु राजा दगीशारणको कथालाई महाभारतको कथासग जोडने गरिन्छ । यस प्रकार यो जाजि दाङमा प्राचान समय देखि बसोबास गर्दै आएको जातिको रूपमा चिनिन्छ ।

दाङ जिल्ला दाङ र देउखरी गरी दुई उपत्यका मिलेर बनेको छ । नेपालका अन्य उपत्यका झैं यी उपत्यकाहरू पहिले पानो पानो ले

भरिएका थिए । पछि यहाँ भएको पानी सुकेर जाँदा दाङ र देउखुरी रमणीय उपत्यका हरू वन भएको कुरा थाहा हुन्छ । यी उपत्यकाहरूमा अधिराज्य ब्यापो औलो उन्मुलन हुनु भन्दा पहिले औलोको प्रकोप मानिने भएकोले यसलाई कालाबन्जार पनि भन्ने गर्दथे । यी उपत्यकामा औलोको प्रकोप रहेको हुँदा यहाँ उत्तर दक्षिणको प्रभाव कम परेको हुदा यहाँ

N. R. Beneree & sharwa T. L. Neolithie, tovs from Nepal & sikkin Avcieif Nepal, No Ix P. 53 – 58

थारू भाषा र संस्कृति संरक्षित अवस्थामा रहेको पाईन्छ । दाङ उपत्यका भन्दा देउखुरी उपत्यकामा थारूहरूको भाषा र संस्कृति संग बढी रूपमा प्रभावित रहेको पाईन्छ । तर दाङ को थारू भाषा र संस्कृति पनि यसको प्रभावबाट बचित छ भन्न खोजेको पनि होईन । Hawilton ले दाङ राज्यको सबभन्दा उर्वर र समथर जग्गा तुल्सिपुर अवध नवावहरूको अधीनमा रहेको कुरा उल्लेख गरेका छन् । यसैले यहाँको थारू भाषा पनि अवधी भाषाको प्रभाव क्षेत्रमा रहेको पाईन्छ ।
— दाङको थारू भाषामा प्राकृत भाषाका शब्दहरू पनि प्रशस्त रूपमा पाईन्छन् । नेपाली भाषाबाट लोप हुन थालेका केही प्राचीन शब्दहरू यस भाषामा सुरक्षित छन् । जस्तै बहोरीया, आगो चन्दवा ।

दाङको थारू भाषाले नेपाली तथा संस्कृत भाषाको पुराना शब्दलाई जिवन्त राखेको छ किनकी नेपालको प्रगतिहासिक कालमा नेपालको कुनै भाग (किरात र गोपाल वंश) कालमा किरात भाषाको महत्व रहन सक्तछ तर आज उपलब्ध समस्त ऐतिहासिक प्रमाणको आधारमा प्राचीनतम ऐतिहासिक समयदेखि संस्कृत साहित्य जो हाम्रो देशको प्राचीनतम साहित्य रहेको बुझिन्छ । त्यसैले यहाँको थारू भाषामा पनि संस्कृत भाषाको प्रभाव पनु स्वाभाविक कुरा हो ।

प्राचीन समयमा थारू भाषा लाई एउटा आफ्नै स्वर, ध्वनि र शब्दले गद-अलग अस्तित्वगुण भाषामा रहेको कल्पना गरेतापनि आज यसमा

मैथिली भोजपुरी र अवधी भाषाका ध्वनी, ध्वनी-समूह, वर्ण संयोग, अक्षर, शब्दरूप, वाक्य विन्यास आदि विभिन्न आगन्तुक तत्व आएको पाउछौ । यस भाषामा विभिन्न भाषाका आगन्तुक तत्व आउनाका खास कारण स्तरीयताको निर्वाह र आवश्यकता परि पूर्तिका लागि त्याइएको हुनुपर्छ । हुनत संसारमा कुनै पनि भाषा यस्तो छैन जसमा कुनै न कुनै भाषाका आगन्तुक शब्दहरू नरहून । दाङका थारू भाषामा विभिन्न भाषाका भाषिक तत्वहरूको आगमनले र सम्पर्कले बेग्लै भाषिक स्थिति-को सृष्टि गरेको छ र यहाँको थारू भाषाको आफ्नै रूप हुनै बिगारेको छ । देवनागरीक लिपिमा प्रकाशीत पुस्तकहरूका प्रचलन हुनु भन्दा पहिले पाली (थारू लिपि) एउटा छुट्टै लिपि रहेको कुरा थाहा हुन्छ । तर आज यो लिपि प्रायः लोप भैसकेको अवस्थामा छ ।

२०१८ सालको जनगणना अनुसार दाङमा थारू मातृ भाषाको रूपमा बोल्ने संख्या १,२४,२६० थियो भने यो संख्या २०२८ सालमा घटेर जम्मा ७२४७५ हुन आएको छ । लगभग ४१,७८५ जना घटेको देखिन्छ । यो संख्या घटनुको खास कारण २०२३-२४ सालतिर दाङमा भएको सामन्ती थिचो-मिचोले गर्दा दाङ बाट थारू हरूको बसाई सराई बाँके, बरिया, कैलाली कन्चनपुर जिल्लामा भएको देखिन्छ । यस्तै प्राचीन समयमा दाङबाट थारूहरूको बसाई सराईको प्रमाण सुर्खेत, रूपन्देही र कपिलबस्तु जिल्लामा पनि रहेको पाईन्छ । त्यसैले थारूहरूको मूल घर कतै दाङ त होईन भनेर अडकल लगाउने गरिन्छ । दङ्गाँरा थारू भाषाको प्रभाव क्षेत्र यिनै जिल्लाहरूमा पर्दछन् । २०३८ सालमा दाङमा थारू भाषीहरूको संख्या ८४,०६१ छ । थारू भाषा प्राचीन समयमा आग्नेय (Australoid) भाषा परिवारका भनितापनि हाल आर्य भाषा परिवारमा रहेको मानिन्छ । श्री सिता राम तामाङ लेख्नु हुन्छ, थारू जनजाति अष्ट्रेली (Australoid) भाषा परिवारको हो तर अब यिनीहरू आफ्नो भाषा बोल्दैनन् । पूर्वका थारूहरू मागधी भाषा बोल्छन भने पश्चिमका थारूहरू अर्धमागधी भाषा बोल्छन यिनीहरूको संस्कृति पनि अब प्राय हिन्दु नै भै सकेको छ । भारोपेली (आर्य) परिवारको थिचो मिचोमा परेर एक सय वर्ष भित्रै यो आदिम

जातिले आफनो भाषा र संकृतिलाई गुमाएको छ ।-

पिछडिएको जातिको भाषा तथा साहित्य पनि पिछडिएको अवस्थामा हुनु स्वाभाविकै हो । थारू जाति पनि पिछडिएको अवस्थामा रहेकोले यस्कौं भाषा तथा साहित्य पनि पिछडिएको अवस्थामा रहेको छ । पंचायत कालमा नेपाली भाषा बाहेक अन्य भाषा प्रति सरकारको उपेक्षित निति रहेकोले यो भाषा अज्ञसम्म पिछडिएको अवस्थामा रहनाका खास कारण हुन । यहाँका थारूहरूसँग भाषा छ बोल्नको लागी मात्र साहित्य छ त्यो पनि सीमित छ आफुमा मात्र । हामीसँग राम्रा-राम्रा लोक साहित्यहरू छन् । ती पनि छन लोप हुने अवस्थामा थारू भाषा र साहित्य पनि नेपाली भाषा अन्तरगत पर्दछ र यस भाषा साहित्यलाई पनि देशको अमूल्य सम्पत्तिको रूपमा लिनु पर्छ र यसलाई संरक्षण कार्य गर्नु पर्छ भनेर अज्ञसम्म सरकारको दृष्टि जान सकेको छैन ।

थारू भाषामा धेरै लोक साहित्य छन् ती कहिले सृजना गरियो हामीलाई थाहा छैन । यी पुराना थारू लोक साहित्यलाई कस्ले ग-यो भन्ने कुरा हामीलाई जानकारी छैन । यत्तिभरी हामीलाई थाहा छ की थारू साहित्य आजको तुलनामा पहिले यो साहित्य धेरै सम्पन्न थियो । यत्तिभरि हामीलाई जानकारी छ कि आजको थारूहरू भन्दा पहिलेका थारूहरू धेरै साहित्यकार थिए । यो कुरा हामीहरूलाई हाम्रा पुराना पुराना लोक गीतका पुस्तकहरू हेर्दा थाहा हुन आउछ ।

दाङको थारू लोक साहित्य मुख्य गरी दुई विधामा विभक्त छ - गद्य र पद्य । थारू लोक साहित्यमा गद्य नगन्य रूपमा छ । गद्य विधाका लोक साहित्य भन्दा पद्य विधाका लोक साहित्यको प्राचुर्यता पाइन्छ । गद्य लोक साहित्यमा लोक कथा उखान टुक्का तथा गाउखने कथा जस्ता लोक साहित्य पाइन्छन भने पद्य लोक साहित्यमा लोकगीत, लोकगाथा आदि पाइन्छन । लोक गीत भन्दा समुच्च या सम्पूर्ण पद्यात्मक लोक साहित्य बुझिने भएतापनि विशेष गरी लोक गीतमा बाह्रमासे अधरति-या, दिन नचवा जस्ता फुटकर गीतहरूलाई लिइएको पाइन्छ । त्यस्तै लोक गाथामा वीरगाथा महाभारत (वडका मार) कृष्ण चरित्र (सखि-

या गीत) रामायण (राम जलम) आदि वीरधारात्मक काव्यहरू पाइन्छन भने पचरा (पाटेश्वरी देवी बारे) र गुरूबाबक जलमोती (महादेव बारे) र दाल विशेष गरी देवी-देवताका वर्णनहरू अथवा भक्तिवादी र स्तुतिवादी साहित्यहरू पाइन्छन । यी बाहेक थारू लोक साहित्यमा प्रेम ब्रह्म, अति-उपदेश आदिपनि पाइन्छन । त्यसै गरी गद्य विधामा लोक कथा प्रमुख रूपमा अगि सर्दछ भने यसमा पनि शिक्षा प्रधान, नैतिकता प्रधान, बौद्धिकता तथा वीर भक्ति धाराका कथाहरू पाइन्छन । त्यसै गरी उखान टुक्कामा पनि विभिन्न अति उपदेशहरू पाइन्छन ।

यहाँका मानिसहरूको सुख दुःख हर्ष विस्मात र समाजका आर्थिक सामाजिक बिसंगतिहरू अनि विगतका विरताहरूका वर्णन र देवी देवताका वर्णन गरिएका भक्ति धाराका लोक काव्य लोक कथा किम्बदन्ति लोकोक्त या उखान टुक्का र गाँउ खाने कथा आदिका माध्यमबाट अभिव्यक्त गरेको पाइन्छ यिनै लोक साहित्यका माध्यमबाट थारू समाजमा भोग्ने परेका आर्थिक अभाव घरबास छोडेर विदेशिनु पर्दाका वेदनाहरू युवक युवतीहरूका प्रेम प्रसंग-हरू, उनीहरूका लवाई खवाई र रहन-सहन तथा वीर च रत्र अनि देवी देवताका वर्णनहरू बारे जान्न सकिन्छ । जिवन र जगतका विभिन्न पक्षमा छुन सक्नु लोक साहित्यको विशेषता हो र थारू लोक साहित्यले पनि यहाँका मानिसहरूको जिवन र जगतका विभिन्न पक्षलाई आत्मसात गरेको छ । त्यसैले यहाँका लोक साहित्यमा पनि युवा युवतीका अभिलाषा अयन्तोष प्रेमोल्ला अनि वृद्ध भएपछि मानव मनमा जागृत हुने भक्ति र वितृष्णा तथा दार्शनिकता आदि सम्पूर्ण कुराहरू मुख रन भएका पाइन्छ अनि लोक साहित्यका वर्गबाट चरित्र गतिशीलता मौखिक परम्परा सनातनद्वारा रचिएका सिंगो युगको प्रतिनिधित्व समाजको राम्रो तरा-स्रोको यथार्थ वर्णन मनोरञ्जन तथा कल्पनाको प्रावल्यता जस्ता विशेषताहरूलाई थारू लोक साहित्यले अगालेको पाइन्छ ।

थारू लोक साहित्यमा गद्यको भन्दा पद्यात्मक लोक साहित्यको प्राचुर्यता पाइन्छ । पद्यलयात्मक हुनाले एकजना देखि लिएर समूहमा पनि गाउन

सजिलो र बढी मनोरञ्जक तथा प्रभाव कारी हुनाले यसको प्राचुर्यता भएको हुन सक्छ । लोक साहित्यका गद्य बिद्या एकलै प्रयोग हुनाले उक्त लोक साहित्यका अभिव्यक्तिका लागि त्यति सजिलैसंग वातावरण मिल्न नसक्ने हुदा यसको प्रचलनमा केही कमी भएको हुनु पर्दछ । दाङको थारु साहित्यमा पद्यात्मक लोक साहित्य निम्न छन ।

- | | | |
|--------------------------|-------------------------|---------------------|
| १) गुरु बाबक जलमौतो | २) वडकी मार | ३) सखिया गीत |
| ४) राम जलम | ५) सुन्दरी माधौ | ६) कनौटो |
| ७) कट घोरी | ८) मांगर | ९) झुमरा गीत |
| १०) गोरिया गीत | ११) सजना | १२) मैना |
| १३) पचरा | १४) होरीमा गाउने गीत | १५) दुलाहा दिहेना |
| १६) बच्चा फकाउने गीत | १७) धमार | १८) बनगात्वा |
| १९) उरगोट | २०) सिग्रु | २१) लाखी |
| २२) साची | २३) उदासी | २४) बलाहा झुलना गीत |
| २५) राती पहरमा गाउने गीत | २६) माघमा गाउने गीत | २७) त्रिरहन |
| २८) बारमासा | २९) दाल (भूत मर्ना गीत) | ३०) ओर्ती |

✻ १ गुरु बाबक जलमौतो ✻

गुरु बाबक जलमौतो थारु भाषामा पद्यमा लेखिएको प्राचीनतम लोक साहित्य हो । यो गीत छोकरी तथा झुमरा नाचमा गाईन्छ । यो गीत थारु साहित्यमा सब भन्दा प्राचीन साहित्यको रूपमा लिन सकिन्छ । यसमा थारु जातिको धार्मिक इतिहास लुकेको छ र यसमा हाँफ्रो पृथ्वीको सृष्टि बारे आध्यात्मिक ढगले बणन गरिएको छ । यो धरतीमा कलौयुग प्रवेश गर्दा पहिले कुहिरौले ढाकियो । थल थले रूपमा पृथ्वीको सृष्टि भयो । पछि धेरै प्रयासबाट दुधे केचुवा (गडेउला) ले मिरती भवन (पातालपुरी) बाट माटो चोरेर ल्याएपछि थल थले रूपमा रहेको पृथ्वीलाई स्थल हामा परिवर्तन गर्न सक्षम भएका कुर यो पुस्तक हेर्दा थाहा हुन्छ ।

थारु जातिको धर्म केहो भन्ने विषय अझसम्म खोजको विषयको

रूपमा छ । यस पुस्तकलाई हेर्दा थाहा हुन्छ कि दाङका थारु जाति शिव पुजक हुन । यहाँका थारु समाजमा जुन रूपमा महादेव र पाबंती लाई पुज्दछन र मान्दछन त्यो रूपमा अरु देवतालाई सायबै मान्दछन । हुनत आजभोलि अन्य जातिहरूको सम्पर्कले गर्दा अन्य देवताहरूलाई पनि मान्ने र पुज्ने प्रचलन रहेको छ । पुजा आज गदा महादेव पाबंतीको आराधना गर्ने प्रचलन यहाँका थारु समाजमा चल्दै आएको छ । यस पुस्तकमा गुरुबाबा (महादेव) को जन्म देखि लिएर महादेव पाबंतीको मन्सी फुलवार चित्ररंग फुलवार, र धन फुलवारमा गएर विभिन्न भेषमा बिहार गरेको वर्णन गरिएको छ । धियरी पाबंती भगवानलाई चहाउन को लागी विभिन्न किसिमको जंगलमा विभिन्न कि समका फुलहरू संकलन गर्छिन । यसरी संकलन गर्दै जाँदा जब उनी भङ्गोल बनमा पुग्छन तब प्रश्रव बंदनाले छटपटाएर एकछिन बिनाक लिदा त्यहा सातबता अण्डा पाँछिन । यी सात अण्डा मध्ये एउटा अण्डा पूर्व फाँकदा पुर्बी भवानी देवताको सृष्टि हुन्छ । यस्तै एउटा अण्डा पच्छिम फ्याकदा पच्छिम देवी, उत्तर हरिकविलास दखिन फ्याकदा शिऊजगन्नाथ, आकाश ठुयाकदा सूर्यदेव पाताल फ्याकदा वासुकिनाग र बांकी एक अण्डा आफ्नो अचला (पोल्टो) मा लुकाउँदा अचलही भवानीको रूपमा देवताहरूले जनम लिन्छन । यो देवताहरूलाई अद्यापि यहाँका थारु समाजमा पुज्ने प्रचलन छ । प्रत्येक सान यहाँका थारु समाजमा दशको महान चाडको सु अवसरमा घर-घर कुभिण्डो पूज्ने प्रचलन छ । यो पूज्नाका खास कारण महादेवकी जन्म कुभिण्डोमा भएको थियो भन्ने धारणा छ । यस्तै यहाँका थारु समाजमा प्रत्येक घरको डिहुरार (उत्तर पूर्वको कोठा) पाता मेदीमा झोरिया सौरा, छिटनी राख्ने धुप कुच्ने र धुप गुरूवाको घरबाट ल्याउने प्रचलन बारे यस पुस्तकलाई गहिरिएर हेर्दा थाहा हुन सक्छ । त्यसैले यी सबै प्रमाणको आधारमा यस ग्रन्थमा हाँफ्रो धेरै पुरानो इतिहास लुकेको थाहा हुन्छ ।

यस पुस्तकलाई २०१६ सालमा सबै प्रथम संक्षिप्त रूपमा श्री वद्री नरहरि नाथ योगी र रूप लाल महता ज्युले प्रकाशन गर्नु भएको थियो

पछि २०३६ सालमा श्री महेश चौधरी ज्युले गुरु वाबक जलमोती भाग १ ७८६ श्लोकमा र भाग २ ४५० पेजमा गरी जम्मा १२३६ श्लोकमा प्रकाशन गर्नु भएको छ ।

बडकी मार (महाभारत)

बडकी मार थारु भाषामा पद्यमा लेखिएको महाकाव्य हो । यसमा महाभारतको कथाको वर्णन शुद्ध तथा सरल भाषामा चित्रण गरिएको छ । यो गीत खास गरेर वर्षा समाप्त भएपछि दशैँ सम्म गाउने चलन छ यस गीत लाई दुई ग्रुप गरेर आलो पालो सामूहिक रूपमा गाउने चलन छ । यो गीतलाई कस्ले गायो र कहिले देखि हाम्रो समाजमा गाउने प्रचलन रहेको छ भन्ने बारे हामीलाई केही थाहा हुन सकेको छैन यस पुस्तकलाई पढेर जसलेपनि थारु साहित्यको रस स्वादन गर्न सक्छ र पाण्डवको महिमा गुनगान गाउन सक्छ १२ वर्ष वनबास मध्ये एक वर्ष बिराट राजा कहाँ गुप्तवास रहेको अवसरमा बिराट राजाको मात्तिएको जैमल हात्ति धान खाई रहेको थियो । भीमलाई यहाँ चौकीदारको रूपमा चित्रण गरिएको छ । भीम हात्तिलाई धपाउन जाँदा उनी भन्छन् यो राजाको बाँखोलाई यहाँबाट म कसरी धपाउ ? यो बाँखोलाई एक डल्ला हिकारै धपाउदा बाँखो मर्न सक्छ र बाँखो नधपाउदा राजा रिसाउनु हुन्छ उता बाँखो भने धानको बाला मात्रै खाईरहेको छ । जस्तै

“राजक छेगरी खेत भला खावै ।

मोर बुता छेगरी हाँकी नही जा ।

एक ढेला सरबु छेगारया मरिजा ।

बाल चह्नी-चह्नी खावै खेत ॥

दश हजार हात्ति बराबर बल भएको भीमको लागि बिराट राजा को जैमल हात्ति एउटा बाँखो त के एउटा भुसुना बराबर लाग्नु स्वाभाविक हो । यस्तै यस पुस्तकको एक ठाउँमा कौरव र पाण्डवको तुलना बहुत सरल थारु भाषामा गरिएको छ ।

सिंहसंग सिया जबलाग ।

नाघक हेरल पहुनी पघार ।

कतनौ सियार उठो मनसाय ।

तबहु नै पुगही सिंह कही जोर ॥

यो गीतबाट थाहा हुन्छ कि जस्तै सिंहको दाजोमा एउटा स्याल कहिलेपनि पुग्न सक्तैन त्यस्तै कौरवहरू जति छलकपट गरेता पनि पाण्डवको दाजोमा उनीहरू कहिलेपनि पुग्न सक्तैनन् किनभने कौरव भनेको स्याल हुन र पाण्डव भनेको सिंह हुन ।

बडकी मार (महाभारत) गीत हिन्दी तथा नेपाली भाषामा १८ पर्वमा लेखिएको छ तर दाडको थारु भाषामा यो गीत जम्मा १२ पर्वमा मात्र लेखिएको छ ।

हुनत यो पुस्तक छोटकरीमा २०१६ सालमा योगी श्री बद्री नर हरि नाथ रुपलाल महती ज्युले सर्वप्रथम प्रकाशनमा ल्याउनु भएको थियो पछि श्री महेश चौधरी तथा श्री सीताराम चौधरी ज्यु मार्फत २०३८ सालमा विस्तृत रूपमा पुनः प्रकाशन गरिएको छ ।

❀ (३) माँगर ❀

कहिले रात हुन्छ कहिले भोर विहान कहिले विहान त कहिले दिन यस्तै कहिले जाडो मौसम आउछ त कहिले गर्मी कहिले वर्षा त कहिले सुक्खा । प्रकृतिको परिवर्तनको चक्र सधैं यस्तै चलि रहन्छ । दाडको थारु समाजमा पनि प्रकृतिको यस्तो सुनौलो परिवर्तन अनुसार विभिन्न समयमा विभिन्न मौसममा अथवा प्रकृतिको परिवर्तन अनुसार थरि-थरिका गीत गाउने प्रचलन परम्परागत रूपमा चल्दै आएको छ । प्रत्येक गीत र त्यसको भाषापनि फरक-फरक रूपमा रहेको छ ।

दाडका थारु जातिको मुख्य पेशा कृषि भएकोले माघ फाल्गुन अर्थात फुसंतको समयमा भोज विवाह गर्ने प्रचलन छ । माँगर गीत विवाहमा गाईने गीत हो । माँगरको अर्थ माग्नु हो । थारु समाजमा विवाहको लगन लगनमा यहि गीत गाईन्छ । यसमा हिउटीको गीत राजा दसरथ, राम, लक्ष्मन, आदिको बारेमा मागर गीत गाईएको छ र पहर-पहरमा फरक-फरक गीत गाईन्छ । यो गीत धेरै बिरहले परिपूर्ण छ । वचपन देखि आफ्ना आमा बुवाको घरमा जन्म लिएका महिलाहरूको लागि त्यो घर उनीहरूको लागि हुदैन । त्यो घरत उनहरूको लागि

सयान हुने अबस्था सम्मको लागि मात्र रहन्छ । एक दिन उनीहरूको आफ्नो जन्मेको घर - आफ्ना आमा बाबु, भाई, बहिनी सधैँ - हासि खेलेको संग सहेलिहरू संग विछोडीनु पर्छ र अन्जान ठाउँमा अन्जान मानिस संग नाता जोनु पर्छ । र जीवन बिताउनु पर्छ । सुःख-दुःख भोग्नु पर्छ । यस्तो विछोडको समयमा कस्को मन रसातल न होला । यस गीतमा यस्तै बिरहको गीतले भरिएको छ । जस्तै ...

‘हर कही हरल्यार बाबा’

दुरू देश ससुरा ।

मरि जंबु बाबा,

भुख - पियास ॥

यस गीत लाई सर्व प्रथम २०२८ सालमा श्री महेश चौधरीले प्रकाशन गर्नु भएको थियो र साथै २०४० सालमा यस गीतलाई पुनः प्रकाशन गर्नु भएको छ ।

❀ (४) झुमरा गीत ❀

झुमरा गीत यहाँको थारु समाजमा परम्परा - गत रूपले नाच्दै आएको झुमरा नाच हो गीत हो । यस गीतमा धेरै जसो मात्रा हिन्दी, अबधी भाषाको प्रभाव रहेको छ । यसमा कतै राम, लक्ष्मण, सीता तथा अन्य भगवानको गनगान गाईएको पाईन्छ भने कतै हास्य रस पनि यसमा समावेश छ । कतै लोभने विछोड भएको अवस्थामा जुन किसिमको वेदना ले स्त्रीलाई छुटपट्टिनु पर्छ त्यस प्रकारको दर्दनाक आत्मालाई छुने साहित्य पाईन्छ । समाष्टिहरूमा यस गीतमा प्रमालाप बिरह र भाक्ति रसले भरिभराउछ ।

यो गीत २०३१ सालमा सर्व प्रथम प्रकाशन कार्य भएको थियो । बनारसबाट प्रकाशीत पुस्तक ल्याउदा खेरि सम्पूर्ण पुस्तक सरकारले जफत गरेको थियो र पुस्तक ल्याउनु हुने श्री कालि राम चौधरी ज्यु

लाई जल चलान गरेको थियो र शिक्षक पदबाट पनि बरखास्त गरेको थियो । बस्को पुनः प्रकाशन श्री महेश चौधरी ज्युले २०३६ सालमा गर्नु भयो ।

❀ (५) सखिया गीत ❀

सखिया गीत सखिया नाच नाच्दा गाईने गीत हो । वर्षाको खेती पाती समाप्त भएपछि गाँउ भरिका युवतीहरू गाँउको महतौको आँगनमा साँझको खाना खाएर यो गीत गाँउदै दशैँ सम्म सधैँ नाच्ने गर्दछन् । यस गीतमा कृष्ण चरित्रबारे चित्रण गरिएको छ । यस गीतको सुरुवात श्री कृष्ण जन्माष्टमीमा गरिन्छ । श्री कृष्ण जन्माष्टमीमा गाईने यस गीतको लय र सखिया नाचको यस गीतको लय फरक छ । यस गीतमा पृथ्वी को सृष्टि भएपछि सर्वप्रथम कुश (झार) को सृष्टि भयो त्यसपछि अन्य चिजको सृष्टि भएको बारे वर्णन गरिएको छ । यस गीतको प्रकाशन थारु कल्याण कारिणा समित, शाखा दाङ ले २०२४/२५ तिर गरेको थियो ।

सजना र मैना गीत यहाँका युवक र युवतीहरूले बन पाखा पधेरा खेतमा काम गर्दा परदेश जाँदा लामो स्वरमा एकलै अथवा सामुहिक स्वरमा गाईने प्रचलन छ । यस गीतको संकलन कार्य श्री महेश चौधरी ज्युले गर्नु भएको छ र हाल यो गीतहरू अप्रकाशित रूपमा रहेको छन् ।

दाङ चौधेरामा स्थित रतन नाथ मन्दिर र भारत उत्तर प्रदेशको पाटनमा स्थित पाटेश्वरी देवीलाई थारुहरूले आफ्नो कुलदेवताको रूपमा पुज्ने गर्दछन् । यसैले पाटेश्वरी देवीको नाममा ‘पचरा’ गीतको रचना गरिएको छ । जस्तै ...

‘जाईत रनहु उई पुरु पाटन रे’

बीच भै गैल साँझ, केरुना झपक दिन बुरल रे ।

अहे पाटन बैठल बरी दुर, मैत कहु पाटन यहर बसुरे ॥

राम जलम (रामायण) सुन्दरी माधौ कौंटी, कटघोरी, गोरिया होरिमा गाँउने गीत दुलहा टिहैना गीत, धमार, बनगीत्वा, डरगोट, सिंगु लाखी, साँची, उदासी, बलाहा झुलना, राती पहरमा गाउने गीत माघमा गाउने गीत, बिरहन र बरमासा आदि गीतहरू यहाँका प्राचीन लोक साहित्यको रूपमा चिनिन्छन्।

गद्यात्मक लोक साहित्य

१. गाउँ खाने कथाहरू

थारु भाषामा यसलाई 'कन्ही' भन्दछन्। अशोज कार्तिक महिना मा साँझको खाना खाएर मकै छुडाउदा यो गाँउ खाने कथाहरू भन्ने गरिन्छ।

(क) बाबा र मै टाङ्गल बाटु धुर ससुर मै गारल बाटु।

उत्तर-भाँटा

(ख) खट खटण्टी, धर्ती फुटण्टी

दश गोर, तिन मुण्टी, संग चलण्टी।

उत्तर-हलो जोति रहेको मान्छे।

(ग) करीया प्यूरोक उज्जर सूत।

उ० भैसीको दुध।

२. उखान तुक्काहरू

(क) वाम भगाक पुच्छता सवर्ना।

(उ० काम बिगारेर पशवाताप गर्ने)

(ख) हर देक हरवाही लग्ना।

(उ० आफ्नो सामान अरुलाई दिएर फेरि त्यहि चिज अरु सग माङ्गने)

(ग) वापसे पूत जानो फाण्डाले बझा पानी।

(उ० बुवा भन्दा छोरो जान्ने)

(घ) एक लकरो वरीका, एक राम करीका।

(उ० एकलाले केहि गर्न सक्तेन)

लोक कथाहरू

(१) हिटवक बत्कोही।

(२) सतल सिंह राजक बत्कोही।

(३) नौ लाख गैया, छपन्न हजार बच्चु, बाह भैन च-हैना।

(४) काली सिंह राजा।

(५) गवल सिंह राजा।

(६) घनपट गुरुवक बत्कोही।

(७) गुरुमा कोट पहाड भहरैना बत्कोही।

(८) सोनकेसी रानी।

(९) बेलौटी रानी।

(१०) फुलौटी रानी।

(१२) पस रजवा

(११) राजीरो।

(१३) डेङ् रजवा

बच्चा सुताउने गीत

होलो रंगी रि होलो रंगी रि

त्वार दाई-बाबा चिचि भाटी लेह गैरल

तै मास मास खैब्या, त्वार दाई-बाबा हार हार खैही रि।

बाच्चा खेलाउने गीत

बाबु अङ्गना चहर्ले, कौरी भेतैले।

कौरी तै केही देबे, घसकटव देहम।

घसकटवा तोही कादे, घाँस दे।

घाँस तै केही देवे, भैसिन्यह देहम।

भैसिन्या तोही का दी, दुध दो।

दुध तै केही देबे बिलरिय देहम।

बिलरिया तोही का दी, मुस्वा दो।

मुस्वा तै केहो देबे, चिल्हरिय देहम

चिल्हरिया तोही का दी, चिङ्गनि दी

चिङ्गनी तै केही देबे, तिरि पोखवाह देहम ।

तिरि पोखवा तोही का दी, तिर दी ।

तिर तै केही देबे, रजबह देहम ।

रजवा तोही का दी, घोरवा दी ।

घोरवा तै कहा बघबे, कजरिक बतवम ॥

आधुनिक काल

दाङ्को आधुनिक साहित्यको सूत्रपात खास गरेर २००७ सालको जनक्रान्ति पछि भएको भनिएता पनि यस कुराको यकिन साथ किटान गर्न गाह्रो छ । कसै-कसैले थारु भाषाको आदिकवि इसरदासलाई मानेता पनि यस कुरालाई पुष्टि गर्न सकिदैन किन भने इसरदास बारे हामिलाई कुनै जानकारी छैन र हाम्रो लोक साहित्यमा कही कतै उल्लेख पनि भएको छैन । प्राप्त सामग्रीको आधारमा यहाँका थारु साहित्यको आदिकविको रूपमा श्री बठवा थारुलाई लिन सकिन्छ । कवी श्री बठवा थारुले रचना गर्नु भएका साहित्य हरू अझ सम्म हाम्रो समाजमा जिवन्त छैन । बुढा पाकाहरूले उहाँलाई एउटा आँसु कविको रूपमा जान्ने गर्दछन् । तर वडो दःखको कुरो आज सम्म हामिले उहाँका रचनाहरूलाई सकलन गरेर प्रकाशनमा ल्याउन असमर्थ रहेका छौं । कैलाली जिल्ला बैचपुर बस्ने श्री गोबर धन दास चौधरी ज्यूले २०२६ साल मा प्रकाशीत गौचाली अंक २ मा 'बठवाके जोर्नी' शिर्षकमा उहाँको रचनालाई प्रकाशन गर्न धुटा गरे वाफत त्यस समयमा (पचायत कालमा) जेल यातना भोग्नु परेको थियो । अहिले प्रजातन्त्रको सुगौलो विहानीमा उहाँका सबै रचनाहरूलाई संकलन गरेर जन समक्ष ल्याउन आवश्यक छ । गौचाली अंक २ मा प्रकाशीत उहाँका रचना यस प्रकार छ ।

हरवा मै सौपु धरतिया रे

धरती फल पैबु ।

बिभवा मै सौपु रे धरतीया,

धरती फल पैबु ॥१॥

जानी बुझी जोत्यो भुईया रे,

राज गोरखाली ।

चाँदी लदल भुइया वाट,

पोतवा बहुत परि ॥२॥

एकसै असी पोत दिहनु रे,

जाहान लैके भगनु ।

रजवक पुनारे उजर सिंह,

पतुरी लैके गाज ॥३॥

सुगौली सन्धि भन्दा पूर्व वदिया, कैलाली र कञ्चनपुर जिल्ला भारतको अधिनमा थियो । कवि श्री बठवा थारुलाई गोरखाली राजमा घेरै दुःख कष्ट र भूमिको पोत घेरै भएकोले बसाई सरेर अर्को मुलुकमा जानुपरेको कुरा व्यक्त गर्नु भएको छ । राजाले जनताको सुख दुःखमा साथ दिनु को सट्टा ऐस आराम मोज-मस्तिमा लिन्छन अथवा राजाको छोरा उजर सिंह बेश्याहरू संग मोज-मस्तिमा जिवन व्यतित गरि रहेका छन ।

यस पछि २०१५-१६ साल तिर थारु साहित्यकारका रूपमा देखा पर्नु भयो कवि श्री जीव राज आचार्य । उहाँको रचना हो 'हम्र ओ हमार बन्वा । आफ्नो रचनामा कबिले हाम्रो समाजलाई प्राप्त हुने बन्को महत्व बारे चित्रण गर्नु भएको छ । उहाँ लेखु हुन्छ ।

“आघ जुगम धति उप्पर, बन्वा केल रह

वाघ भाल त ध्यार रहत, मनै थोर रलह ॥

थारु समाजमा भएको विमगति लाई चित्रण गर्दै यस पुस्तकको अन्तिम श्लोकमा उहाँ लेखु हुन्छ ।

‘ईहर बहर छौना, नुकाईल बोप्री बिल-या’

कब-कव आँक छौना, चवाईल अक्रा बिलरा ।

आपन छौना अपन चवाईल, कसिन बिलरावा ।

आँधर छाखाल काट खाईल अस्त दुन्या बा ॥

आर्थिक रूपमा पिछडिएको र चेतनाको दृष्टिले सुषुप्त अवस्थामा रहेका यहाँका थारू जातिलाई ब्युझाउने गरी आफ्नो अहान लिएर आउनु भयो कवि श्री नारायण प्रसाद शर्मा बर्गद्वि दाङ् । उहाँले आफ्नो रचनामा थारू समाज लाई अधि बढने प्रेरणा दिनु भएको छ । उहाँको कविता यस प्रकार छ ।

आग बढो आग बढो, आग बढना हो

हम्र फेत मनै हुईतो, आग बढना हो ॥१॥

सक्कु मनै आग गैल, हम्र पाछ हुइलि

आग बढी काम करि, नैत हम्र गैलि ॥२॥

सक्कु मनै चत्तुर हुइलि, थारू गोंगा हुइली

खैना पिना पत्ता नै हो, भुख हम्र मुली ॥३॥

आग बढो जिन डराव, लौसे ज्याज्या परि

जित्ती मुअलसक हम्र बाटी, लौसे मर परी ॥४॥

यसपछी २०२७/२८ साल देखो थारू भाषा र साहित्यको विकास मा गति आएको हामी पाउद छौ ।

२०२८ सालमा प्रकाशीत 'सन्देश' मा श्री महेश चौधरीको 'हमार साहित्य थारू साहित्य' हो । यसै विच थारू भाषा र साहित्यको संरक्षण कार्य स्वरुप सर्व प्रथम 'माँगर' लोक साहित्यको प्रकाशन श्री महेश चौधरी ज्यू ले यसै साल गर्नु भएको थियो ।

कवि स्व. श्री नेत्रलाल पौडेल (अभागो) ज्यू को प्रेरणा र सहयोग वाट २०२८ सालको महान चाड दशैको सुअवसरमा दाङ्, वेवाङ्मा दाङ्, बाँके, बर्दिया, कैलाली र कञ्चनपुरका थारू भाषा तथा साहित्य प्रेमीहरूको भलाले सर्व प्रथम थारू भाषा तथा साहित्य सुधार समिति, पाँचमाडवल नेपालको गठन गरेका थियो जसमा मुख्य हस्ती को रूपमा श्री सगुन लाल चौधरी, श्री महेश चौधरी, श्री भगवती

चौधरी, श्री टेक बहादुर चौधरी, श्री लाल बहादुर चौधरी, श्री अशोक कुमार चौधरी र श्री अरविन्द चौधरी रहनु भएको छ ।

यस समिति मार्फत सर्व प्रथम 'हमार कहाई' भन्ने अपिल छापिएको थियो जसमा थारू भाषा र साहित्यको उत्थान र विकास कार्यको लागि आह्वान गरिएको छ तथा सहयोगको अपेक्षा गरिएको छ ।

यसै समिति मार्फत सर्व प्रथम २०२८ सालमा थारू भाषामा 'गोचाली' पत्रिका को प्रकाशन गरिएको थियो जसमा प्रधान सम्पादक श्री महेश चौधरी रहनु भएको छ । यस पत्रिकाले गरिब र धनीको विचको फरकले गरिब वनेर थिचिएको र आर्थिक अवस्थाले दुरावस्था भएर छिन्न-भिन्न अवस्थामा रहेका नेपालको ज्यामी किसान, मजदुर हरू सग आफ्नो नजिकको नाता जोर्न चाहन्छ र हाँफो समाजवाट सदाको लागि सबै खालका शोषण, थिचोमिचोको समाप्ति चाहन्छ । यसैले शोषित-पिडित र समाजमा उपेक्षित रूपमा रहेका हरूमा चेतनाको स्तर अभिवृद्धि गर्न र आफ्नो अधिकार प्राप्तिको लागि संघर्ष गर्ने आफ्नो मुख्य लक्ष्य लिएको छ । र साथै अविकसित भाषा, साहित्यको विकास को लागि पत्रिका प्रकाशन लाई पनि आफ्नो लक्ष्य लिएको हो । निरकुश तानाशाही पचायती व्यवस्थाको कार्यालयमा हाँफा सहयोगीहरू लाई यस पत्रिका लाई प्रकाशन गरे-वाफत धेरै-धेरै जेल यातना भोग्नु परेको थियो । श्री सगुन लाल चौधरी ज्यू लाई कैलालीको जेलमा एक वर्ष व्यतित गर्नु परेको थियो भने तुलसी चौधरी ज्यू लाई एक महिना नेपालगंजको कारागारमा व्यतित गर्नु परेको थियो । श्री टोकाराम चौधरी, बर्दियाको नाममा वारेण्ट जारी गरिएको थियो यस पत्रिकाले आफ्नो विभिन्न बाधा व्यवधान लाई पार गरेर भए पनि २०२८ साल देखी आज सम्म गोचाली अंक ७ सम्म प्रकाशन गर्नु सफल रहेको छ । एउटा कुरा के ठोकुवा साथ भन्न सकिन्छकी यस पत्रिकाले थारू भाषा र साहित्यको महत्व लाई निश्चय पनि बढायको छ । यसैले आज अराज्यका

विभिन्न जिल्ला बाट यसै भाषामा १२-१३ पत्रिका हरू प्रकाशन भैरहेका छन् । यस भाषा साहित्यको विकासको लागि यो शुभ लक्षण हो त्यसैले यस 'गोचाली' पत्रिकाले थारू भाषा साहित्यको विकासको सूत्रपात गरेको ठहर्छ ।

यसै अवधिमा कवि लेखक कथाकार, नाटककार, तथा समालोचकको रूपमा श्री महेश चौधरी देखा पर्नु भएको छ । थारू भाषामा उहाँका विभिन्न रचना हरू प्रकाशित भैसकेका छन् । 'हमार साहित्य थारू साहित्य' थारू किसान विग्रलक कारण ओ सुधना उपाय, बिस्व के रंग मञ्चम हम्म व साम्राज्यवाद, लाउ-लाउ, भूत बहु संख्यक थारू जातिके भाषा अल्प संख्यक रूपम भादो लेखहरू हुन । थारू भाषा तथा साहित्य सुधार समिति । पश्चिमाञ्चल नेपालको नाममा निस्केका अपील हरू बड्कीमार, मांगर झुमरा छारा गुरुबावक जलमौती पुस्तकहरू दुई शब्दमा वहाँको बिचारहरू र रचना हुन जुन प्रसस्त मात्रामा उल्लेख भै सकेका छन । कबितामा 'दाङ्के किसान प्रति, जिनकरो छारा, यहाँक किसान, साथी आव का कर्ना आव आ गैल जिन्दगीके डगर कमैयाके पुकार आदी यहाँका प्रकाशित रचना-हरू हुन दुई अशक एक ठक्वा, कथा र छारा गप्ती नात्व याँहका रचनामा पर्दछन ।

यसै अवधिमा अर्का प्रतिभा ह ओ सामु देखापर्नु भएकोछ एउटा लेखक र कविको रूपमा, उहाँ हुनु हुन्छ श्री भगवती चौधरी । श्री चौधरीको 'पाछे ओर' र 'थारूके वर' लेखप्रकाशन भएका छन, र उहाँका अन्य रचनाहरू विभिन्न नाम - बाट प्रकाशित भएका छन, जस्तै फूला, मानव में पुकार' र म्वार विन्ति सुधार आदी उहाँ गोचाली अंक २ को प्रधान सम्पादक पनि रह सकनु भएको छ ।

प्रीं सगुन लाल चौधरी ज्यू थारू भाषा तथा साहित्य सुधार समिति को सशक्त संगठकको रूपमा चिनिनु हुन्छ । उहाँको अथक प्रयास बाट गोचाली जीवित अवस्थामा रहेको छ । आज यो पत्रिका ७ अंक सम्म प्रकाशन हुन सक्नाको श्रय श्री सगुन जी लाई दिने पछ ।

उहाँ एउटा सशक्त लेखक र समालोचकको रूपमा चिनिनु हुन्छ । किसानके एक ऐतिहासिक झलक, (दाङ्गसे बुढान) "हम्म व हमार समाज" थारू संस्कृति "चतुर्थ पुष्पके मग मगना वास लेह वेर" थारू साहित्यके रूप रेखा र शहिद मोहन बहादुर चौधरीके छोटकरी क्रान्तिकारी जीवन परिचय उहाँका लेखहरू हुन र बिहानके अजरार मे नजर दौराई वेर उहाँको समालोचना हो ।

श्री लाल बहादुर ज्यू को 'ओ मोर दाई' र 'मै आईक लाग बाटु' दुई कबिता प्रशंसनीय छन । कवि श्री वामदेव शर्मा भमके दाङ्गका दुई कबिता गोचाली टुह व मै र गोचाली उहाँका पठनीय कबिता हरू हुन । यस्तै श्री गिरी राज शर्मा श्री लक्षमण गौतम श्री फुला राम चौधरी श्री विश्वराज शर्मा, श्री रामान चौधरी श्री टीका-राम चौधरी (बदिया) श्री कृष्ण प्रसाद चौधरी श्री पीके गोचाली श्री मोती चौधरी (दाङ्ग) श्री राम चरण चौधरी श्री गणेश चौधरी (देउखुरी) अरविन्द चौधरी श्री श्यामेश चौधरी श्री अशोक थारू श्री शेर बहादुर चौधरी (दाङ्ग) श्री जोत बहादुर अमर श्री भागा राम श्री थलिराम श्री बन्धु राम सुश्री कुमारी मिना आद ले यसै अवधिमा आफ्ना १-२ रचना प्रकाशन गरेर भएतापनि दाङ्गको थारू साहित्यमा आफ्नो नाम दर्ता गराउनु भएको छ ।

दिवंगत कवि श्री नेत्रलाल पौडेल अभागी ज्यू को मै का गीत गाउं कबिता अदी उल्लेखनीय छन । उहाँके दाङ्गका थारू भाषाको व्याकरणको रचना गर्नु भएको छ । जुन 'शन्देश' पत्रिका प्रकाशित छ ।

श्री केशर बहादुर चौधरी, बदिया (ढेलफुकनी) द्वारा रचित आजुक सजना लौव सजना यस अवधिको सर्वाधिक लोकप्रिय गीत हो । यस गीतमा कविले बर्तमान थिचो-मिचो तथा अन्याय अत्याचारको विरुद्ध संघर्षमा उत्रिनु पछ भनेर अह्वान गर्नु भएको छ । जस्तै-
" चारी बसे घेरल परबतवा रे । माझ विच जनता, उठो जनता राईफल, तरवाल लेक, फटहन से, लर ॥ "

कथाकारको रूपमा चिनिनु हुने श्री टेक बहादुर चौधरी, सिसहनिया दाङ्ग का कलम सशक्त छन् । 'पाप बत्कोही' मा उहाँले यहाँका थारु समाजमा हुने बाल विवाह बाट पर्न जाने विसंगती बारे चित्रण गर्नु भएको छ । स्कूलमा अध्ययनरत युवकहरूलाई विवाहले अध्ययन कार्यमा के कति मात्रामा व्यवधान खडा गर्दछ भन्ने बारे यस कथामा उल्लेख गरिएको छ । हाम्रो समाजमा रहेको सामाजिक कुरीति लाई हटाएर सुन्दर समाजको निर्माण गर्ने कुरामा जोड दिएको छ । यस्तै 'प्रतिज्ञा' भन्ने कथामा समाजका टाठा बाठाहरूले असहाय तथा निर्दोष व्यक्तिनाई कसरी शोषण गर्दछन् र आफ्नो स्वार्थ पूर्तिको लागि उनीहरूले हत्यागर्न पनि पछी पर्दैनन् भन्ने कुराको चित्रण यहाँ गरिएको छ ।

२०३०/३६ सालमा यहाँको थारु भाषा र साहित्यको प्रकाशनले गती लिएको हाम्रो पाउठौं । यसै अवधिमा श्री महेश चौधरी तथा श्री सिता राम चौधरी ले 'बडकीमार' (महाभारत) प्रकाशन गर्नु भयो र वक्त्रिगन रूपमा भए पनि श्री महेश चौधरीले मांगर, झुमरा, गुरु बावक् जलमौती एवत आदि प्रकाशन गरेर थारु साहित्यको सेवा गर्नु भएको छ । यसै अवधिमा थारु भाषामा सर्व प्रथम गीति नाट्यको विजारोपण भयो अथवा नाटक विधाको सुत्रपात भयो 'छारा' गीति नाट्य यहाँका थारु भाषामा लेखिएको पहिलो गीति नाट्य हो । यो नाटक देऊखुरीको थारु भाषामा लेखिएको छ । यस नाटकमा दाङ्ग जिल्लाका थारु जातिको बुढान (बाके बढिया, कैलाली, कन्चनपुर,) मा हुने बसाई सराई बारे बडो हृदय विदारक रूपमा चित्रण गरिएको छ । दाङ्गका थारु जाति बुढान तर्फ बसाई सर्नाका खास कारण Push Tectov र Pull Tactor मध्य Push Factor बाट बसाई सरेका हुन् । ६] यो नाटक को नायक साजन लाई देऊखुरीमा खान लगाउन पुग्दैन । यहाँ उस्लाई घेरै दुःख, कस्ट भोग्नु परेकोले आफ्नो श्रीमती रूपनि संग भन्छ

(५६)

६) महेश चौधरी, 'दांगा बाट बढिया धधवार गा. पं. मा थारु हरुको बसाई सराई' शोवा पत्र लान विकि तथा सामाजिक शास्त्र अध्ययन संर भूगोल विमान सन् १९७६

" न जुरे अन-धन सोनवा, नाही रे लुगरा पुरनवा । यहीरे करनिया जैबु सजनिया, बुढानके नगरिया ॥

ऊ बुढानमा सुःख आराम देख्छ । त्यहाँ जगल फडान गरेर जग्गा, धन- दौलत आर्जन गर्ने सपना देख्छ । त्यसैले यम नाटकको नायीका रूपनीको पानीले पखालेर पान न पखा लने मायाले पनि त्यसलाई रोक्न सक्दैन । त्यसैले रूपनीसंग ऊ भन्छ ।

जैबु मै बुढान नाही रहना यो ठाव ।

वही ठाऊमे सुःख आरामे जाई लेहबु विश्रामे ॥

एक रात रूपनीलाई विस्तकामा मस्त नि-

दमा सुतेको मौका छोपी झोला भिरेर आफ्ना साथीहरु संग आफ्ना सपना साकार पार्न उ बुढानतर्फ लाग्छ ।

स्मरण रहोस यस नाटकको नायक सजनले दाङ्गको दुःखमय जीवन बाट मुक्ति पाउन को लागी बुढान भाग्यै यस जिल्लाका थारुहरू २०२३-२४ सालतिर सलह झै गाउँका गाउँ बसाई सरेर बुढानतर्फ लागेका थिए । तर पछि उनीहरूले थाहा पाएकि यो त जिम्दारी बदल्ने परिपाटी मात्र हा यसरी शोषणको समाप्ती हुदैन किनभने दाङ्गमा जस्तै बुढानमा पनि जिम्दारी प्रथा, कर्मैया प्रथा र सुअम्चासी समस्या विद्यमान छ । अन्याय अत्याचार, थिचा-मिचो यथवत् रूपमा त्यहा पनि छ । त्यसैले एकदिन साजनलाई बुढानबाट आफ्नो पुरानो ठाऊ दाङ्गतिर फर्कन बाध्य हुनु पर्छ ।

यो नाटक हालसम्म दुई ठाऊमा मञ्चन भै सकेको छ । यस नाटकका कथाकार, निर्देशक रचयिता तथा प्रकाशक श्री महेश चौधरी हुनु हुन्छ र गीत रचनामा साथ दिनु हुने कवि श्री कामता प्रसाद चौधरी र श्री लिला 'गम्भिर' चौधरी हुनु हुन्छ । यस्का दृश्य ७ समावेश छन् ।

२०४४ सालमा श्री राम प्रसाद चौधरी र श्री बेझ लाल चौधरी, सिसहनिया दाङ्गले 'थारु लोक गीत नच नचवा गीत' लाई प्रकाशन गरेर यहाँको थारु साहित्यको विकासको लागि प्रशसनीय काम गर्नु भएको छ ।

(५७)

बिगत जनआन्दोलन-वृत्तत एकाएक यहाँको थारु साहित्य जगतमा केही प्रतिभाहरु देखा पर्नु भएको छ । कवि श्री मङ्गल चौधरी त्यस मध्ये एक हुनु हुन्छ । २०४७ साल 'गोचाली' अंक-६ मा प्रकाशित 'जागो रे किसनवा' उहाँको पहिलो कविता हो उहाँले यस कवितामा यहाँका किसान हरुको थियो - मिचोमा रहेको अवस्थाको चित्रण गर्नु भएको छ । २०४८ सालमा दाङ्बाट प्रकाशित भएको 'पहुरा' कविता संग्रह उहाँ द्वारा लिखित भनितापनि सबै रचना हरु उहाँका रचना अन्तर्गत पर्दैनन् । उहाँ द्वारा प्रकाशित यो कविता संग्रह जसलाई सामयिक सकलनको रूपमा लिन सकिन्छ, थारु भाषा तथा साहित्य प्रेमोहरुको लागि नयाँ वर्षको उपहारको रूपमा लिन सकिन्छ । यो पुस्तक जम्मा १२ पेजमा छापिएको छ जस्मा रचनाहरु जम्मा आठ समावेश छन् जसमध्ये 'लौअँ दियाँ बराई' र 'उठना ब्याला आमैल' भन्ने शिर्षकमा दुई कविता श्री खुशी राम पाख्रिन द्वारा रचित चितवन प्रा० लि० नारायण घाट बाट मंसीर २०४७ मा प्रकाशित 'आसुको भाकामा' भन्ने गात संग्रह बाट नेपाली भाषाबाट थारु भाषामा भाषानुवाद गरेर प्रकाशन गर्नु भएको छ र साथै त्यही पुस्तकमा प्रकाशित 'घाघ नच्चा' र 'नचनच्चा गीत' श्री महेश चौधरीद्वारा लिखित र गोचाली अंक-३ पेज मा प्रकाशित उहाँका रचनाहरु हुन् । यस रचनामा कमण्डाका वेदना बारे चित्रण गरिएको छ । स्वागत गीत, गरीवके बिलौना, जागो उठो र लाल झण्डा फहराई उहाँका रचनाहरु सिकारु रूपमा छन् । गोचाली अंक ७ मा प्रकाशित उहाँका कविता 'लह परल अछिन्क अधिकार' सशक्त छ ।

२०४७ साल तिर यहाँको थारु साहित्य जगतमा अन्य नबोदिन साहित्यकारहरु थारु साहित्यरूपी फूलबारीमा फकिने सुअबसर प्राप्त गर्नु भएको छ । कवि श्री हरि प्रसाद चौधरा जू को जीउलाई साच्चै भन्दा शोषकले खादै छ । त्यसैले उहाँ भन्नु हुन्छ ।

जन्तो देख्बो उट्करल बा ।

चिथ्री लागल लुगरा बा ॥

खेना बासी माँड बा ।

शोषक जिऊ मोर खैती बा ।

यस्तै नरेश गोचाली लाई कतिपनि सुख छैन छैन ; उहाँको जिन्दगीपनि कष्टमय छ । त्यसैले उहाँ भन्नु हुन्छ -

'सामन्ती' के काम कंक जीवन गैल,
जीवन भर एको नै सुख हुइल ।

यस्तै आ-आफना कविता लिएर आउनु हुने कविहरु आ रमण चौधरी के० पी० चौधरी ललित कुमार, टे० पी० गोची, सी० वि० गोची आदि हुनु हुन्छ । निबन्धको फाँटमा श्री भिम बहादुर गोची जे० पो० चौधरी, निम प्रसाद चौधरी, जे० पि० माची, नरेश गोची आदि हुनु हुन्छ । कथाकारको रूपमा लक्ष्मण गोची देखा पर्नु भएको छ । यसै अवधिमा थारु साहित्यमा अन्य भाषा साहित्यबाट अनुदित रचनापनि आएको पाइन्छ जसमध्ये 'गोचाली अंक-६ मा प्रकाशित श्रोमति शान्ति चौधरी द्वारा अनुदित 'रोटीक बत्कोह' कथा लाई यहाँ लिन सकिन्छ ।

यसै सालको भाद्र महिनामा प्रकाशक थारु जनकला मञ्च; दाङ्-देउखुरीले थारु भाषा तथा साहित्यको उत्थानमा एउटा अर्को ठोक्ने काम गरेको छ । रचयिताहरुको नाम अज्ञात रूपमा रहेको यस पुस्तकमा जम्मा जम्मा १४ गीतहरु समाबस छन् बीहे दुनु हाँथ होवई हमार होवई लाल झण्डा, स खय हो, यी गाउँ हमार हो, सुनो दादु सुनो भौजी, गरीवनके जिन्गी हेरो, उठो जागो जागो, यी देश हो । किसनवनके, लाल झण्डा रे फहराई, हमार सग चलो रे, उठो संघरियो, मई दिन, चलि रे चलो, कौन होवई नारीन हे हेला करइया आदि । यी सबै गीतहरु जनवादी गीतको रूपमा रहेका छन् ।

(दाङ्को) थारु भाषा तथा साहित्य बारे चर्चा गर्दा यहाँ नाम छुटन जानु हुने सम्पूर्ण साहित्यकार हरु प्रति तथा यस छोटो लेखमा मेरा केहि गल्ती, कमी, कमजोरीहरु रहन गएको भए म क्षमा प्रार्थी छौं । शोषित उत्पीडित अवस्थामा रहेका थारु भाषा तथा साहित्यको विकासमा श्री ५ को सरकारको दृष्टि जाने छ र यसै मातृ भाषामा पनी शिक्षण संस्थाहरुमा अध्ययन अध्यापन गर्ने व्यवस्था हुने छ भन्ने आशा लिएका छौं यस तथा साहित्यको विकास को लागी आफ्नो अमूल्य रचना

दी पिछड़ीएको थारू साहित्यका सेवा गर्नु हुने सम्पूर्ण आदरणीय साहित्य-
कार हरू प्रति आभार प्रकट गर्न चाहन्छौ र आगामी दिनहरूमा यस
भाषा तथा साहित्यले उत्तरोत्तर प्रगति गर्दै जाने छ भन्ने आशा लिएका
छौं ।

समाप्त

‘गीत’

श्याम चौधरी

फत्तेपुर-७ सर्रा (बाँके)

हाँसु कसीक मै रोज कसीक !

बर्षभर काम कर्ली पेटपालक लाग

घरम नै हो एक माना चाउर खाइक लाग

गलापात जीम्दार लैगैल हम्म का खैबी

पढललिखल नैहोक सद्द ठग्वा पैथी

बाँचु कसिक मै जीउँ कसीक - १

छावा कथा पढ जैबु कापी कलम लेक

छाई कथ्या मै फे जैबु झोला किताब लेक

मै अक्ल काम कथुँ जीउ सुखा सुखाक

खाए लगाए त नैपुगत कसिकधरू बचाक

कसीक छाई पढाउ, कसिक छावा पढ पठाऊ - २

छावा मंथ्या झुल्वा टोपी

छाई मंथ्या चोल्या धोती

जन्नाकथ्या कसीक इज्जत छोपी

गाउँ क मनं कथ तै बात्या लोभा

कसीक लेदीऊँ चोल्या कसोक झुल्वा टोपी - ३

गरीबि वातु नै हो जीवनक आधार

खत्रीपापी अध्याकर्तीवातु नै कर्तु बन्द व्यापार

मै मन्जवा तै पढक बन्ल वातु लगाय

मै गरीबहत कब हेरहीं नेपाल सरकार

कसिक बिताउँ रात कसिक बिताउँ दिन उजाड़ - ४

✽ प्रजातन्त्र जोगाई ✽

(लौब छोक्रा नाचक गित)

संकलन :- सुशील चौधरी 'कैली कुशुम्या'

कालिका - ३ मयूरबस्ती, बर्दिया

ए ! गोचाली युवा हुक्र आँखी खोलोना ।

अन्धकार हताईकलाग दिया बारो ना ॥ १ ॥

शोषकन्के काम कर्ना नै हुईन सकारी ।

सख्र भर कर पर्ना वईनके बेगारी ॥ २ ॥

भुखल सुखल काम कर्ना हम्म दुःखारी ।

अन्न पातले भर पर्ना आनक बखारी ॥ ३ ॥

रोजगारी कुछु नै हो नाहो नोकरी ।

अध्या खेत्वा पाईक लाग कथी चाकरी ॥ ४ ॥

खाई लगाइ नहीं पुगठ घरम रुवाबासी ।

थारू जात बजगैली जर्मक सुकुम्बासी ॥ ५ ॥

प्रजातन्त्र आइल कथ मनै याल -याल ।

तर उ बात हमन लम्था हेरो ख्याल-ख्याल ॥ ६ ॥

प्रजातन्त्र म त जनता पइथ गास बास ।

तर सरकार जनता मार्क पार्ता लास लास ॥ ७ ॥

बाँच पइना अधिकार हम्म पाइपरल ।

अन्याय व अत्याचारके अन्त्य हुइपरल ॥ ८ ॥

अधिकार मांगकन कबु नै मिलथा ।

अधिकार लिहकलाग संघर्ष कर पर्था ॥ ९ ॥

एक जुट हुईकलाग एकताके सन्देश वुइ ।

तब कैलिहक हमार स्वांचल प्रजातन्त्र सफल हुइ । १० ।

‘दाग’

कथा—जोखन रतगैयां

एक पाजर कजरयार बनवा। दोसर पाँजर सुरमी गजरिक लाल पख्वा। पख्वाक ढिकवम लहलहंती नसरी। बिच्चे बिच फटवम बडा सुग्घर गाँउ। सुग्घर १२-१५ ठो घर। अँजिम सुग्घर कजरा लगाइल हस कजरयार गाँउ। जातिके सुग्घर रह गाँउक नाउं, वस्ते सुग्घर रहे ‘सुरमा’ गाँउ। मिहिनेति, इमान्दार, मिलसार व पढल-लिखत एकठा शिक्षित रहे सुरमा गाँउ सुरमा गाँउक जतरा प्रशंसा कर-लेसे फे कम बा। जातिके कहना हो कलेसे सुरमा गाँउ सुन्दर रहे; सुग्घर रहे, शक्ति रहे, मिहिनेती रहे, मिलासार रहे। प्रगति व विकासके कोइ बाधक नै रह। रहे कलेसे गाँउक जनतन सतेना वाला गुण्डा विकासु शर्मा रहे। ऊ विकासु शर्मा जब बोले ते बखा गरज उथे। बनवक जनाबर झझक उठित। जब गाँउमे नेगेते घरक केवार बन्द हो जाए। दिया फुट जाए। चेलीबेटी लगलगा उडित। मुर्गिक अठांरा खाली हो जाए। भंकी फुटा जाए। करै सुखा जाए। समव्य मे गाँउ हिल जाए।

१०७ वर्षे एकतन्त्रिय जहानिया राणा शासनके कालके बडा हाकीम के अकेली छावा। ३० वर्षे फाशिष्ट पंचायती व्यवस्थाके महा पच, राजतन्त्रात्मक सम्सदिय व्यवस्थाके कट्टर प्रजातन्त्रवादी बिकासु शर्मा जब जाँर-दार पिके बोराई लागे तब गाँउक मनै लाट हो जैठ। कसक बहिर हो जैठा। अँखिक अँघर हो जैठा। गोरक नामर हो जैठा। कत्रा गोरु भैसिनके आंगम बराबर के क्षररा लागे! कत्रा छेगरी घेरा के ज्यान जाए! कत्रा मुर्गी-चिगनी के दैना-पखना टुटे! कत्रा परेवाके गोरा तुते! कत्रा मनै रात भर जाँगित! कत्रा चेली वेतिनके इज्जत मट्टी मे मिल जाइन! कत्रा दादु-भैएन के लाल हो जाइन। सुरमी गंजरिक लाल पख्वाके गंजरी मनक उठे। गाँउक कजरेवा बनवा गरज उठे। गाँउ भय व आतक से गैयावन हो जाए।

भाद्रके महिना। पानी झक २ झक २ परती रहे। मनै भखँर वर्षहा खेती सेक रखले रहित। गुरही तिहवार मनके हदहवाव अष्टिमकी संगे मनना मे सारा थार समाज जुटल रहित! सिता सुरमा गाँउके गरिव परिवारके रहे। ऊ फे शास-शसुर व एक छाइ सहित अष्टिमकी के सामा करना मे जुटल रहित। गाँउक पढल-लिखल युवा राम लखनके जिउक ढकढिउरी। राम लखनके मैयारी सुग्घर जिवन संगिनी रहे सिता। जातिके राम लखन आज सिताके त्याग तपस्या व सर सहयोग से राम लखन बा। राम लखन जवान युवक अभिन अध्यान करती रहे। पढाइ लिखाइ मे लगनशिल राम लखन गाँउक स्कूल से SLC पास हो के काठमाण्डौ पढे गेल रहे। सरकारी छात्रवृत्ति पाके करित चार वर्ष काठमाण्डौ पढे गेल हो गेल रहिस। BA पास करके ऐन बाचा कसके गेल रहे। एक लडकक डाइ प्राल से प्यारी सिता व बुढाइल डाइ बाबा से दुर जाइवेरिक वास्तविक पिडा आज राम लखन प्रत्यक्ष सहत रहे।

जस्तके गर २ तर २ बढी मे से पानी परती रहे वस्तके आज सिता आयन कोन्टीक दुवारी तिर बैठके गझर-गझर पुजाँ करुगाँ, छेदनाले पनहवा ढकिया विन्ती रहे। अँखी मनसे आस गिरती रहिस। सदे हसी व खुसी रहना सिता के मन आज मलिन रहिस। सदे अजराब देखना कजरयार आँख आशुं से रसाइल रहिस। सदे मनके चहकार मनै साँचके सागरमे बुरल रहे।

बद्रो महाजोर ठकंट, बिजली चमाक से चगकठ। सिता महाजोर झस्कठ। तचसे सिताके अंग्री मे छेदना से गोझजाइठ। रगत बल २ बल २ निकरे लागठ। पानी आउर जोरसे परे लागठ बयाल आउर जोर बहे लागठ।

आज अष्टिमकी के दिन। गाँउ भेरक बधिनिनयन ब जन्ती मने अष्टिमकी के ब्रत रहित। घरम हो मों रहे। बरिया, खुर्मा, अन्दिक रोती आदि आद परिकार बन्तो रहे। साँझ हुइल ते सककु बठिनियन ब जन्ती मनै लावा-लावा व सुग्घर-सुग्घर गहना-गुरिया लगाके गाँउ भरिक

सबकु जे विकाशु शर्माके घर अष्टिमकी तिके गैलां । हर साल विकाशु शर्मा के घर अष्टिमको टिकना चलन रहिन । श्री कृष्ण के सजि-सजाउ डोला बनाइल रहे । यी दिन कृष्ण के फोटो मे टिका टिकले से जन्नी आपन ठरुबक नम्मा आयु मगठा कहना अन्ध विश्वास फे बा ।

आज जब सिता सपरके, कोकन तोपके हाँतमे तथियक चाउर बरती दिया लेहले घरसे निकरल ते करता सुघवन बिलगत रहे । जब जन्निनके बगालमे नेगे ते सकुहुन से अलग विलगाए । जस्तेके कौवनके बगाल मै बकला बिलगठा । सिता कत्रा सुन्दर रहे ! कौन शब्दसे बयान करना हो कत्रा शुशिल रहे २ कौन प्रकृति से दजेना हो ।

सिता कथित कृष्ण भगवान फोटी मे टिका लगैति रहे । विकाशु रामोके घर अष्टिमकी टिकना चलन रहिन । श्री कृष्ण के साजी सजाउ डोला बनाइल रहे । यी दिन कृष्णके फोटोमे टिका टिकले से जन्नी आपन ठरुबक नम्मा आयु मगठा कहना अन्ध विश्वास फे बा ।

आज जब सिता सपरके, कोकन दोपके हाथमे तथियक चाउर, बरति दियालेहले घरसे निकरल टे कतरा सुहावन बिलगत रहे । जब जन्निनके बगाल मे नेगे टे सकुहुन से अलग विलगाए । जस्टके कौवनके बगालमे बकला बिलगठा । सिता कत्रा सुन्दर रहे ! कौन शब्दसे बयान करना हो । कत्रा शु सल रहे ! कौन प्रकृति ले दजेना हो । ...

सिता कथित कृष्ण भगवान क फोटो मे टिका लगैति रहे विकाशु शर्माके तेढ नजर सिताके मुचायम बदनमे रहे । कभु टिका लगाइ बेर हाथम लारीके बोल्टी चुरिया के खन-खन अवाज मे टे हाँसिया से सितल वास हेसक पातिर मुस्कुरैना देवरमें कभु पैरी तवालल छुगुक गोरा-मे टे कभु मौलारनेगाइमे तिकके सेक्के जाइवेर लत्सयार मुह लगैले विकाशु शर्मा वडा लाचार से कहथ, "के के वातो होइ बरकी आजकल घरे !"

'माऊ, बाबा, मै-बाबु व छोटका' छोटी जवाफ देहल रहे सिता ।

बाबुक बाबा असौ नै ऐलिस अष्टिमकी माने' सितक ओर हेरती ।

'गैला तवसे कबु ऐले नै हुइता टे; हस्ती ।

'सुन नै लागठ होइ बरकी अकेली सुतेवेर पतैना मेरक वडा लाचार से ।
'सुन लागी ? बाबु बा काहुन जिउ बुझावन" सहज रूपमे जबाफ ।

'आज रातके अष्टिमकी माने, ऐम नाहोइ बरकी तोहार घर ?' प्रश्न कथ ।

'ओही टेका मने गोहिन के राटके गीत भर गाए ऐना बा । जाँर के मिठ नै हो । बाबु के बिमार हसक बा जुरी ऐठिस । दिउरा आपन सघरियन संग किर्तनभस करे चल जैही । माउ बाबा रातधक जाँड पिही चल जैहा मस्तराने सोहीती खाइक बलाई आइल रहित । छाई-दाई किल रहब ।' अस्ते अस्ते नेगे बरबरैने आपन घरे आर चल चाइठ । विकाशु मुख्य परती हेरती रहत । मुस्कुरैती रहता सिताके बात सुनके स्थिति आपन पक्ष्यमे रलक स्पष्ट बुझठ । आजजै सिके फे सिताके बदन से खेल्ना सोचती रहठ । मौका यिहे हो ।

अन्गुत्ही बेरी जुन मतवार समुईया अरी पतुहिया तमहने मोरिनिहया आईल रही असौ फे तुही हे पछगिनीयां रोज तबही तै जैठकी नै बुदी क जुरी अईठीस । हमरे भर बुढिया-बुढुवा जाईती मस्तरान घर जाँर पिय तोर दिउरा अयन सघरियन संग कहाँ बा कहाँ नै । छाई-दाई पली रबो । गुरुवन मतवार हुईही कहल हुईही ते तोर समुरवा हे गुरुवा खोजे पठैम । बरवरैती बुढिया बुढुवा चलजैठ ।

हुईना ते विकाशु गाँउक ब्रिठिनियन के लाग पक्का शिकारी हो जिही मन लगना उही से आपन मनपदीं करना व ईज्जत मंग खेलवार कना विकाशुक दिना चार्य रहिस । प्रत्येक दिन एक न एक जनहनके ईज्जत मे दाग लगा दारे तबो फेन विकाशु व सिताके ठरुवा राम लखन ब-हुत मिलनाह सघरीया हुईलक वसे सिता व बकर परिवार हे टेज नजर हेरल नै बिलगे ।

आपन बाचा मुताबिक विकाशु अठितमकी मन्ना बहाना से सिताके घर जाँड पिण आईल । गिलासम माग चिर्ना मिलाईल दुध,हलुवा व पुरी सिताके हाथम देहती आगनु हो बरकी अष्टिमकी माने लेउ दारो आपन पहुरा । दिएक धुमिल अजरारमें दुनु जनहनके आंखी ब्रिठिन धुमिल

ओजरारमे सिताके मुह आउर चहकार देखठ सिताहे अत्ता लग्गसे आज भर्खर देखठ । जिउ ढकसे करठिस आकुर जोरसे ढड्क लग्ठीस सिताके जिउफे भट-भट करे लग्ठिस । कुछ दर लग्ठिस फे सोचठ बाबुक बाब-क संघरीया हो कुछनै कराई । बिकाशु व राम लखन यक्क संघरीया रहित संगे एक कलासम एक्क स्कूलमे पढित । बिकाशु लफडगा, दरुहा जुवारी रहे । टेस्टसे घेर पढनै सेकल बाबा ओरा गैलीस तबसे घरक जिम्मेवारी आपन काधमे ऐलक ओसे आउर पढे नै सेकल । बिकाशु जब स्कूलमें गुण्डा गिरी करे तब झतसे राम लखन वाकर जिम्मेवारी आपन माठमें लीह व जब बिकाशु गांडके चेली बेटीनके ईज्जत लुटे बलत्कार करे तब झटसे राम लखन माफी माग व एकथो गुण्डा व ब-लत्कारी हे सजाय से बचा दारे ।

डरीमें बँठल बिकाशु शर्माके आगे एक प्लेटमें मुर्गिक शिकार एक प्लेटमें अण्डा एक प्लेटमें आलु स्टीलके गिलास भर दारू पलठी मारके बिकाशु शर्मा शानसे सिताहे आनन आँखिक आगे बँठाके खैने पिये गफ झने पियत रहे । तस्ली देहती तू पियते दारू पिएम नैतो नै पिएम अरगोरी दारय । सिता पियक मन नै करठ तब्धे तूहार लाग दुध लान देहले बातु तु दुध पिय मै दारू पुलुकसे सिताके कज-यार आँखिम हेरती । हां दुध भर पिये लेम थारुनके घर दुध पियक सिहनी रहत कहती गिलासक दुध पियती महा गुी दुध वातीन काजुन मिलाई-ल हस का रही चिनी ते हो काहु सहज रूपसे छाई खेचरपाईल रलक ओर से ठुसुक-ठुसुक करती जाग जाईठ । तोहार छाई रईता हल्वा खाईक दे देव मिठ लग्ठिस त चुभा जाई व सुत जाई हल्वा खवै । हल्वा खाके एक घाचिक परले छाइ सुतम डाई कहिके पथरिम सुत जा-इठ व निदा जाइठ । बिकालु मौकाले साँस फेरती घुट घुट दारू पियत सिकार चवाइत । सिता धिरे धिरे गिजिक गीजीक हॉलत किल ।

बिकाशु आज पिना बहाना किल वनाइत । पिना कम बात ज्यादा करठ । बडा बडा मतवार रलक छन परती रहठ । सिता हे के भागके मत्वार लाग जैठिस । शिता भागक मतवार लगलक पते नै पाइठ । हुनु

जाते मतवारक झोकमे झुल झुल बत्वइठा । हुकन के बात सुनुइया कोइ नै रहे । रहे ते खाली घुमिल दिया व सुनसान मभावत घर । बिकाशु आव ठे सिता के कबु हाथ पकरके कबु भत्ला पकरके टे कबु गाल सुहरा-के बत्वाइठ । सिता भाँगक मतवारम बेसुध गिजिक मिजिक हस्ती खाली, नकराउ होइ किल कह्य । कबु हाथ उस्ता देहे कबु गोरा उस्ता देहे । सिताके यी नश्य व्यवहार से बिकाशुक साहस झन बढ़ती जाइठ । सिताके इज्जत सग खेलवाड करन, प्रेणा पैटी जाईठ । सिता हे सहसास (Sax) के लाग उतेजित पसा मेरके गफ करती जाइल । कबु राम लखन के सम्झना कराए, कबु फिलिमके हिरो-हिरानी के गफ करे ते कबु ठरुमा मेहरुवा अलकम सुत्लक बाट बहवाए ।

आखिर सिता के जवान रहे । जोशिला रहे । नशाये बेहोस रहे जवानीके जासमे, भाँगके नशाये, बिकाशुके बातके कडा शब्दमे विरोध करे नै सेकल । आ खर यी लचारी विरोध 'नकराउ, नकराउ' क्हुटी सोता जैसिन इज्जतके पवित्र नारी के बेहोसी के मौका उठैटी बरबहा सिता हे दाब लेहल । 'नकराउ मोर वान ऐसिन नै ही । य ह का ऐसन कसा हस देलठो ? यहि ऐसिन काम मन नै परल । मोर बाबुक बाबा पता तैही ते मरही । मने पता पंही ते इज्जत जाइ - ... आदि आदि सिता बरबरेनी गेल । बिकाशु सिताके कोमल, सुन्दर, महनना मुलायम शरिर के अंक-प्रत्यंग सुहरती गेल । आखिर एकठा समय आइल दुनु जने सबसे बडा सुख व आनन्द के संसारमे झुमही गेला । लाज, सरम, इज्जत बिसर गेलिन । जाल - झेल - हल के तमाम उपायसे सिताके पवित्र इज्जतये कबु नै हुहना दाग बिकाशु शर्मा आज कुर्म से लगा छोरल ।

एकचो नैतिक रूपमे पतय करेनक बाद बिकाशु फे फे सिताके इज्जत सग खेलवाड करे लागल विचारी सिधा सादा सिता, आपन इज्जतके खातिर राम लखनके खातिर यी बा हे हल्ला नै करके गोप्य रखा उचित समकल अशिक्षित व गवार सिताके चेतनाके आगे चुप-चाप अन्दाय महना बाहेक दोसर उपाय नै रहिस । बिकाशु सिताके चुप्पी हे सीकार समजके मजबु-

रीके फाईदा उठाईल करल। विकाशुक बाट नमानु त नाजायज सम्बन्धके बारेम हल्ला करना डर। अपनही हल्ला करू त समाज स्वय हे दासदी कना डर। तबमारे सिता यी अन्याय हे कई महिनासे मनमें दबले सहती आईत रह।

दिन बितल। हप्ता बितल। पाख बितल। महिना बितल आवत जब चाहे तब विकाशु आपन मनके प्यास सिताके शरिर से बुझा आए। सिता के फे शायद आव त यी अन्याय सहना बनी परगैल रहीस। मौन विरोध फे नै करे। मजरबु सिता विरोध करके उपाय त फे नै रहिस।

एक समय आईल देशमे क्रान्तिके आधी बह लागल देशके सक्कु शोषीत पीदीत जनता अन्याय व अत्याचार करुईया शोषक सामन्त दलाल पुञ्जिपती के विरुद्ध म हसिया, मुडार, भाला, बर्छी लेके क्रान्ति में लागे लगलां गाडके शोषक, सामन्त घुस्खोर हुकन जन्ता कार्यवाही करे लगला। बडा बाड शहर में गोला बारूत-बम फुटे लागल राफे देश व जन्तनके मुक्तिके लाग हुईना क्रान्तिमें सक्रिय भाग लेहल। सरकार पागल होके जन्तन उपर आतक, हत्या, बलात्कार, गिरफ्तारी, घर खानतलासी करे लागल। तब देश भरके क्रान्तिकारी विद्यार्थी हुके सरकारी स्वेत आंतकके विरुद्ध क्याम्पस हरताल करल। देशम क्रान्तिके शुरुवात। क्याम्पसमे हरताल। बस्त बैठल से वरु गाउँ ओर क्रान्तिके लाग जनतन संगठित परना व घरे फे जना हिसाब से राम लखन रात्री बससे काठमाण्डौसे आईत हरताल के कारण बस सनयम नै पुगठ। राम लखन बससे उतरथ करिब १ घण्टा पैदल नेगे परना राँठस जाईत जाईत रात हो जाईत। ओजरीया रात दशीया देवारी के समय। गाउँ गाँउनाच गाउँ गाउँ चैनार। फिर भी फेकरो वास्ता नै करती राम लखन चुपचाप घरप रिदार, दाई बाबा छाईव जन्नी समझती आईत।

राम लखन जब ११ बजे रात घर पुगठ तब पता नै दिभागमें का सोचठ कहु से आईठत दाई कहिके जगैना मनै आज सरासर चुप्पे से आपन को-नितक केवारी ओर से पेन्नठ। केवारिम ठोरचे ढक्का देहती किल केवार खुल जाईठ। दिभागमे कुछ तरग उत्पन्न हुईठिस। केवार काकर खुल्ला

बा कहीके। टकसे बिजली बारठ त देखठ आपन प्राण से त्यारी जन्नी सिता व विकाशु एक्के में सुतल। दुर शरिर एक जिउ। दुई साल एक धडकन। दुई प्राणी एक मन।

राम लखन हे धक्क देहती विकाशु सरपटसे मोका डगर भागठ। रामलखन हेरतीक हेरटी रहठ। कातो त विना रगतके। त्रेता युगके पतिव्रताके लाग बिस्व प्रख्यात राम के सिता व आजके राम लखनके सिता कत्ता अन्तरव रावग जैसिन महाराजशके आगे आपन इज्जतके रक्षा कर सेकना सिता व T B रोग से प्रसित डोंगिल विकाशु के आगे आत्मसमर्पण करके आयन पत्ति इज्जत मे दाग लगैना आजके सितामें कत्ता फरक वा।

सिता ऊ सिता कत्ता सम्मान कर। कत्ता नैया कर। मने आज सिता आपन इज्जतमे दाग लगा दारल राम लखनके आगे सिता कत्ता गिर गैल। घृनाके पात बनगैल।

सिता रुईलागल आख रसा गैलिस। बोल्ना हिम्मत नै रहिस। माफी मग हिम्मत नै रहिस। राम लखन आवगके बदला हिम्मत व विवेकसे काम लेना सोचत। उही विश्वास नै हुईठिस। कहु वकर आँखी धोका त नै खाईल। फेर यी आपन आँखी से देखल घटना सपना रना बात नै रहे। कल्पना हुईना बात नै रहे। तब मारे पक्का फे सिता, यी गलत काम कौनो दवाव व मजबुरी मे करल हुई।

सिता हे सक्कु वात विस्तार पुबक पुछत। सिता रोईती तरे मुरी करैले शान्त पूर्वक सक्कु वात सुनाईत जब राम लखन यी बाबा सुनतथ पशताईत। ऊ विकाशु जब गुण्डा गीं करे ते राम लखन माफी मागे। ऊ विकाशु जब गाउँक चेली बेटीनके इज्जत मे दाग लगात। बलात्कार तब राम लखन विकाशुक अपराधम सोन व चारीके लेपन लगाए। माफी मागे। उहे विकाशु आज आपन इज्जत मे करिया दौम साँप बनके उस दारल। सिता जैसिन सुशिल, सरल जन्तिके इज्जत म दाग लगा देहल।

आज राम लखन गम्भिर बा। तमाम चेली-बेटीनके इज्जतमे दाग लगु इया विकाशु शर्मा जैसिन तमाम शोषक सामन्तक विरुद्धम न्यायके आवा

ज उठाइक लग सककु शोषीत पीडीत जनतनह मुक्ती देहायक लाग सीता
के कंधाम क्रंधा मुक्ती मिलाके आगे बढटी वा । जनतन एकजुट बनैती वा ।

✻ ✻ ✻ समाप्त ✻ ✻ ✻

थारु पाछ हो गेली

ले० गुरु प्रसाद चौधरी
दाङ्ग, बृहौरा

सककु जान मै गैल आग थारु हस्र हो गेली हेरो पाछ ।
जुग वितल जमाना वितल पुस्ता वित लागल,
थारु बोक्थी सप्का भरुवा बनादेथ पागल
सककु जान ।

नात हमार दिदी बाबु स्कूलम मास्टर

ना त हमार दादु भैया अस्पतालम डाक्टर
सककु जान मै गैल ।

नात हमार जग्गा ध्यार नात हमार टेकर
नात थारु हवल्दार पुलिस, ना त ईनस्पेक्टर
सककु जान ।

दाड देउखरी बर्दियासे थारु ध्यार वाँकेम
कौनो फेन अड्डमव थारु नै हो हाकिम
सककु जान मै गैल ।

ना त थारुक काटमाण्डूम घरबास घरेरी
ना त थारु न्यवधिस ना कौनो मन्त्री
सककु जान ।

आब त जुग एरिन नै हो लटुवा वक्क रना
कौनो देशम का का हुइया बात बूज पर्ना
सककु जान मै गैल ।

गाउं गाउंम जाक हस्र शिक्षक दिया बारी
थारुन उपर लैजेना म समस्या बा भारी
सककु जान मै गैल आग थारु हस्र हो गेली हेरो पाछ
(नोट :- पुरान अवस्था देखाई खोजलक व पहिल रचना कर्लक हो)

“अस्तित्व”

एकठो लालीहे फूला लगैना व फूलैना बहुट रहर रहिस । हुइना फे
ऊ आपन फूलरीयाम मेर मेरके फूला बहुत ढङ्गसे लगाके सिगार पत्तार
करले रहे नेगुइचा, घुमुइया मनै बहाः कत्रा चौकश व शुहावन फूलरीया
कैक प्रसंशा करै । यी प्रसंशा सुनके ऊ माली फे दङ्ग परे लेकिन फे कहाँ
कहाँ कौन र फूला आपन फूलरीयाम नै रहल अस, नै सुहाइल अस
लागिस ।

एक दिन एकठो फूला एकठो गमलाम लगाके फूलरीया एकठो
कोन्वाम धरल ।

कै दिनसे खाली धरल गमला, आपन छातीम एकठो अस्तित्व
मौलाइ देना अवसर पाइलम बहुत खुशी हुइल । फूला ऊ गमलाम धिरे-
धिरे जर फलैती मैल । लौव लौव दरिया पतिया मौलैती गेली । दिन
पुगल समय वितल । ऊ फूलाक हांगा विगाँम तेम्ही लागल फूला गम-
क फूलल । फूला धकमकक फूलल । भौरा जोगनी फूला लोहरे लगन ।
फूलाक पत्य पत्यम लुकिक साँघा खेल लगन । फूलरीया ओर नेग घुम आ-
इल मनै ऊ फूला हे उलिट विलिटके हेरै, व कहै कत्रा सुग्घर व सुन्दर
फूला । अहाः फूला अस फूला । या आपन सौदन्यके प्रसंशा सुनक फूला
फे दङ्ग परे मक्ख परे व फूला मनेमन कहे मै कलक मै हु दोसर कोइ
थोरे हूँ म ।

एक दिन कवि साहित्यकार हुकनके सम्मेलन ऊ फूलरीयाम हुइल ।
ऊ फूला साहित्यकार हुकनके नजरसे नै छिल । साहित्यकार हुकन ऊ
फूलाक प्रसंशा करती सौदन्ये के वर्णन करती कथा विबन्ध लिखौ ।
गीत व कविता बनाके लय छन्द दारके भुनभुनैथै । शिक्षक सहित बन-
स्पती विज्ञान समूहके विद्यार्थी शैक्षिक भ्रमण करे आइने । ऊ फूलरीयाम
रहल धेर फूलामसे उहे फूला फूलाहे आपन प्रेक्टिकल अनुसन्धान के
लाग छनौट कने ऊ फूलाक कोष, फूलाक पत्य, परग कण, डिम्बासय व
व जात आदिके अध्ययन करनै । एक दिन एक युगल प्रेमी-

प्रेमिकाके जोड़ी ऊ फूलरोया घुमे अइने । ऊ फूला हे व ऊ फूलाक लाग
ला चित्त भौरा जोभनीन देखक आपन युगल प्रेमके प्रेम प्रतिविम्बित
हुइत देखै । ऊ फूलाक पंजरे बैठके ऊ फूलाक सौदन्य व सुगन्ध के आड-
म जीवनके मीठ मीठ सपना सृजैने । ऊ फूलाहे साक्षी धैक आपन प्रेम के
बाँचा बन्धन करनै फेर ऊ फूलाहे चुम्बन करके आपन प्रेम प्यास मेटई

यी फूलाक रूप रंग व सौदन्यके प्रशंसा चारु तरफ सुन भितल ।
फूलाक ऊ सौदन्यक चर्चा एक धनि मनैया के सुनल । फूलाहे आपन
भव्य महलम सृगारक लाग लाचिंत हुइल । मौलतोल कर्ना बाते नै क-
रके मागत मौल दिहना कंक मालिसे ऊ फूला मागल लेकिन फूलाक
मालि ऊ फूलाक मूख नै हुइल बताइल । ऊ धनि मनैया खिल्याइल
घरे घुमल ।

यी सब देखक गमला गर्भ करे, छाती फूलाए यी कारणसे कि म-
लजल सिंचित करके ऊ फूलाक ओत्रा महत्व काराई सेकलम आपन रहर
व कर्तव्य सग्मे पूरा हुइल मसूस करे व फेर मनेमन मुस्कराय दङ्ग परे ।
ऊ गमला ऊ फूलाहे दिलसे स्यावासी दिह । प्यारसे गलचुम्बा लिह ।
फेर मुस्कराय फेर कहे अइबे त अबै । अभिन त काल ... । परी ...
लरी ... । फे ... । अभिन ... ।

लेकिन ऊ फूला । ऊ दुनियाक ऊ सब क्रिया कलाप देखक अपनहे
सर्व रूपी, सर्वसौदन्य व सर्वगुणी सजल । ओकर रूप रङ्ग वजावन सौदन्य
प्र त मत चहरके अइलोस । ऊ घमण्ड केरे लागल आपन रूप रङ्ग व ज-
वानी म । ऊ आपन रान परोस रहल औरे फूला हुकन खिसी करे व
कहे फूला हाके फूला अस न तो का फूला । केकरो नजर नै लगना ।
वहा ! वाही !! न हुइना फूलाहे त को जन कैह्या माली उखारके घु-
रम फका दि । ए, छच्छ ! ए, बुच्चें ! ए, थैच्चे ! ए, नेच्चे !
घुराम दांट गिजराके हहनैता कैह्या दिन आई कुछ पता नै हो कैख
खोब हाँसे ।

ऊ फूलाक ऊ बात सुनके औरे फूला हुकन कम रिस त नै
लागिन । जर्मक हरवा पाइल विचारैका करै । घुथीसे चुत्ती तक पुगल

रिसके बुद घुटके २ पचाए पारिन । ऊ फूला हे ऊ फूलान जवाफ दिह
सेवना हंसियत जो कहाँ रहिन । ना, त प्र तउत्तरके लाग कौनो शब्द ।

यी मेरके बात व्यवहार दारुध्या तेरुधबाके हुइत देखक व ब्वाडग्या
मारके खिसी करत सुनके आपन फूलल फूलक घमण्डके जर चढल
बुइके ऊ गमलाहे फे तनिक फे नै मजा लखीस । एक मौका पारके स-
म्झैना सोचल । एक दिन एक मौकाम सहज असहज मन्ती गमला फूला
हे सम्झैना सूर करल व कहल । हेर फूला भाई, आपनम हुइल रूप
रङ्ग गुण व सौदन्यके गर्भ करक चाही । घमण्ड नाहो ! लेकिन तै त
आपन सौदन्य व दुनियाँक दिहल स्वार्थके महत्वहे आपन महत्वाइ सम्झे
लग्ले । यी ठिक बात मैहो । ठिक बात थि हो आपनम रहल सौदन्यसे
सब जहन सृगारक चाही व आपनम रहल गुण व खुशी बाँतेक चाही
लेकिन नै आपन सौदन्यम घमण्ड करते । आपन खुशी व गुणके महत्वा-
इ गाईते । जेकर कारण आपन सहोदर नात जात छर छिमेकी नके खि-
सी करकके ओईनके जिन्गी व जीवन से मजाक करके चित दुःखाईते ।
चित दुःखैना पिट बुद्धि कुबुद्धिके उपज हो । व महा पाप फे । गमलाक
यो बात तपाक परती गमलाहे थकैती फूला गमाक से बोलल । म-
हिन उपदेश देहुईया तै के हुईस ? प्रतिउत्तरम गमला कहल “ फूला
भैया मै गमला हूँ तै व तै जैसिन फूला के लाग हात गोरा पर्साना कोरा
हूँ । तै जैसिन फूलाके लाग कुदना फन्कना चाकिल छाती हूँ । हो तै
मोर यिहे कोराम हात गोरा पसरले । यिहे छातीम कुदक फन्कके बहर-
ले आज यिहे गमलाहे नै चिन देहले भैया । फेर फूला कचोरती गमलाहे
कहल “मोर पाउक लेडक यी धाक” बच्छा एनेकी ऐकर मतलब तै स-
म्झते कि मै मोरम रहल सौदन्य व गुण जौन बा सब तोरे हो । यानेकी
मोरम सजलरूप रङ्ग हेरे नै सेकथुस, गमला फेर हडबडैत कहल “नाई
! नाई !! मोर नाई हो !!! हेरती वातु । हेरे फे सेकम । हेरम फे
लेकिन मोर कहाइक मतलब मै तुहिन सहारा देनु । मला जल संचित करके-
आवश्यक तत्व तुहिन सैदान् करके आपने छातीम जर गारके अरेयाइ
देनु । हुकैनु वढैनु सयान करैनु वदनु सयान करैनु । लेकिन यी मोर

रहकला नाही कर्तव्य फे रहे । जेही पूरा कर सेकलाम मै गर्भ कर्थु ।

अहाँ ! कत्रा सानदार बात कैक फूला । आँ-हाँ हाँ कैक खूब हाँसल । तै गमला... । तै मोर... । तै कैक फेर लम्मा सांस ले लेक दाँसल । ओ फेर जोएसे बम्कती कहल "तै आपन यी औकात सम्झते लेकिन तै तोर औकात कहलक मोर पाउ लेडा हो । तै मो पाठक लेडा हुइस । यहीसे बरा तोर ना कौनो कर्तव्य हो । ना त औकात । बस ! तै आपनहे का सम्झते । मै तुहिन जब चाह आपन पाउयमसे झरा-इ सेकतु, धोके पोछके पयाके सेकतु । त सम्झते का ; तोर कारणसे आज दुनियाक आवे ऐसिन हुइनु । ऐसिन बातु । तै यी कभु नि सांच यी सोचना तोर भारा मुखता हो ।

फूलाक यी कटु वचनके मारसे घायल गमला नम्र स्वर कहल "मोर कारणसे तो नाही लेकिन मै तुहिन साहरा देनु ।" फेर उहे बात क मै तोर जे सन काम नै लग्दा खोनाहा खप्तीमकेल नाही यी रूप ... रङ्ग... । लेक मै जहाँ फे फूले फले व भगभगाई एकम । तै महिन का सम्झते ? का सोचते ? तै गमला ऐसिन तुच्छ हुइस कि तुहिन मोर रूप रङ्ग सौदन्य व गुधम दाहा करते । तै कपोषित मनके बदामयत हुइल फगहा हुइस । लुचो हुइस् । आपन पश्चय अपनही दिह नै सेकना पखण्डो हुइस । पखण्डी !!

फूला बहुत कुछ बात पर आवे बढके कना नै कना बात कहल व बहुत निम्न स्तर उत्तरके अवच शब्दसे घोचपेच करल । फूलाक यी बात सुनक गमलाहे महा दुःख लगलीस । ऊ का सोचल । का सम्झल । ऊ आपन कर्तव्य व रहरसे सिंचित अस्तित्व से अपनही उपर यी व्यवहार के फे मनकरल व मनेमन भुनभुनाइल मान सम्मान व आदर दूरकन से आस करे परथ । प्यार ब इज्जत त आपन हुकन से भर परे परथ । का फूला मोर नै हो । हो विलकूल विलकूल ही । लेकिन खै मै फूलसे कैहिया पैनु प्यार ? व खै कब पैनु इज्जत । ठिके बा । इज्जत व प्यार ना सही लेकिन दिल आसु जरूर दिहक चाही लेकिन का फूला महिन थीस्व दिहल ? नै दिहल । का फूला यी सब

महिन दिह सेकीर का फूला आपन हे व सुख दु ख भित्तर मोर मोर कर्पव्य सम्झे सेकी ? का सम्झना व सच्चा कोशिश करी ? नाई ! कभु नाई !! बेन यकर अंकार व तुच्छता बढके जाई । उहेमारे यकर अंकारसे कलंकित तुच्छतासे दुनियाँ हे बचाई चाही । एक जीवनके बलिदान ना सही । एक बलिदानसे यी फूलरीयाम सबके भलो हुइल कलसे मै ... ।

ओत्थही गमला टुन्ना २ म परिणत हुइल । आव गमला गमला नाही सिक्ता सिक्ता हुइन । ओकर वषीसे कोराम रहल मलिल माटी क्षेत्राईल । ओकर छातीम रहल रहर छुटाछुल हुइलीस, अँरलीस । कर्तव्य सदासदाके लाग अन्तर ध्यान हुइलीस ।

ऊ फूला लगलगौती धरधरैती बिना सजधजके ओत्थेही गमश्यामसे धलल । दरिया, पतिया, तेम्ही, फूला कच्याक कुचुक हुईलीस । घामके रापसे ओकर छाती अङ्ग देह सेकलीस । ऊ वेहालम रुइल, चिल्लाइल, छटपटाल साझके पच्छहुवा आंधी बाँखा आइल । फूलाहे घिसरती पटकती ऊ फूलरीयाक ऊ कोन्वासे ऊ कोन्वा पुगैलीस ।

दोसर दिन विहान तक ऊ फूलक फूला, दरिया पतिया सुखा सेकल रहिस । फूलरीयक माली फूलरीया घुमे आइल । हराभरा मगमगैना फूलरीयाम सुखल झारपात फोहर लगलीस । ऊ कुचीकारहे ऊ फोरर करैना सुखल झारपात फूलक दाँठ, पतिया हे बहार सैतके फकाइ कहल । कुचिकार ऊ फूलाक दाँठ पतिया बहार सैतके कुचमुचैती घुरांम फका दिहल । काल तक ऊ फूला अकेली हँस्ले रहे । आज फूलरीयाक सब फूला हाँसतै । आज अकेली रुइया । काल व आजम फरक चि अत्रै रहै । काल तक फूलरीया म मगमगैती रहल फूला आज फोहर घुरांम हहनती बा । चिल्लैती बा । छटपटैती बा । गन्धैती बा । गन्धैती बा । !!

समाप्त

ले. सञ्चु भैया

वगनाहा - बर्दिया

चूरे कानूनी कार्याशाला गुलरीया
बर्दिया

कसानके विलौना

जिवनम पसना बहाके खेतवा बनैली २
खन जोत कं के अन्न उब्जैली हम्म बचैथी संसार,
तफे नैहो जिवनम बहार

पसनक बुद बुदले माटी मिलेथो २
अन्नक दाना दानाले हातीं सजथी
जुग-जुगसे कर्लीं यी काम,
त फेन नैहो कहूँ किसानके नाम

ससार वचैना हम्म हुईतो किसान २
रुयाज परथ आपन नाम निसान नै मितथ अछा हक,
नै कर्वीं सघर्ष जाहाँ तक ।

धरम चौधरी

त्रि. न पा. वा. नं. २ गुलरिया (दाङ्ग)

परिवार नियोजन वर मायर बलुख सेवा कार्यक्रम

विश्व स्वास्थ्य संघ व स्वास्थ्य अन्तरगत प्राथमिक स्वा-
स्थ्य सेवा एकक अंगक रूपम संचालन हुईतो आइल वा । यीह
कार्यक्रमम अन्तरगत परिवार नियोजन वर मावर, बालुख सेवा
कार्यक्रम जनसंख्या नियन्त्रण मायर मृत्यूदर बालुख मृत्यूदर घटे-
ना अशक काममें बडानक भूमिका खेलती आईल वा ।

यीह कार्यक्रम आच्च वढैना व पुरा करक लाग हर ठाउं-
ठाउंमे कोशिस होरहल, श्री ५ चक सरकार स्वास्थ्य मन्त्रालय
से योह कार्यक्रम लाक परिवार व समुदायक (गाउं गृनचा) से
स्वास्थ्य सेवा प्रणालीक कक्कु तहम विस्तार व सुधार कर्तिलैगि
ल वा । श्री ५ चक सरकारब प्रयासह सफल बनैना मन से हम्म
सकु तर लिखल वाटम ध्यान दिहपर्ना वा ।

- १, अन्य जलानी मनैन से (गमिरज्यूक) जलानी मनैन ध्यार
पुष्टकारी खाना खवैना । (खवाएरथा) । गमिरज्यूक (गर्भ-
वती) जलानीनेक कामम मद्दत कैदेना,
- २, गमिरज्यूक (गर्भवती) जलानी मनैन अस्पताल लंजाब वाकर
जीउ (आंग) जचेना, कुछु विगार देखपर्ल से अस्पताल, स्वा-
स्थ्य केन्द्रम लैजैना सल्लाह देना ।
- ३, गमिरज्यूक हुईल व्यालाम कुछु विगार हुईस्याकथ छुटिहा
हूँईवर, ध्यार रगत जैना, कपार वथैना तरक ध्यात वथैना,
असिन २ होस करपरथ ।
- ४, गमिरज्यूक जलानी मनैन विगार हुबल कलसे अस्पताल
पठैना ।
- ५, लर्का पैना (गमिरज्यूक) जलानी मनैन कबु-कबु ध्यार (बहु-
त) रगत जैना कर्था । वाकरलाग वचैनाहो कलसे, रगत देना
मनैफे खोजना । वाकर लाग रगत देना मनैया फे संग अस्प-
ताल लैजैना ।

- ६, दुःख सक्कुहन परसेवया, कंक आफन् गळया अनुसार दान-
दान हुईलसेफे वचत (कोष) कर्ना । पाछ आपत विपत
परबेर गाडीबाडी मगाईक लाक सजिलो हुईथा ।
- ७, छाईछावा सक्कु एक हुईत, उहवसे छाईछावा कंकनिछुट्टिना।
- ८, छाईक लाग फे छावाक अशक खाना खाई देना ।
- ९, छाईक फे पढना, लिखना कर पढेना ।
- १०, छोटिय उभेरम छाईक भ्वाज निकडेना, वाठिन (भरावस)
हुईल कलसे अथवा २० वर्षक हुईल कलसे केलभ्वाज
कडेना ।
- ११, वर्षौब्या लर्का पैना कवेति जोड विगर जाईय । यीह वसे
४,५ वर्षक फरकम लर्कापर्का जर्माए पर्था । कंक बुझैना ।
- १२, ध्यार लर्का जर्मावोत दुःख हुईथा । यीह वसे २ दुईठो सस्ता-
न भगवानक वर्दान समझक, दुईठो लर्का हुईल कलसे परिवार
नियोजनक साधन प्रयोग कर्ना वा थ-वा-सेह-वा सल्लाह
कंक सददिनक लाग स्थायी नियोजन कर्ना ।
- १३, लर्का पैना ब्याला सोहिन्या नर्स, डाक्टर हेकन बलाई पर्था
कंक सक्कुहन जानकारो करैना ।
- १४, लर्का पैना मनै व सोहिन्या तर लिखलवाट बुझ पर्था
क] हाथ ग्वारा नूह कटना सफा सुगधर धर्ना ।
ख] हाथ थुन्यार से धुईना । ग] लर्का पैना कोठरी सफा
करैना ।
घ] लर्का जर्मना दगर सफा करैना । ङ] सफा (मजा)
दवाराले ढोहो वाधेना ।
च] जसिन-तासिन हुँय, सुंदार, असक हुँयारले ढोहो नि-
कटना । सफा वै निलागल हुँयार ले केत ढोहोकरट-
ना । सहयोगी एम. वि. चौधरी

जिल्ला स्वास्थ कार्यालय

स्वास्थ्य शिक्षा सूचना तथा सञ्चार कार्यक्रम

सुर्खेत

थारु भाषा साहित्यके अग्रिम भूमिका खेनुइया थारु भाषक दर्का
पत्रिका गोचालीके १२ औं अंक प्रकाशित हुइलम खुशो व्यक्त
करती, व थारु समाज व्यक्त रहल मानब अधिकार व
समाजिक न्यायक लाग चेतनाके दिया बरती आध
बहती जाय कना शुभइच्छाके साथ देवारी व
थारुनके महान तिउहार माघके
उपलक्ष्यम हार्दिक

शुभ कामना व्यक्त करती

नरेश राना

अध्यक्ष

व

मा० अ० स० स० मंच (एफा) बर्दिया परिवार

२०५६

के शुभ दिपावलीम

व माघ तिउहार के सुखद उपलक्ष्यम
यहां हुंकनके सुख सम्बृद्धि, व सु-स्वास्थ्य तथा प्रगतिके लाग
हार्दिक मंगलमय शुभ-कामना



मोहन राज चौधरी

तथा

अमृता छापाखाना परिवार

गुलरिया, बर्दिया



मद्रक - अमृता छापाखाना

गुलरिया, बर्दिया